CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिंदी और तमिल की समानस्रोतीय

भिन्नार्थी शब्दावली

(एक शोध प्रबंध)

3909
24.4.70

State Museum Library • Lucknow •

लेखक
वी. रा. जगन्नाथन

891.43
ज हिं

केन्द्रीय हिंदी संस्थान
आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY

Acc. No. 3909

Book No. 891·43
ज ते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिंदी और तमिल की समानस्रोतीय

भिन्नार्थी शब्दावली

(एक शोध प्रबंध)

लेखक

वी. रा. जगन्नाथन

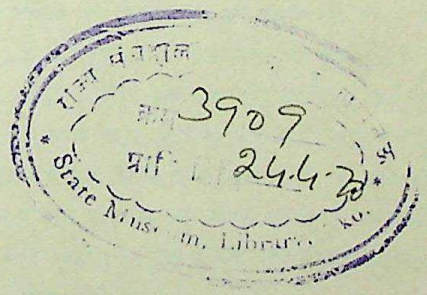

केन्द्रीय हिंदी संस्थान

आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :
केन्द्रीय हिंदी संस्थान
नया आगरा,
आगरा–5

891.43
ज हि

3909

तिथि ;
अगस्त, 1969

मुद्रक :
मेहरा आफसेट प्रेस, आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आमुख

केन्द्रीय हिंदी संस्थान में पिछले पांच वर्षों से भाषा शिक्षण की वैज्ञानिक विधियों के व्यापक अनुसंधान के अंतर्गत जो आधारभूत और तुलनात्मक शोध का कार्य आरम्भ किया है, उससे हिंदी और भारतीय भाषाओं के उच्च अध्ययन और अनुसंधान में अभिरुचि रखने वाले विद्वान अब अपरिचित नहीं हैं। अपने अनुसंधान विभाग में अनुसंधान सहायकों द्वारा संस्थान ने जो शोध-कार्य किया है, वह अंशतः प्रकाशित भी हुआ है। श्री वी. रा. जगन्नाथन द्वारा 'हिंदी की आधारभूत शब्दावली' पर लिये गये कार्य का भाषा-जगत में स्वागत हुआ है।

संस्थान के प्राध्यापक विद्यार्थियों और अनुसंधान सहायकों के शोध-कार्यों का पथ-प्रदर्शन करने के साथ-साथ व्यक्तिगत रूप में भी महत्त्वपूर्ण विषयों पर अनुसंधान कार्य करते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि हम इस प्रकार किये जा रहे कार्यों का पहला प्रकाशन 'हिंदी और तमिल की समानस्रोतीय-भिन्नार्थी शब्दावली के रूप में कर रहे हैं। भारतीय भाषाओं में तमिल ही एक ऐसी भाषा है, जिसकी प्राचीनता प्रायः संस्कृत की प्राचीनता से भी अधिक बतायी जाती है। यह भी सर्वमान्य तथ्य के रूप में स्वीकार किया जाता है कि भारतीय भाषाओं में तमिल संस्कृत से बहुत कम प्रभावित हुई है और उसने अपनी पृथक प्रकृति और प्रतिभा को आश्चर्यजनक रूप में स्वतंत्र और विशुद्ध (!) बनाये रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भाषा की 'पृथकता', 'स्वतंत्रता' और 'विशुद्धता' को अधिक से अधिक सापेक्ष रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के लेखक श्री जगन्नाथन की मातृभाषा तमिल है, वे कुंभकोणम के निवासी हैं, जिसे तमिल प्रदेश के हृद्देश का अंग कहा जा सकता है। उन्होंने तमिल के अतिरिक्त दक्षिण की दो अन्य भाषाओं-कन्नड़ और मलयालम का भी गहरा अध्ययन किया है। हिंदी के विशेष अध्ययन के साथ भाषा-विज्ञान के गंभीर अध्ययन के फलस्वरूप उनकी दृष्टि तमिल की शब्दावली की प्रकृति को जानने की ओर आकृष्ट हुई और उन्होंने हिंदी और तमिल की शब्दावली के तुलनात्मक अध्ययन का कार्य अपने हाथ में लिया। हम और वे भलीभाँति जानते थे कि यह कार्य कठिन है और इसे कुछ लोग दुस्साहस कह सकते हैं। परंतु श्री जगन्नाथन ने बड़े परिश्रम के साथ अपने विविध रूपों और अर्थों में तमिल के लगभग 850 शब्दों को ढूँढ़ निकाला, जिनके बारे में वे प्रामाणिक रूप में यह कह सके कि वे शब्द जिन स्रोतों से आये हैं, वे ही हिंदी के भी शब्द-स्रोत हैं। श्री जगन्नाथन का अध्ययन गंभीर परिश्रम का प्रमाण तो है ही, साथ-साथ वह एक ऐसे तथ्य को प्रकाशित करता है, जिसके विषय में भाषाविज्ञान के क्षेत्र में अब तक अनुमान और संदेह ही रहे हैं और जिनका प्रमाणों के अभाव में विश्वास करना संभव नहीं था।

श्री जगन्नाथन ने अपने शोध-प्रबंध में अध्ययन की जिस प्रविधि को अपनाया है, वह इस प्रकार के अध्ययनों को दिशा-दान कर सकती है। केंद्रीय हिंदी संस्थान में अन्य भारतीय भाषाओं के भी इसी प्रकार के अध्ययन किये जा रहे हैं। ये अध्ययन स्वयं अपने में शैक्षणिक महत्त्व के तो हैं ही, भाषा के शिक्षण और अध्ययन की दृष्टि से भी ये अत्यंत उपादेय होंगे। हिंदी और तमिल के समान स्रोतीय-भिन्नार्थी शब्दावली को विद्वानों और अध्येताओं के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हम विश्वास करते हैं कि वे इसकी सराहना करेंगे और हमें उसके संबंध में सत्यपरामर्श देकर उपकृत करेंगे।

व्रजेश्वर वर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

State Museum Library Lucknow

विषय सूची

0 .	0		भूमिका	1
	1		अध्ययन	1
1 .	0		शब्द और अर्थ का संबंध	1
	1		शब्द	1
	2		प्रतीक	2
	3 .	0	अर्थ के संप्रदाय	2
		1	परम्परावादी सिद्धान्त	2
		2	सस्युर–स्वीट	2
		3	ऑग्डन-रिचर्ड्स	3
		4	ब्लूमफ़ील्ड	3
		5	फ़र्थ-हैलिडे	3
		6	चॉम्स्की-कैट्स-फ़ोड़र	4
		7	सपीर-वोर्फ़-पाइक	4
1 .	4 .	0	अर्थ और अर्थ-सूचक	4
1 .	5 .	0	अर्थ की अवस्थिति	5
		1	शब्द और अर्थ	6
		2	वाक्य और अर्थ-प्रत्यय-विधान	6
		3	भाषा के अंग और अर्थ	6
		4	अर्थ और संरचनात्मक शब्द	7
		5	अर्थ के वर्ग	7
1 .	6 .	0	अर्थ संरचना-समकालिक, वर्णनात्मक	7
		1	अर्थ के निम्न स्तरों का सिद्धान्त	8
	.	1	अर्थ संरचना-ऐतिहासिक	8
1 .	7		शब्द का प्रकार्य	8
1 .	8		अर्थ के पाँच मूलाधार	10
		1	पर्याय	10
		2	विलोम	10
		3	अर्थ वर्ग	11

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1 . 8 . 4	**सह संबंध**	12
5	शब्दान्वयन	14
5 . 1	मुहावरे	14
6	अर्थ-संरचना-परिभाषा	14
2 . 0	**शब्दावली की तुलना**	15
1	संरचना का स्वरूप	15
1 . 1	अर्थ-क्षेत्र और तुलना	15
2	पारिवारिक शब्द (cognates)	16
2 . 0	स्रोतीय शब्द––तुलना के अन्य आधार	16
3 . 0	शाब्दिम-शब्द रूप	16
1	बद्ध पद	17
4 . 0	स्रोत के आधार	17
1	ध्वनि	17
2	पदग्रामीय व्यवस्था	17
3	**अर्थ**	18
4	वितरण	18
5	बाह्य साक्ष्य	19
1	प्रत्यक्ष ज्ञान	19
2	इतिहास	19
3	भ्रामक व्युत्पत्ति	19
4	अर्थावशेष	19
5	अन्य भाषाएँ	19
6	अनुमान	19
1	छूटे हुए शब्द (residue words)	20
3 . 0	**अर्थ की तुलना**	20
1	कठिनाइयाँ	20
2	अर्थ भेद	20
3	प्रतीक-अर्थ संबंध	20
4	अर्थ की आंतरिक प्रकृति	21
5	अर्थ निर्धारण	21
6 . 1	नये शब्द रूप	22
2	पारिभाषिक शब्द	22
7	शब्द ध्रुवीकरण	22
8	शब्द रूप और आर्थिम	23
9	प्रतीकांतरण (code transfer)	23
10	अर्थ क्षेत्र और अनुभव साम्य	23
11	शब्द-अर्थ क्रम का सामंजस्य	24

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

	12	अर्थ का चक्रीकरण	24
	13	'हद' का वृक्ष चित्र	24
	14	शब्द-अर्थ क्रम	26
4 .	0	**कार्य की समस्याएँ**	26
	1	कार्य क्षेत्र निर्धारण	26
	2	अर्थांकन	26
	3	स्रोत निर्धारण	27
	4 . 1	अर्थ निर्धारण	27
	2	संदेह	27
	5 . 1	संरचना का स्वरूप	28
	2	शब्द-वर्ग	28
	3	संज्ञा-विशेषण-क्रिया विशेषण का संबंध	28
	6 . 0	कार्य का स्थायित्व	29
5 .	0	**निष्कर्ष**	29
		(I) शब्द-सूची	33
		(II) संकेत सूची	72
		(III) शब्द-निर्देशिका	74
		(IV) उच्चारण सम्बन्धी निर्देशिका	83
		(V) तमिल-हिंदी के समानार्थी शब्द	85

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

0.0 प्रस्तुत शीर्षक विषय केन्द्रीय हिंदी संस्थान में अध्यापकों की वैयक्तिक शोध परियोजना के रूप में चलाया गया। सन् 1965 की फ़रवरी में आंध्र और मैसूर के हिंदी के अध्यापक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में भाग लेने संस्थान आये थे। उस समय, संस्थान के निदेशक के आदेशानुसार, उनकी सलाह से मैंने सोचा कि दक्षिण की भाषाओं और हिंदी के समान स्रोतीय, किंतु भिन्नार्थी शब्दों की सूचियाँ तैयार की जायें। इस कार्य के पीछे तीन प्रमुख उद्देश्य थे। एक, इन सूचियों से परस्पर दोनों भाषाओं के शिक्षण कार्य में अध्यापकों और विद्यार्थियों को सुविधा होगी, ये उनके पास सहायक ग्रंथ (desk book) की तरह रहेंगी। दो, संस्थान में पारंगत परीक्षा के एक प्रश्नपत्र-तुलनात्मक व्याकरण के छात्राध्यापकों को और भाषा में रुचि रखने वाले विद्वानों को शोध की नयी दिशा मिलेगी। तीन, भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत होगा और भाषाएँ एक दूसरे के अधिक निकट आयेंगी। इन तीनों उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर यह कार्य आरम्भ किया गया था। उस समय उन अध्यापकों की सहायता से क्रमशः तेलुगु और कन्नड़ के थोड़े शब्द एकत्रित किये गये। मलयालम भाषा का कार्य संस्थान के छात्राध्यापकों की सहायता से प्रारम्भ हुआ। तमिल भाषा का अध्ययन मैंने स्वयं सूचक के रूप में किया। अब तमिल का कार्य समाप्त हुआ है और इसकी उपलब्धियाँ विद्वानों के सामने प्रस्तुत हैं। अन्य तीनों भाषाओं की शब्द-सूचियाँ भी लगभग तैयार हो चुकी हैं और यथासमय प्रकाशित की जायेंगी।

0.1 इसका अध्ययन तंजौर ज़िला के सवर्ण, प्रमुख रूप से ब्राह्मण लोगों की भाषा पर आधारित है; क्योंकि सूचक मातृभाषा के रूप में इसी से परिचित है। यही भाषा मानक रूप भी है। प्रस्तुत अध्ययन के शब्दों का प्रयोग साहित्यिक भाषा में प्रायः होता है और इनमें कोई शब्द केवल घरेलू व्यवहार का या किसी समुदाय-विशेष से संबंध रखने वाला नहीं है। प्रायः सभी शब्दों की, पुस्तकों आदि से पुष्टि हुई है और मेरे पास उनका विवरण है। ब्राह्मणों के घरेलू व्यवहार के शब्दों को, जिनकी संख्या भी पर्याप्त है, इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

1.0 प्रस्तुत विषय शब्द विज्ञान (lexicology) के क्षेत्र का है और कोश विज्ञान (lexicography) और अर्थ विज्ञान को परिधि से ही छूता है। इस अंतर को समझने के लिए शब्द और अर्थ के संबंध को पहले स्पष्ट कर लेना अच्छा होगा।

1.1—शब्द ब्लूमफ़ील्ड के अनुसार लघुतम स्वतंत्र इकाई है, जो कि वाक्यांश (phrase) नहीं है। उनके व्यवहारवादी सिद्धान्त के अनुसार शब्द प्रेरणा उत्पन्न करते हैं, जिन्हें सुनने वाला उचित प्रक्रिया (कार्य) करता है।[1] वे आगे शब्द के रूप तथा शब्द और वाक्यांश के अन्तर को स्पष्ट करते हैं, जो हमारे कार्य के लिए अनावश्यक है। उनका व्यवहारवादी प्रेरणा-प्रतिक्रिया का सिद्धान्त इतना लोकप्रिय बना कि कई विद्वानों ने भाषा के संबंध में विचार करते हुए इसी का प्रतिपादन किया। फ्रीज़ के अनुसार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शब्द ध्वनियों से बने खंड हैं, जो प्रेरणा के रूप में अपने साथ व्यवहार में निश्चित अनुभवों को ध्यान में लाते हैं। इस कारण शब्द का अर्थ उसके उपयोग के संदर्भों में ही स्पष्ट हो सकता है।[2] ट्रैवर इस सिद्धान्त को मानते हुए शब्द और उसके कई अर्थों के संबंध की सीमाओं पर भी विचार करते हैं। उनके अनुसार शब्द के कई कोश-अर्थ उस शब्द से उद्दीप्त होने वाले विभिन्न संदर्भों में, प्रयोग से स्पष्ट होते हैं। ये अर्थ मातृभाषा भाषी के चिन्तन में घुले-मिले हैं और वह आवश्यकतानुसार इनके उपयोग में काफ़ी स्वतंत्रता से काम लेता है।[3] शब्द भाषा के बाह्य गठन में (ध्वनि रूप में) तथा संरचना में प्रमुख हैं और भाषा के उद्देश्य (अर्थ-संप्रेषण) के मूल साधन हैं। शब्द ही भाषा के अर्थ के वाहक हैं। इस कारण शब्द की अर्थ विज्ञान और पद-वाक्य विज्ञान से स्वतंत्र कोई परिभाषा देना बहुत कठिन कार्य है। लैंडो इन सब को एक ही जगह समाविष्ट करते हैं। उनके अनुसार शब्द में रूप, अर्थ और वितरण तीनों ही बातें सम्मिलित हैं।[4]

1.2—शब्द और अर्थ के संबंध में तर्कशास्त्र और मनोविज्ञान के विद्वानों ने आधुनिक काल में विचार किया है। वे प्रतीक (sign) और उससे व्यक्त किसी वस्तु या विचार के संबंध के परम्परात्मक दृष्टिकोण की जगह प्रतीक विज्ञान (semiotics) की नयी परिभाषा अपनाने के पक्ष में हैं। इन विद्वानों की नयी परिभाषा भी व्यवहार से ही प्रेरित है। लेकिन व्यवहार का सीधा संबंध शब्द से नहीं, बल्कि शब्द से व्यक्त होने वाली वस्तु के विचार से है। ऑग्डन और रिचर्ड्स प्रतीक, वस्तु और प्रेषण-क्रिया का विवेचन प्रस्तुत करते हैं। इससे समझा जा सकता है कि शब्द विज्ञान के संदर्भ में इन तीनों बातों का वर्णन किया जाता है—वह संस्कृति, जिसकी अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है, भाषा की अर्थ-संरचना और इसे व्यक्त करने में शब्दों का कार्य। जब इन तीनों का स्वरूप स्पष्ट हो सके तो शब्द विज्ञान या तुलनात्मक शब्द विज्ञान का स्वरूप निश्चित हो सकेगा।

1.3—अर्थ के संबंध में विविध सिद्धान्त प्रचलित हैं।

1.3.1—शब्द-अर्थ के सीधे संबंध का परम्परावादी दृष्टिकोण बाद के चिंतकों द्वारा नकारा गया। उन्होंने दिखाने का यत्न किया कि अर्थ सीधे शब्द से नहीं निकलता, बल्कि बोलने वाले के मन में प्रत्यय के रूप में या अर्थ-धारण के रूप में निहित होता है। उन्होंने शब्द-अर्थ के प्रत्यक्ष संबंध की असंभाव्यता के पक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत किये हैं।

1.3.2—इन सिद्धान्तों में सस्युर-स्वीट का प्रत्ययात्मक दृष्टिकोण (conceptual approach) प्रमुख है। स्वीट शब्द और अर्थ के स्पष्ट भेद को मानते हैं। भाषा में शब्दार्थ के अतिरिक्त एक आंतरिक अर्थ होता है, जो एक रहस्यात्मक स्थिति है। सस्युर प्रत्यय (concept) का अर्थ प्रकट करते हैं। शब्द प्रत्यय और उच्चरित रूप का समंजस है।[5] उन्होंने ही सबसे पहले प्रतीक (sign) के सिद्धान्त का प्रतिपादित किया और प्रतीक विज्ञान के प्रारंभिक विचार प्रकट किये। लेकिन गहन चिंतन के अभाव के कारण इनका प्रतीक विज्ञान स्पष्ट नहीं हो सका और आगे ऑग्डन और रिचर्ड्स ने ही इसे रूप दिया। प्रतीक, इनके अनुसार प्रत्यय और (उच्चरित) शब्द का समन्वित रूप है। समस्त भाषा ही व्यवस्थित विचार-प्रवाह है, जो ध्वनियों में प्रकट होता है। प्रतीकों के अभाव में विचारों का विभेद असंभव होता है।[6] इनका यह भी विचार है कि प्रतीक भाषा के रूप (form) को बनाते हैं, वस्तु (substance) को नहीं,[7] जो कि ग्लॉसमैटिक्स का भी आधारभूत सिद्धान्त है। प्रतीक कई हैं, यादृच्छिक हैं तथा इनकी व्यवस्था ही भाषाहै। प्रत्यय के आधार पर सस्युर ने मूल्य (value) के सिद्धान्त का भी प्रतिपादन किया है। यह सिद्धान्त तुलनात्मक अध्ययन का बीज-रूप है। अर्थ की तुलना के संदर्भ में मूल्य के सिद्धान्तों का अवलोकन उपादेय होगा। हर भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसमें प्रतीकों का अपना कार्य और क्षेत्र है। इन्हें समझकर ही भाषा की पूरी प्रकृति को समझ सकते हैं। यह कह देना ही काफ़ी नहीं है कि अमेरिका में 15·00 रु० में (2 डालर में) बाल बनते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमें यह भी देखना होगा कि यह राशि अमेरिकी अर्थ व्यवस्था में क्या महत्त्व रखती है। हर प्रतीक का अपना क्षेत्र होता है और एक ही प्रतीक दो भाषाओं में भिन्न प्रयत्नों का प्रतिपादन करते हैं, भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं। इस प्रकार इस सिद्धान्त ने शब्दों और अर्थ पर पहली बार आधुनिक ढंग से विचार किया है।

1.3.3—ऑग्डन और रिचर्ड्स का सिद्धान्त मानसपरक (mentalistic) है। इन्होंने सबसे पहले शब्द में अर्थ के अस्तित्व के जादू को तोड़ा और यह प्रतिपादित किया कि असली अर्थ वक्ता में ही निहित है। इनके अनुसार शब्द (sign) और अर्थ (object) के बीच में अर्थ-बोध (interpretation) का तीसरा कोण भी है। इन तीनों में शब्द का अर्थ-बोध के साथ संबंध है और वस्तु के साथ वक्ता का। शब्द और अर्थ का संबंध अप्रत्यक्ष एवं टूटा हुआ (amputated) है। अर्थ का प्रतिपादन वहाँ होता है, जहाँ कोई प्रतीक मन में किसी प्रसंग का अंग हो। इस प्रकार वस्तु और अभिव्यक्ति दोनों को अभिव्यक्त करने की व्यक्ति की क्रिया (act of reference) हमेशा चलती रहती है। इनका अर्थ का विश्लेषण प्रायः दर्शन और तर्कशास्त्र पर आधारित है और इन्होंने 18 प्रकार के जो अर्थ बताये हैं, उनमें कई सौंदर्यशास्त्र के विभिन्न आयामों को छूते हैं। तब भी भाषाविज्ञान को इनका योगदान इस रूप में महत्त्वपूर्ण होगा कि इन्होंने प्रतीक और अर्थ के संबंधों की विस्तृत व्याख्या की है। प्रतीकात्मकता (symbolism) के सिद्धान्तों की चर्चा करते हुए इन्होंने भाषा के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है और कहा है कि प्रतीक केवल एक अर्थ (referent) के लिये आते हैं, इनका भाषा के गठन में विशेष स्थान है, भाषा प्रतीकों की व्यवस्था है।

1.3.4—ब्लूमफ़ील्ड का व्यवहारवादी (behavioristic) सिद्धान्त शब्दार्थ को प्रेरणा और प्रतिक्रिया की शृंखला में व्यक्त देखता है। इस सिद्धान्त के अनुसार सारी मनुष्य की क्रियाएँ कारण-कार्य के क्रम की एक शृंखला है। भाषा भी एक मनुष्य-व्यवहार है। इस कारण भाषा में अर्थ-संप्रेषण इसी क्रम में चलता है। वक्ता और श्रोता दोनों के बीच में कथ्य का आदान-प्रदान रहता है जो क्रिया को प्रेरित करता है। यद्यपि सस्युर भी इस क्रम को मानते हैं, इन दोनों में एक महत्त्वपूर्ण अंतर है। भाषा की वस्तु संसार से संबंधित प्रत्ययों से आती है। इस वस्तु को ब्लूमफील्ड भाषाविज्ञान के क्षेत्र से बाहर मानते हैं, लेकिन सस्युर नहीं। सस्युर भाषा को भाषण-संकेतों (speech signals) की व्यवस्था ही नहीं मानते,[8] बल्कि वह विशिष्ट प्रतीकों की व्यवस्था है, जो विशिष्ट विचारों से मेल खाती है।[9] ब्लूमफ़ील्ड के अनुसार भाषा-व्यवहार या भाषण-क्रिया के पूर्व-पर कार्य ही अर्थ के पर्याय हैं और भाषाविज्ञान भाषण-क्रिया का अध्ययन कर सकता है. कार्यों का नहीं।[10] भाषायी अर्थ (linguistic meaning) के संदर्भ में वे अर्थ संबंधी प्रसंग आदि बातों की चर्चा करते हैं। वे मानते हैं कि भाषा के अध्ययन में अर्थ का अध्ययन आवश्यक नहीं है।

1.3.5—फ़र्थ भाषा को अर्थपूर्ण मनुष्य-व्यवहार मानते हैं और हम इससे न मन को, न परिस्थितियों (situations) को दूर रख सकते हैं। उनका सिद्धान्त बहु-व्यवस्थात्मक माना जाता है, क्योंकि भाषा ध्वनि, व्याकरण आदि कई संबद्ध व्यवस्थाओं से निर्मित पूर्ण व्यवस्था है। इन व्यवस्थाओं में व्याकरणिक व्यवस्थाओं को बाह्य परिस्थितियों से अर्थ (content) ही जोड़ता है। इस कारण अर्थ सभी व्यवस्थाओं में व्याप्त बाह्य परिस्थितियों में सार्थक अंग है। उनके अनुसार भाषा का रूप और अर्थ अभिन्न हैं, एक हैं। इस कारण उनका सिद्धान्त एकात्मक (monistic) सिद्धान्त माना जाता है। ये सभी सम्बद्ध व्यवस्थाएँ समग्र रूप से अर्थ का ही प्रतिपादन करती हैं, जो बाह्य परिस्थितियों में प्रकट होता है।[11] इस प्रकार, अंततः भाषा का विभिन्न स्तरों पर विश्लेषण अर्थ का ही विश्लेषण है। हैलिडे ने भी इसी सिद्धान्त को कुछ संशोधन के साथ स्वीकार किया है, अन्यथा बहुव्यवस्थात्मक (poly systemic) भाषा के रूप और अर्थ के संबंध का विवेचन दोनों समान रूप में ही करते हैं। हैलिडे कहते हैं कि यह सिद्धान्त भाषा में बाह्य परिस्थितियों को सम्मिलित नहीं करता। इसका भौतिक वस्तु-व्यापारों से कोई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संबंध नहीं है। भाषा के संदर्भ में केवल संदर्भ (context) ही प्रमुख है, जो भाषा को परिस्थितियों से जोड़ता है और संदर्भ मौखिक और व्याकरणिक अभिव्यक्ति द्वारा प्रकट होता है।

1.3.6—चॉम्स्की का रूपांतरण-रचना सिद्धान्त (transformation-generative grammar) भाषा के तीन तत्त्व मानता है—ध्वनि, वाक्य और अर्थ। उनका सिद्धान्त अर्थ पर ही आधारित है, यद्यपि अर्थ का विशेष (अर्थ विज्ञान के संदर्भ में) चर्चा नहीं की गयी है। भाषा की रूप-रचना (formalization) में सार्थक, स्वीकार्य वाक्यों को ही आधार बनाया गया है। भाषा बोलने वाला सार्थक वाक्यों की ही रचना करता है, यद्यपि बिना अर्थ के व्याकरण-सम्मत वाक्यों की रचना भी हो सकती है। वक्ता अर्थ-सम्मत वाक्यों की रचना को मन में बिठा लेता है (internalizes)। अर्थ सम्बन्धी विवादों में अंतिम निर्णायक मातृभाषा-भाषी होगा क्योंकि वह अंतिम रूप से स्वीकार्य वाक्यों की ही रचना करता है। जहाँ किसी वाक्य का ऊपरी अर्थ स्पष्ट नहीं होता, वहाँ उन वाक्यों की रूपांतरित रचना अर्थ स्पष्ट कर सकती है। अर्थ की पूरी व्याख्या, इस प्रकार पूर्ण वाक्य-विश्लेषण में ही अंतर्निहित होता है और उसके अलग से व्याख्या देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।[12] तीनों तत्त्वों में वे पर्याप्तता के सिद्धान्त (levels of adequacy) का भी प्रतिपादन करते हैं। इसके अनुसार अर्थ के विश्लेषण तथा परीक्षण के तरीके होने चाहिए। चॉम्स्की कहते हैं कि निरीक्षण के स्तर पर अर्थ का पता वास्तविक संभाषण में किसी शब्द के किन्हीं स्थानों में नियमित प्रयोग से चलता है और वर्णनात्मक स्तर पर कोशकी प्रविष्टियों, 'अर्थ-क्षेत्र' (दे० 2. 1) से संबंधित पर्याय आदि व्यवस्थाओं से अर्थ का स्वरूप स्पष्ट होता है।

रूपांतरण के सिद्धान्त में अर्थ के महत्त्व के बारे में आधुनिकतम विचार सामने आये हैं। जैसा कि कहा जा चुका है, चॉम्स्की अर्थ को गौण महत्त्व ही देते हैं। अर्थ केवल वाक्य विज्ञान को स्पष्ट करने के लिए है और अर्थ के कारण कई संभव वाक्य नकारे जाते हैं। इस प्रकार अर्थ वाक्यों में प्रकट हो रहे गणितीय या तर्कशास्त्रीय रूप-रचना को स्पष्ट करता है और वाक्य-रचना में हमेशा पीछे रहता है। इस कारण चॉम्स्की ने अर्थ का अलग-से कोई वर्णन या विश्लेषण नहीं किया। लेकिन कैट्स और फ़ोडर नामक विद्वानों ने अर्थ की भी व्यवस्था दी है और वाक्य की तरह अर्थ तक पहुँचने के नियम बनाये हैं (बाद में इसका थोड़ा विवरण दिया गया है—देखें 1. 4)

1.3.7—सपीर और वोर्फ़ का अर्थ संबंधी सिद्धान्त समाजशास्त्रीय है। सपीर मानते हैं कि भाषा मानसिक क्रिया को प्रभावित करती है और चिंतन को दिशा देती है। भाषा स्वायत्त, सर्जनात्मक और प्रतीकात्मक गठन है और अपनी रूपगत पूर्णता के कारण हमारे अनुभवों को रूप देती है, उन्हें कम या अधिक कर देती है। वोर्फ़ मानते हैं कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, वह हमारे चिंतन, विचारों की नियंता है, जो हमारी मानसिक क्रियाओं को दिशा देतीं है। पाइक अपने टैग्मीमिक्स के सिद्धान्त के मूल में समाजशास्त्र को ही मानते हैं। मनुष्य की अन्य क्रियाओं की तरह भाषा भी एक क्रिया है। हर क्रिया की कुछ सार्थक इकाइयाँ (टैग्मीम) निकाली जा सकती हैं और इनका स्थान, प्रकार्य आदि का अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रकार भाषा के हर स्तर पर टैग्मीम निकाले जा सकते हैं, जो व्याकरण की दृष्टि से सार्थक होंगे और इनके आपस के संबंधों का विश्लेषण किया जा सकता है। इससे अधिक विस्तार पाइक में अर्थ के संबंध में नहीं मिलता।

1.4—अर्थ संबंधी विभिन्न संप्रदायों के तथ्यों के अवलोकन से एक बात स्पष्ट होती है। विद्वानों ने कोश-शब्द और इसके अर्थों की चर्चा कम की है, शब्द और अर्थ के संबंधों के बारे में ही विस्तार में विचार किया है। लगभग सभी विद्वान भाषा की संरचना और भाषाओं के वर्णन के लिए उचित व्याकरण-व्यवस्था के संबंध में ही अर्थ पर विचार किया है। इस कारण इनमें अर्थ-संरचना के संबंध में विशेष विचार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं दिखायी पड़ते, बल्कि भाषा-संरचना में अर्थ के महत्त्व या स्थान पर ही विचार हुआ है। चॉम्स्की संप्रदाय के दो विद्वानों कैट्स और फ़ोडर ने अपने संप्रदाय के अनुरूप अर्थ-संरचना देने का यत्न किया है। वे अपने व्याकरण के सूचकों (marker) के सिद्धान्त को अर्थ के सूक्ष्म अध्ययन में उपयोगी मानते हैं। शब्द के विभिन्न अर्थ एक-दूसरे अर्थ से किसी न किसी गुण में भिन्न हैं। इस भिन्नताको सूचक दिखायेंगे। उदाहरण के लिए 'bachelor' शब्द के विभिन्न अर्थ द्रष्टव्य हैं।

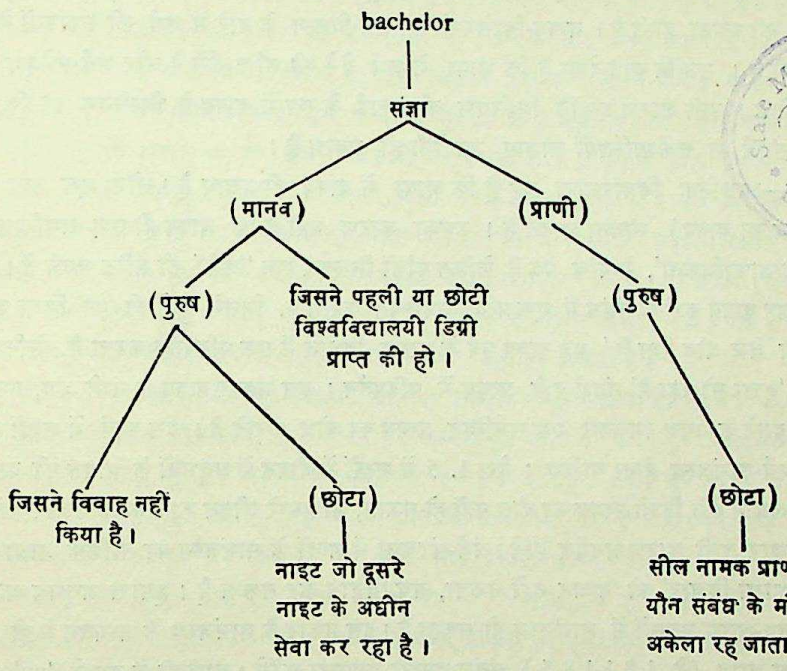

State Museum Library Lucknow

इस चित्र में कोष्ठकों में दिये हुए शब्द संकेतक (marker) हैं और अन्य कोष्ठक-शब्दों से भिन्नता को स्पष्ट करते हैं। अर्थ-विवेचन की यह पद्धति, वाक्यों को संकेतकों के द्वारा दिखाने के आधार पर शब्दों के अर्थ को भी दिखाने का यत्न करती है और इस दृष्टि से कोश की प्रविष्टियों से भिन्न है, जहाँ सभी अर्थ एक (और किसी) क्रम में रख दिये जाते हैं। इसके गुण-दोषों के विवेचन में न जाकर, इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यह जितना स्पष्ट है, उतना ही अव्यावहारिक भी है। व्याकरण आपेक्षिक रूप से बद्ध व्यवस्था है, लेकिन अर्थ का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसमें सभी अर्थों के लिए थोड़े से संकेतक प्रयोग में लाना नहीं हो सकता। अन्यथा इनका सिद्धान्त बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यह कोशगत शब्दों के अर्थ की संरचना के बारे में विवेचन करता है।

1.5—अर्थ क्या है और भाषा के किस अंग में है, यह भी बड़ी समस्या है। हम जीवन के अपने अनुभवों का कुछ शब्दों में भावारोप (abstractions) करते हैं। इस तरह अर्थ हमारे जीवन के कुछ उल्लेख अनुभवों का भावरूप है। हयाकावा के अनुसार अर्थ एक वस्तु (content) है, जो कि वास्तविकता के ज्ञान से उद्भूत वाक्-भावरूपों की एक शृंखला है। सस्युर भाषा को भावन या अमूर्त्तन (abstractions) की वाक्-भावरूपों की व्यवस्था मानते हैं। शब्द अर्थ के प्रत्ययात्मक जगत की सृष्टि में आकर प्रत्ययों की व्यवस्था उत्पन्न करते हैं। ब्लूमफ़ील्ड अपने सिद्धान्त के अनुसार इस पक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर प्रकाश डालते हैं। प्रेरणा और प्रतिक्रिया की श्रृंखला में कभी-कभी कोई अर्थ तुरन्त प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करता। इस निलम्बित प्रतिक्रिया का मुख्य कारण यही है कि अर्थ भाषा में भावन है, जिसे पूर्व ज्ञान के आधार पर हम जानते हैं। ऑग्डन-रिचर्ड्स कहते हैं कि भाषा परिस्थितियों से उपयुक्त विवरणों को व्यक्त करती है और इसे ध्वनि, शब्द आदि के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। भावन का यह गुण अर्थ और जीवन के संबंध को स्पष्ट करता है।

1.5.1—भाषा में अर्थ शब्द में है। अर्थ विज्ञान की मूल इकाई शब्द को ही माना जाता है। शब्दों के प्रयोग से वाक्य की रचना होती है। वाक्य-विश्लेषकों ने, अर्थ विज्ञान के बारे में अर्थ की इकाइयों के संदर्भ में चर्चा नहीं की है। उन्होंने यही देखा है कि भाषा में अर्थ देने की शक्ति कैसे है और अर्थ-संप्रेषण में यह कैसे काम करती है। इसी कारण इन्होंने विश्लेषण की इकाई के रूप में वाक्य के विश्लेषण को ही महत्त्व दिया है। इस संदर्भ में तर्कशास्त्रियों का मत उपयोगी हो सकता है।

1.5.2—आधुनिक विचारधारा यह है कि भाषा में वाक्य ही प्रधान है। लोग एक शब्द को भी वाक्य (एक शब्द का वाक्य) मानना चाहते हैं। इसका कारण यही है कि वाक्य ही एक समन्वित प्रत्यय दे पाता है। 'अस्वाभाविकता', में पाँच पद हैं, लेकिन पाँचों मिलकर एक "अर्थ" की सृष्टि करते हैं। 'कुत्ता दौड़ रहा है'—यह वाक्य कुत्ते के संबंध में एक प्रत्यय उपस्थित करता है, जिसमें कुत्ते की एक क्रिया का बोध होता है। 'कुत्ता तेज़ दौड़ रहा है' यह वाक्य पूर्व के प्रत्यय–विधान में एक परिवर्तन करता है, लेकिन मूल प्रत्यय वही है। 'कुत्ता सो रहा है' संदर्भ वही, प्रत्यय में परिवर्तन। इस प्रकार वाक्य के सभी अंग, प्रमुख रूप से शब्द, एक दूसरे के साथ मिलकर एक समन्वित प्रत्यय का बोध कराते हैं। इस कार्य में शब्दों का एक दूसरे के साथ अर्थ-सामंजस्य होना चाहिए। पैरा 1. 5 में शब्दों में जीवन के अनुभवों के भावन की बात कही जा चुकी है। वाक्य में ऐसे किसी प्रत्यय का बोध नहीं हो सकता, जो हमारे जीवन का अनुभव न हो। 'शोकातुर मकान', 'हरे विचार' इसी कारण अनर्गल होंगे। अर्थ-संरचना में शब्दों के सामंजस्य का तार्किक आधार होता है। व्याकरण 'काला विचार' को नकार नहीं सकता, अर्थ विज्ञान कर सकता है। हमारा अनुभव बताता है कि किन दो अलग-अलग प्रत्ययों में सामंजस्य हो सकता है। इस प्रकार के सामंजस्य के अध्ययन में ही पर्याय, विलोम,सह-संबंध आदि (दे. 1.8.1-1.8.5.) संबंध हमारी सहायता करेंगे। चॉम्स्की के बताये 'colourless green ideas sleep furiously' जैसे वाक्य में यही दोष है कि शब्दों के अर्थ का एक दूसरे के साथ सामंजस्य नहीं है। ये सभी मिलकर एक प्रत्यय उपस्थित करने में असमर्थ हैं। यदि उन्हीं शब्दों में थोड़ा हेर-फेर कर दें और ऐसे शब्द रख दें, जो दूसरों के साथ प्रत्यात्मक संबंध रख सकते हैं, तो यह वाक्य अर्थयुक्त चित्र प्रस्तुत कर सकेगा, जैसे "colourless futile ideas die out slowly". इस तरह वाक्य विश्लेषण में वाक्य की रचना तथा अर्थ संरचना दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

1.5.3—अर्थ का सामंजस्य भाषा के सभी अंगों में देखा जाता है और हर स्तर पर अर्थ है, जो अंततः समग्र अर्थ का रूप ले लेता है। अर्थ में पहला स्तर पदों का है। इन पदों के चयन तथा क्रम से ही अर्थ प्रकट होता है। 'अस्वाभाविकता' की जगह *स्वाताभाविक या *नस्वाभाविक्य कोई अर्थ नहीं दे पाते। अर्थ का दूसरा स्तर शब्द का है। शब्द यहाँ एक, जैसे आना, जाना, लड़ना या दो—इन्कार करना, मज़ाक करना, आ जाना, मर जाना, बदल जाना हो सकते हैं। पदों की अपेक्षा सभी शब्दों में स्वतंत्र अर्थ- चित्र होता है और हर शब्द (शब्दिम) दूसरे शब्दों (शब्दिमों) से भिन्न अर्थ रखता है। इस कारण अर्थ विज्ञान में लघुतम इकाई शब्द ही है। अर्थ का तीसरा स्तर मुहावरों और वाक्यांशों का है। मुहावरे कई असंबद्ध शब्दों के बने होने के बावजूद एक विशिष्ट अर्थ का बोध कराते हैं, जैसे 'आंखों में धूल झोंकना' आदि। वाक्यांश अर्थ विज्ञान और वाक्य विज्ञान की सामान्य इकाई है। यह शब्दों को अन्य शब्दों से जोड़ने में मदद करता है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और व्याकरणिक या प्रत्ययात्मक संबंध स्पष्ट करता है, जैसे राम को, राम से आदि, और प्रत्यय-विस्तार करता है, जैसे बड़ा लड़का, काली गाय आदि। वाक्य में एक पूर्ण प्रत्यय होता है, जो संबद्ध प्रत्ययों के सामंजस्य से बनता है। स्थानापन्न शब्द (substitutes) भी, अपनी प्रकृति के कारण पूर्ण प्रत्यय की ओर इशारा करते हैं। केवल 'लड़का' कहें तो उस लड़के के संबंध में कोई जानकारी नहीं होती। लेकिन 'कौन आ रहा है' के उत्तर में 'लड़का' वाक्य के प्रत्यय को प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार हाँ, नहीं, कुछ नहीं, कोई नहीं आदि शब्द भी भाषा में प्रयोग के संदर्भ से पूर्ण प्रत्यय देने में समर्थ होते हैं। वाक्य अर्थविज्ञान की अंतिम इकाई नहीं है। एक वाक्य को भी किसी परिच्छेद का अंग बनना पड़ता है। भिन्न प्रत्ययों वाले, असंबद्ध वाक्यों से कोई संभाषण या वर्णन नहीं हो सकता। एक लम्बे वर्णन में कई वाक्य होंगे, इनमें सह-संबंध का विशेष आग्रह होगा। यदि प्रसंग शादी का हो तो वर, वधू, पुरोहित, दान-दक्षिणा, होम, अग्नि, फेरी, बरात आदि शब्दों का क्रम एक प्रकार से अनिवार्य है। हॉकेट ने 'Discourse Analysis' पर जो लिखा है उससे स्पष्ट होता है कि उनका मुख्य लक्ष्य अर्थ विज्ञान और शैली का विश्लेषण ही है, न कि भाषा की अर्थ-संरचना का। इस तरह भाषा की संरचना के संदर्भ में महत्तम इकाई वाक्य हो सकती है, लेकिन अर्थ-संरचना की बड़ी इकाई केवल वाक्य नहीं। इसलिए किसी एक प्रसंग (ग्रंथ, कथा, वर्णन, काव्य) के आधार पर अर्थ-संरचना की विवेचना हो सकती है, जिस प्रकार का प्रयास लयान्स ने किया है और बिना इन प्रसंगों के अर्थ संरचना की बात स्पष्ट नहीं हो सकती है।

1.5.4––यदि भाषा की अर्थ-संरचना का सही विश्लेषण हो सकता है, तो वह भाषा के रूपात्मक अध्ययन को भी अपने में समाविष्ट कर सकता है। शब्द-समूह की चर्चा करते हुए विद्वानों ने 'संरचनात्मक शब्दों' की सूची प्रस्तुत की है। लेकिन संरचनात्मक शब्दों का सिद्धान्त बहुत दूर तक कल्पना मात्र है। जो एक भाषा में संरचनात्मक शब्द है, वही दूसरी भाषा में वस्त्वर्थक शब्द है। संरचनात्मक शब्द भी प्रत्यय के पूर्ण होने में सहायता देते हैं। हिंदी 'है, था' आदि शब्द किसी वाक्य को अलग-अलग संदर्भों में पहचानने में योग देते हैं। 'लड़का अच्छा है,' 'लड़का अच्छा था'–– इन वाक्यों में 'है' और 'था' के कारण ही प्रसंग का उद्‌बोधन होता है। अंग्रेजी में must, should, can, shall will, may, might आदि शब्द किसी एक स्थान पर आते हैं और परस्पर नकारात्मक हैं। इनसे विषय को भिन्न प्रसंगों में समझा जा सकता है। 'I can go' और 'I must go' दोनों के प्रत्यय पूर्ण रूप से भिन्न हैं। इस कारण भाषा की संरचना अर्थ संरचना से अभिन्न ही नहीं, बल्कि परस्पर संबद्ध है।

1.5.5––हम वाक्य में शब्दों को बदलकर प्रत्यय-विधान में वांछित परिवर्तन करते हैं। 'मैं उठ रहा हूँ' "मैं" की एक क्रिया का वर्णन करता है। यहाँ 'उठ' की जगह 'देख, बोल, सो, पढ़' आदि शब्दों को रखकर 'मैं · · · · · रहा हूँ' के प्रसंग में विविध प्रत्ययों का बोध करा सकते हैं। इस प्रकार वाक्य विज्ञान के रूप-वर्ग (form classes) वैसे अर्थ विज्ञान के भी स्थानापत्ति-वर्ग (substitution classes) हैं। रूप-वर्ग यह निश्चित करता है कि 'मैं सो रहा हूँ' में, 'मैं' का स्थान कोई संज्ञा या सर्वनाम ले सकता है, विशेषण या क्रिया नहीं। क्रिया का स्थान क्रिया ही ले सकती है, संज्ञा आदि नहीं। इसी प्रकार अर्थ संरचना में प्रयोग के आधार पर विशिष्ट वर्ग होंगे, जिस प्रकार के वर्ग रूपांतरण व्याकरणों में अंतिम कड़ी (final string) में दिये जाते हैं। अर्थ के पाँच मूलाधारों के संदर्भ में शब्दों का एक दूसरे से संबंध निश्चित होगा, और स्वीकार्य वाक्य की रचना होगी।

1.6—अर्थ संरचना का आधार प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिए। प्रत्यक्षानुभव की सामग्री (empirical data) पर आधारित अर्थ विज्ञान ही संतोषजनक रूप से उसकी संरचना को प्रस्तुत कर सकेगा। इस प्रकार अर्थविज्ञान को समकालिक (synchronic) और वर्णनात्मक (descriptive) होने की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आवश्यकता है। कोशों में कई अव्यवहार्य शब्द भी दिये जाते हैं, पुस्तकों में सामान्य भाषा से भिन्न अर्थों-रूपों में शब्द व्यवहृत होते हैं। यदि शोधकर्त्ता इन सबके अंदर से शब्द के असली अर्थ को न पहचान सके, तो उसका विश्लेषण त्रुटिपूर्ण होगा। लेकिन भाषा की संरचना की तरह अर्थ संरचना सीमित व्यवस्था नहीं है और जिस प्रकार एक व्यक्ति की भाषा के आधार पर संरचना का विश्लेषण हो सकता है, उस प्रकार एक ही व्यक्ति से अर्थ की पूरी सामग्री नहीं मिल सकती है। शोधकर्त्ता को भाषा बोलने वालों के निकट रह कर हर शब्द के हर संदर्भ को अंकित करना होगा और उसके आधार पर विवेचना करनी होगी। कोश आदि उसके ज्ञान तथा सामग्री की पुष्टि कर सकते हैं। लेकिन कोशों के आधार पर विवेचना नहीं हो सकती।

1.6.0.1—यद्यपि यहाँ इस प्रकार तमिल शब्दों के अर्थों के विभिन्न पहलुओं को मैंने बड़े परिश्रम से निकाला है, भाषा प्रयोग की विविधता के कारण कई शब्द अन्य अर्थों में तथा कई विशेष क्षेत्रों में प्रयुक्त हो सकते हैं। संस्कृत-आग्रही ब्राह्मण संस्कृत के ही अर्थ में चेष्टा, पत्नी, वैभव, धर्म, चरित्र आदि शब्दों का प्रयोग करेगा। वह इसी तरह संस्कृत की ध्वनि-व्यवस्था को भी तमिल में लाने का यत्न करता है। ब्राह्मण आख्याकारों, टीकाकारों, कथा वाचकों द्वारा विकसित मणिप्रवाल शैली की विशेषता इतनी ही नहीं है कि उसमें संस्कृत शब्द थे, बल्कि बहुधा संस्कृत शब्द संस्कृत ध्वनि व्यवस्था तथा संस्कृत अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इसी तरह कोई संस्कृतनिष्ठ विद्वान पूर्वग्रह के कारण इनसे कहीं अधिक शब्दों का प्रयोग कर सकता है। इस प्रकार शब्दों के अध्ययन में निम्नस्तरों (substrata) के सिद्धान्तों को ध्यान में रखना होगा। मैंने यहाँ जितने शब्द दिये हैं, वे प्रायः लोक-प्रचलित तथा लेखन से समर्थित हैं। लेकिन कुछ शब्द मानक बोलचाल के (colloquial) हैं, जिनका प्रयोग लेखन में कम ही होता है। इनको मैंने व्यवहार के प्रसंगों से लिये हैं। मैंने भाषा के स्तर का उल्लेख पहले ही किया है। कट्टर तमिल समर्थक को भी इनमें से 65 प्रतिशत शब्दों का उपयोग करना ही पड़ेगा। यदि इनमें कुछ शब्द प्रचलन की दृष्टि से विवादास्पद हो सकते हैं, तो उनका प्रतिशत 5 से अधिक नहीं होगा, ऐसा मानता हूँ।

1.6.1—अर्थ का क्षेत्र इतना विस्तृत और व्याकरण की अपेक्षा इतना संदिग्ध है कि भाषा के पूरे अर्थ-तत्त्व के लिए संरचना प्रस्तुत करना असंभव कार्य है। संरचनात्मक अर्थविज्ञान भाषा के अर्थ-तत्व के सामान्य सिद्धान्त ही निकाल सकता है, न कि उसकी पूरी संरचना। यदि इस संरचना का स्वरूप निश्चित हो जाये, तो दो भाषाओं के शब्द-समूहों की तुलना इसी आधार पर हो सकती है। अर्थ-विचार के पुराने सिद्धान्तों में अर्थ-विवेचन के विलोम अर्थ, पर्यायवाची शब्द आदि रूप बताये जाते हैं तथा ऐतिहासिक अर्थ विज्ञान की अर्थ विस्तार, अर्थ संकोच, अर्थादेश आदि दिशाएँ। ये क्षेत्र वैज्ञानिकता के अभाव में अर्थ-तत्त्व के विश्लेषण में सही परिप्रेक्ष्य अपना नहीं पाते। यही कारण कि विलोम या पर्यायों के बारे में सर्वमान्य सिद्धान्त बन नहीं पाया है। अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ व्यक्ति-सापेक्ष विश्लेषण है। किसी शब्द के अर्थ का विस्तार या संकोच व्यक्ति-सापेक्ष विचार है और ये विश्लेषण के उपयोगी सिद्धान्त नहीं हैं। इन पुराने सिद्धान्तों को नये परिप्रेक्ष्य में लेना होगा और उनकी परिभाषा अपनी आवश्यकता के अनुसार देनी होगी।

1.7—अपने विषय के संदर्भ में शब्द और अर्थ की परिभाषा निम्न प्रकार से देना चाहूँगा। हिंदी तथा तमिल में (तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में) शब्द अर्थ का वाहक है और अर्थविज्ञान की मूल इकाई है। शब्दों के विभिन्न रूपात्मक भेदों को हम एक शब्द (शब्दिम) के ही संदर्भ में देख सकते हैं, जिस प्रकार कोशों में शब्दों के व्युत्पन्न तथा व्याकरणिक रूप एक जगह दिये जाते हैं। यह विवेचन शब्द-वर्णन और दो भाषाओं की या ऐतिहासिक क्रम की तुलना के लिए महत्त्वपूर्ण होगा। शब्द अपने में अर्थ रखता है। शब्द और अर्थ का एक-एक का (isomorphic) संबंध नहीं है। भाषा के अर्थ-संप्रेषण के समस्त भार को भाषा का शब्द-समूह वहन करता है। इसमें शब्द और अर्थ का संबंध काफ़ी अनिश्चित-सा है। एक शब्द एक से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिक अनेक अर्थों को भी वहन करता है और इसी कारण कहा जाता है कि शब्द का एक अर्थ नहीं होता, बल्कि उसके अर्थ का एक क्षेत्र होता है। यह बहुधा सभी शब्दों के संदर्भ में सही होता है। इससे भिन्न बह्वर्थता (polysemy) की प्रक्रिया होती है, जिसमें बिल्कुल ही असंबद्ध, विशिष्ट अर्थ का प्रतिभास होता है जैसे **मगर**-एक जानवर; लेकिन; **पर**—लेकिन; में; पंख आदि। भाषा में इस प्रकार की विशिष्टता के उदाहरण कम ही मिलेंगे। इसकी जगह कई संबद्ध अर्थों के एक लम्बे क्षेत्र का मिलना अधिक स्वाभाविक है, जिसका विभाजन प्रायः निश्चित नहीं हो पाता। जैसे पास–मेरे पास; घर के पास; बहुत पास (दूर नहीं); दिल के पास; पास आना (घनिष्ट होना); पास (बग़ल में या अधिक निकट) बैठना आदि। यदि इन संदर्भों में 'नहीं' का प्रयोग किया जाये, तो ये सारे 'अर्थ' नहीं रह जाते। इससे कुछ भिन्न स्थिति वहाँ होती है. जहाँ एक शब्द के कई अर्थ एक दूसरे से व्युत्पन्न होते हैं और अपना विशिष्ट अर्थ–क्षेत्र कायम रखते हैं। जैसे

पत्र—पत्ता

—वह पत्ता, जिस पर कुछ लिखा गया है, ताड़पत्र आदि।

—वह वस्तु, जिस पर कुछ लिख गया है, ताम्रपत्र आदि।

—कागज़, जिसमें संदेश लिखा गया है, letter आदि।

—कागज़, जिसमें कुछ लिखा हुआ है, कागज़-पत्र।

—वह कागज़, जिसमें कोई बात समझौते के तौर पर लिखी है
जैसे, दानपत्र, बंधपत्र, मान पत्र आदि।

—वह लेख, जो लिखकर (या पढ़कर) प्रस्तुत किया गया है, (article) शोध-पत्र।

—वह, जिसमें नियमित रूप से विषय (ऐसे लेख) प्रस्तुत किये जाते हैं, जैसे दैनिक पत्र, मासिक पत्र आदि।

भाषा का उपयोगकर्ता इन शब्दों में निहित 'अर्थ' को पहचानता है और उन्हें प्रेषित-ग्रहण करता रहता है। लेकिन वह 'अर्थ' की संकुचित सीमा में हमेशा बँधा नहीं रहता। वह अपनी आवश्यकता के अनुसार नये संदर्भों की भी सृष्टि करता रहता है। ऐसे ही भाषा के मुहावरे और अन्य लाक्षणिक-व्यंजक प्रयोग विकसित हुए हैं। आधुनिक काल में बिंबात्मकता, प्रतीकात्मकता, विशेषण-विपर्यय आदि नये प्रयोग शब्द और अर्थ के संबंध को नये आयाम देते हैं। इस कारण शब्द-अर्थ का दृढ़ संबंध बाँध लेना और इनके आधार पर भाषा का 'पूर्ण' अर्थ विज्ञान निर्मित करना असम्भव-सा लगता है।

अर्थ के संबंध में निम्नलिखित तथ्य द्रष्टव्य हैं। शब्द अर्थ के वाहक हैं। शब्द के अनेक अर्थों का एक दूसरे के साथ संबंध तथा अन्य शब्दों के साथ संबंध दोनों भाषाओं में निश्चित हो जाते हैं। जैसे, एक ध्वनिग्राम के सदस्य सम्मिलित रूप से दूसरे ध्वनिग्राम के साथ व्यतिरेक प्रकट करते हैं। / ड / और / र / का व्यतिरेक है, तो / ड / के दोनों सदस्य अपने-अपने स्थान में / र / का सामना करते हैं।

नाड़ा—नारा	डाल—राल
पेड़—पेर	थर्ड—हर्र आदि।
	(न कि— थर्ड़)

इसी प्रकार शब्द (शब्दिम) के विभिन्न अर्थों में, शब्दों का दूसरे शब्दों के साथ व्यतिरेक होता है।

गाना अच्छा है—भोजन अच्छा है।

मैं गाने लगा—मैं खाने लगा (न कि मैं भोजन लगा।)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाषा में सभी शब्द अपना-अपना विशिष्ट प्रकार्य (function) रखते हैं। यदि एक शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, तो भी वह शब्द अन्य शब्दों के साथ अर्थों के अनुसार भिन्न-भिन्न संबंध रखेगा।

शब्द	प्रक्रियाएँ	सह संबंध	पर्याय
बत्ती	जलना	घी, तेल, बत्ती,दीवट आदि	दीया, चिराग़
	बुझना तेज मद्धा आदि	स्विच, बिजली, फ्यूज़, बल्ब आदि	लाइट, लैंप

शब्द	व्युत्पादक शब्द	विलोम	पर्याय
साफ़	साफ़गो, सफ़ाई	झूठा, काला, अस्पष्ट	सच्चा, निष्कलंक, निष्कपट
	सफ़ाई	गंदा	निर्मल, विशुद्ध

1.8—शब्द के इन संबंधों को प्रकट करने के लिए अर्थ विज्ञान में पाँच प्रमुख सिद्धान्त माने गये हैं। इनका यहाँ विवेचन करना उचित होगा।

1.8.1—**पर्यायवाची शब्द** (Synonym) : भाषाविज्ञान में एक गलत धारणा बन गयी है कि कोई पूर्ण पर्यायवाची (अर्थात् कोई पर्यायवाची) शब्द नहीं होता। इस सिद्धान्त का उद्गम स्थान नाइडा के 'Morphology' को माना जाता है। यह पद विज्ञान के क्षेत्र में सही है और उन्होंने वहाँ अर्थ विज्ञान पर विचार नहीं किया है। पद विज्ञान में पर्यायों की उपस्थिति पद विश्लेषण में कठिनाई उत्पन्न करती। हमारे लिए भाषा में पर्यायों की उपस्थिति के सवाल से पर्यायों की क्रिया और भाषा में उनकी उपयोगिता का सवाल अधिक महत्वपूर्ण है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, किसी शब्द के विभिन्न, संबद्ध अर्थों में कोई एक या दो, अन्य किसी शब्द के किसी अर्थ-क्षेत्र को छू जाते हैं। यह गुण भाषा में अपरिहार्य रूप से पाया जाता है। कभी-कभी एक संदर्भ में प्रयोग किये जाने वाले शब्द आपस में एक या कई गुणों को समन्वित रूप से प्रकट करते हैं। जैसे, 'गांधीजी सुशील, गुणी, चरित्रवान, सदाचारी, सत्पुरुष थे'। इसमें आने वाले शब्द जिस एक अर्थ को प्रकट करते हैं, उसे अलग-अलग शब्दों में बाँट लेना कठिन होगा। इसी प्रकार डाँट-डपट, दल-बल, कर्म-धर्म, धन-दौलत आदि शब्द-युग्मों में अर्थ का विभाजन कठिन हो जाता है। जहाँ पर्याय अर्थाभिव्यक्ति के लिए वरदान है, वहाँ विश्लेषण में कठिन है। अर्थ की अनिश्चितता के कारण हम किन्हीं पर्यायों में भेद का अनुभव कर नहीं पाते और दोनों ओर से अपना मत दे देते हैं। लेकिन इस समस्या को शब्द के संदर्भ (context) से बहुत दूर तक सुलझा सकते हैं।

1.8.2—**विलोम** (Antonym) : यह भाषा में बहुत महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। विलोम का अर्थ भी परम्परा के अनुसार उल्टा अर्थ नहीं है, बल्कि दो शब्दों के संबंधों का विश्लेषण है, जिनमें वे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर किसी शब्द से भिन्न होना चाहते हैं। माँ-बाप, आया-गया आदि शब्दों में ध्रुवीय संबंध दिखायी पड़ता है। शेष दो प्रकार के विलोम तुलना और निषेध के हैं। दूर-पास का, बड़े-छोटे का भेद तुलनात्मक है, वस्तु-सापेक्ष है। निषेधात्मक विलोम प्रायः तुलना नहीं दिखाता। 'धन नहीं' का अर्थ 'गरीबी' नहीं होता और 'गरीब नहीं' का अर्थ 'अमीरी' नहीं है।

किसी-किसी संदर्भ में विलोम शब्द भी, पर्यायों की तरह विशेष अर्थ को स्पष्ट करने के लिए साथ आते हैं। अनुशासन-प्रिय उदार व्यक्ति के बारे में 'कोमल किंतु कठोर' का प्रयोग होता है। यहाँ दोनों शब्द विलोम होते हुए भी एक ही अर्थ को प्रकट करते हैं। 'बल्कि · · · · · · · · भी', 'न केवल' आदि प्रयोग पर्याय, विलोम, नकार-शब्द (दे. 1.8.3) आदि कई संबंधों को प्रकट करते हैं।

विलोमों का विवेचन शब्द-निर्माण और प्रयोग की प्रक्रिया को समझने में बहुत ही उपयोगी है। विलोम शब्द एक अर्थ के दोनों पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं, जो परस्पर संबद्ध हैं। यह संबंध मानव के वैचारिक उद्भाव से प्रेरित है। अर्थात, विलोम शब्द अर्थ के दो पहलुओं का आपस में वितरण कर लेते हैं। यदि किसी भाषा में किसी संदर्भ में विलोम नहीं मिले, तो दूसरी भाषा के दो विलोम शब्दों की तुलना में उसकी शब्द-रचना और वाक्य-रचना पर असर पड़ेगा। तमिल में शिक्षा के लिए शब्द है 'कल्वि' लेकिन अशिक्षा के लिए शब्द नहीं है। यह अर्थ वाक्य-रचना द्वारा प्रकट होगा। तमिल अन्याय (अत्याचार) न्याय (इन्साफ) का विलोम नहीं है। उसके स्थान पर अनीति (नीति-न्याय) का प्रयोग होगा। इस प्रकार ये चारों शब्द आपस में भिन्न संबंध प्रकट करते हैं। दूसरी ओर यदि 'सावधानी' के लिए तमिल शब्द 'जाग्रत' है, तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि 'असावधानी' के लिए 'अजाग्रत' का प्रयोग हो सकता है। 'संदर्भ' (तमिल-अवसर) का विलोम 'असंदर्भ' हिंदी में नहीं मिलता, क्योंकि इसके हिंदी अर्थ के विलोम का प्रत्यय हमारे मस्तिष्क में नहीं है। लेकिन तमिल में असंदर्भ–'बैमौके' है। इस प्रकार विलोम की प्रक्रिया शब्द-रचना को समझने में, विशेषकर तुलनात्मक अर्थ विज्ञान में बहुत ही उपयोगी सिद्धान्त प्रतीत होती है।

1.8.3—विलोम के ही संदर्भ में **वर्ग-विभाजन** के आधार पर नकारात्मक शब्दों का सिद्धान्त भी अधिक महत्वपूर्ण है। एक वर्ग के शब्द आपस में नकारात्मक (exclusive) होते हैं, यद्यपि निषेध नहीं प्रकट करते। 'लाल' का विलोम 'काला' या 'सफ़ेद' नहीं है, बल्कि यह तीनों रंगों के संदर्भ में अन्य शब्दों की अनुपस्थिति बताता है। 'गाय' नामक जानवर अन्य जानवरों से—कुत्ता, बिल्ली, शेर, भैंस आदि से अपनी विशिष्टता (पृथकता) बताता है। ये सभी आपस में नकारात्मक शब्दों का एक वर्ग बनाते हैं और उस वर्ग में अपना-अपना स्थान ग्रहण करते हैं। पुराने ढंग की भाषा शिक्षण की पुस्तकों में इसी आधार पर शब्दावली दी हुई मिलती है, जैसे शरीर के अवयव, अनाज, फल, प्रकृति, तरकारी, रंग, सप्ताह के दिन आदि। शब्दों को सीखने और याद करने में यह पद्धति उपयोगी भी हो सकती है। जहाँ दो भाषाओं में इन समूहों की संख्या में भेद उत्पन्न होता है, किसी भाषा में एक ही शब्द दो या अधिक शब्दों का कार्य कर लेता है और तुलना का आधार बना लेता है। जैसे तमिल 'पेट्टि' विभिन्न आकारों की रचना का प्रतिनिधित्व करता है—डिबिया, संदूकची, बक्सा, संदूक, ट्रंक, (रेल का) डिब्बा आदि।

इन शब्दों की संख्या तथा वितरण दो भाषाओं के विश्लेषण में बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रत्यक्षीकरण (perception) पर कार्य करने वाले विद्वानों ने उल्लेख किया है कि रंग की पट्टी (spectrum) के प्रतीकों का विभाजन भाषाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। जहाँ इस प्रकार की प्रक्रिया होगी, वहाँ एक शब्द एक भाषा में जो प्रत्यय उत्पन्न करेगा, वह दूसरी भाषा के संदर्भ में नहीं। तमिल भाषा गेरुआ और लाल रंगों में विभाजन नहीं करती। हिंदी का 'मुँह' शब्द शरीर के दो अवययों को प्रकट करता है, जिसके लिए तमिल में दो शब्द हैं। इस कारण उधार लिया हुआ कोई शब्द वर्ग-विभाजन तथा वितरण में नयी व्यवस्था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पैदा कर देता है। जैसे—

तमिल शब्द : मयिर्—बाल

मुटि—सिर के बाल (मनुष्य के)

कूंतल्—(प्रायः नारी की) अलकें

आगत शब्द : चिकै (शिखा)—आदमी के सिर के बाल

उरोमम् (रोम)—रोम; रोयाँ; ऊन

अलकम् (अलक)—नारी की अलकें।

वर्तमान तमिल में ये सभी शब्द, दिये गये इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। इस व्यवस्था में नया शब्द नया प्रत्यय भी लाता है और पुराने प्रत्ययों के साथ पुनर्वितरण कर लेता है। जैसे—

'विचिरि' (हाथ के, बिजली के पंखे); 'पंका' (दे.486.) तथा 'पेन' (फ़ैन)। 'वंटि' (गाड़ी) तथा 'गाड़ी' शब्द बहुत समय से अपने वर्ग का विस्तार करते आये हैं। रेल, कार, साइकिल आदि सभी शब्दों के आगमन के साथ-साथ 'गाड़ी' या 'वंटि' से इन सभी स्थलस्थ यानों का बोध होता है। बहुधा यह आवश्यक नहीं है कि दो भाषाओं में इसी प्रकार का वितरण कायम रखा जाये। जैसे तमिल 'टिक्कट्टु' (टिकट) हिंदी के अन्य कई रूपों को व्यक्त करता है, लेकिन हिंदी की तरह 'स्टैम्प' शब्द के लिए नहीं आता। कहीं-कहीं वर्ग-प्रतिनिधित्व वही रहता है, लेकिन केवल प्रतीक बदल जाता है, जिस कारण, भिन्न शब्द से, वे सारे 'अर्थ' बन जाते हैं। तमिल में 'अभिमान' शब्द हिंदी 'प्रेम' के लगभग सभी अर्थों को उसी रूप में व्यक्त करता है। इस प्रकार के संबंध दो भाषाओं के शब्दों को समझने में अधिक उपयोगी होंगे। इस सिलसिले में प्रस्तुत कार्य में तत्तुवम्, लट्चियम, अपिमानम् आदि प्रविष्टियाँ द्रष्टव्य हैं।

1.8.4—**सह-सम्बन्ध** (Collocation)

भाषा का हर शब्द कुछ विशिष्ट संदर्भों में ही आता है और उस संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले अन्य शब्दों से संबंध रखता है। यह संबंध दोनों शब्दों के किसी समान गुण के आधार पर होता है। जैसे 'गाय'

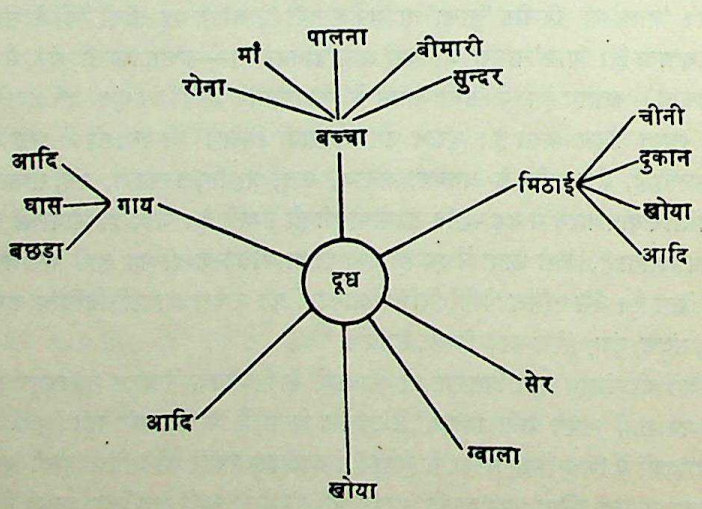

का संबंध 'घास' से है और 'घास' का संबंध 'हरा' से। 'गाय' और 'हरा', बीच में 'घास' को लाये बिना प्रत्यक्ष संबंध नहीं रखते। इस दृष्टि से हर शब्द के हर सह-संबंधक शब्द के अपने सह-संबंध होते हैं। हैलिडे के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिद्धान्त में सह-संबंध का अत्यधिक महत्त्व है। वहाँ इसी के आधार पर शब्द के प्रयोग के संदर्भों को निश्चित किया जाता है और यह चॉम्स्की के पर्याप्तता के सिद्धान्त का उत्तर देने में सहायक है। इसे निम्न प्रकार से प्रकट किया जा सकता है ।

लेकिन सह-संबंध का यह सिद्धान्त, जैसा कि प्रकट हो रहा है, इतना अस्पष्ट है कि इससे अर्थ का विशेष वर्णन नहीं मिलता। अब हाथी उड़ता है (to fly by air), परी-कथा में चिड़िया बोलती है, राजनीति में जनता शासन करती है और भाषाविज्ञान में भाषा जनक (parent) है। इसलिए सह-संबंध का कोई संतोषप्रद विधान नहीं होता।

		तमिल	हिंदी	बंगला	अंग्रेज़ी
खा	चाप्पिटु खा खा eat	खाने की क्रिया; भोजन, चाय, काफी पानी आदि; दही, घी, शहद, सिगरेट, बीड़ी आदि, दवाई (विरल)	खाने की क्रिया; भोजन; दही, घी, शहद; दवाई	खाने की क्रिया; तथा सभी खाद्य वस्तुएँ	खाने की क्रिया; भोजन आदि खाद्य पदार्थ
पी	कुटि पी पानकर drink	पीने की क्रिया; प्राणियों का पीना; चाय, काफी आदि; शहद, घी, दही आदि; सिगरेट, बीड़ी आदि	पीने की क्रिया; चाय, काफी आदि; दवाई; शराब बीड़ी, सिगरेट;	पीने की क्रिया (साहित्यिक)	पीने की क्रिया; सभी तरलपदार्थ
ले	एँटु ले × take	दवाई, टानिक	टानिक, दवाई; चाय, दूध; नियमित रूप से ग्रहण करने की क्रिया	×	पानी, चाय, काफी, दूध, आदि; दवाई, नियमित रूप से ग्रहण करने की क्रिया
मार	अटि (तमिल)	दावत, अच्छा खाना शराब	×	×	×
धूम्रपान	पुकै पिटि × × smoke	'smoke' करने की क्रिया			बीड़ी, सिगरेट आदि, 'smoke'करने की क्रिया

1.8.4.1—लेकिन यह प्रक्रिया बोली विज्ञान (dialectology) और दो भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में उपयोगी होता है। हिंदी में चाय 'पी' जाती है, तमिल में 'खायी'। यह बात हास्यास्पद भले लगे, लेकिन सह-संबंध से भाषाओं में स्पष्ट होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि हिंदी-बंगला के भिन्नार्थी समान शब्दों का विश्लेषण किया जाये, तो वहाँ 'खाना' और 'पीना' शब्दों का अर्थ उनके अपनी भाषा के सह-संबंधों के आधार पर निकालना होगा। बिना सह-संबंध को जाने यदि हम बंगला के प्रयोग का अर्थ हिंदी में करें—चाय खाना, तो यह अटपटा होगा। उस भाषा का वितरण शब्द के उपयोग के क्षेत्र को निर्धारित कर देता है। यहाँ चारों भाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होगा कि इनमें कोई भाषा दूसरी भाषा के साथ पूर्ण साम्य नहीं रखती। मलयालम भाषा अंग्रेज़ी की ही तरह सामान्य रूप से त्रिगुणी विभाजन करती है—खाना, पीना और धूम्रपान। इससे पता चलता है कि यह विभाजन देश या प्रदेश की सीमा को आधार नहीं बनाता, बल्कि भाषा बोलने वालों के अनुभव, व्यवहार और परम्परा को आधार मानता है। ये बातें भाषा सीखने में बहुत महत्त्व रखती हैं, फिर भी सामान्य रूप से अच्छे शब्द कोशों में भी इन सूक्ष्मताओं की उपेक्षा की जाती है।

1.8.5—**शब्दान्वयन** : यह शब्द-अर्थ संबंध की वह प्रक्रिया है, जिसमें अर्थ के प्रकट करने में एक से अधिक शब्द आते हैं। ऐसे कई शब्दों में दोनों शब्दों का एक दूसरे से संबंध पहले से ही निश्चित होता है और उनके स्थान पर अन्य शब्द नहीं आ सकते। दोनों शब्दों का अर्थ (या दो अर्थ ?) उनके योग में ही भासित होता है। यह प्रक्रिया ही शब्द की परिभाषा में समस्या बनकर आती है। 'स्वीकार करना' दो शब्द-एक अर्थ है या एक शब्द–एक अर्थ, यह समस्या है। हिंदी के कई ऐसे प्रयोगों के लिए हम दूसरी भाषाओं में केवल एक शब्द देखते हैं। जैसे हिंदी और तमिल में मदद करना—उतवु, इन्कार करना—मरु, नाराज़ होना—कोपि, धोखा देना—एमारु, मन लगना—पिटि, असर डालना—मयक्कु आदि। यह हिंदी की प्रकृति है कि कई क्रियाएँ संज्ञाओं के योग से बन जाती हैं। अर्थ के स्तर पर 'स्वीकार करना' को दो शब्द और 'स्वीकारना' को एक शब्द मानना युक्तिसंगत नहीं है।

1.8.5.1—दूसरी ओर मुहावरे तथा अन्य रूढ़ि उक्तियाँ इस प्रक्रिया के अंतर्गत आती हैं। हाथ-पैर टूटना, मन मारना, हथियार डालना, मैदान मारना आदि उक्तियों के भी कई भाषाओं में एक शब्द के रूप दिखायी पड़ेंगे। इस प्रकार के प्रयोगों को एक मानकर भिन्न संदर्भों में इनका प्रयोग तथा अन्य शब्दों से तुलना आदि दिखाना होगा। अंग्रेज़ी में 'take in, put off, lay down, get in' आदि शब्दों को हम वाक्यों में स्पष्ट करते हैं।

यद्यपि शब्दान्वयन एक भाषा में अधिक समस्या उत्पन्न नहीं करता, दो भाषाओं के तुलनात्मक विश्लेषण में इसको उचित महत्त्व देना होगा। समस्त शब्दों को छोड़कर, जिनमें दो या अधिक शब्दों का योग अवसरानुकूल कर लिया जाता है, अन्य अन्वयन एक शब्द की ही तरह तुलना के लिए लिये जा सकते हैं।

तमिल—	आतरि	हिंदी—	सहायता करना
	नितरिचनम्		प्रत्यक्ष अनुभव
	मरत् तूल्		बुरादा
	नकल् चैय्		नकल करना, कॉपी करना
	नकल् एँटु		प्रतिलिपि लेना आदि।

इस प्रकार शब्दों के विवेचन में, भाषा के विवेचन में, विश्लेषण की माँग, अन्य भाषाओं से तुलना आदि बातों को ध्यान में रखकर काम करना होगा। इसी कारण इस कार्य में एक धातु ((root) से संबंधित सभी रूप और उनके अर्थ दिये गये हैं। जैसे 'शाला' से पाठशाला, कला शाला, जेल शाला, पर्ण-शाला आदि कई रूप बनते हैं, जो क्रमशः स्कूल, कालिज, जेल, कुटी का अर्थ देते हैं। इन शब्दों को हिंदी शब्दों की तुलना में उन्हीं संदर्भों में सीख सकते हैं।

1.8.6—यहाँ उपर्युक्त विवेचन के आधार पर अर्थ-संरचना को पारिभाषित करने का यत्न करूँगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संरचना का मुख्य आधार है व्यतिरेक। यह व्यतिरेक शब्दों के अर्थों में प्रकट होता है। पाइक के ध्वनिग्राम विज्ञान के चार मूल आधारों (premises) की तरह उपर्युक्त पाँचों आधार अर्थ विज्ञान के मूल आधार हैं, न कि स्वयं अर्थ-संरचना। संरचना में तीन बातें होनी चाहिए—इकाई (unit), प्रकार्य (function) और वितरण (distribution)। अर्थ की मूल इकाई शब्द (शब्दिम) है। शब्दों का अर्थ (अर्थिम) उनका प्रकार्य है। हर शब्द अन्य शब्दों से भिन्न कार्य करता है। उनका वितरण उनके संदर्भों से प्रकट होता है, जो प्रत्ययात्मक तथा व्याकरणिक होता है। प्रायः 'शब्दम' के सदस्यों को शब्दों की रचना स्पष्ट करती है, जिस प्रकार ध्वनिग्राम के सदस्यों को संध्वनियों की भिन्नताएँ स्पष्ट करती हैं। ये पाँचों मूल आधार इन्हीं संरचना की विशेषताओं को पहचानने में मदद देते हैं। विलोम, पर्याय आदि शब्दों में प्रकार्य का विवरण देते हैं और शब्दों के प्रयोग के संदर्भों को पहचानने में सहायता करते हैं। दो भाषाओं की अर्थ संरचना की तुलना में हम दोनों के प्रतीकों (शब्दों) के अर्थ-क्षेत्र (अर्थिम) तथा इनके विभिन्न शब्द रूपों में वितरण, वितरण की विशेषताएँ, इस वितरण से वाक्यों में उनके संदर्भ आदि का तुलनात्मक विवेचन करते हैं।[13]

2.0 शब्दावली की तुलना—

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होगा कि अर्थ-संरचना के ये पाँचों आधार भाषा की अर्थ की प्रकृति को समझने तथा दो भाषाओं की तुलना करने में उपयोगी हो सकते हैं। सूक्ष्म रूप से इन पाँचों के और भेद हो सकते हैं। लेकिन संरचना को समझने के लिए ये पर्याप्त हैं।

2.1—पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि पूरी भाषा की अर्थ संरचना देना असंभव कार्य है। भाषा का अर्थ इतना व्यापक है कि उसमें अभी सिद्धान्तों का एकमत भी नहीं प्राप्त हुआ है। अर्थ के विश्लेषण में ब्लूमफील्ड कहते हैं कि कोश-रूपों को यादृच्छिक रूप से या अनियमित रूप से किसी शब्द-वर्ग (lexical form class) में रख सकते हैं, जो वर्ग न संरचना से, न सूचक से स्पष्ट होता है। अर्थ के विवेचन में हम अभी तय नहीं कर पाये हैं कि विश्लेषण शुरू कहाँ से कर सकते हैं। यहाँ तक कि भाषा का संरचनात्मक और कोशगत अर्थ की विभाजन-रेखा भी अभी खींची नहीं गयी है। विद्वानों ने व्याकरण के सादृश्य से अर्थ विज्ञान की लघुतम इकाई अर्थिम (episememe) निश्चित करने का यत्न किया है, किंतु उसे स्पष्ट नहीं किया है। ब्लूमफील्ड का कोश-अर्थ (lexical meaning) भी स्पष्ट नहीं किया गया है। वे वर्ग तथा वर्गार्थ पर ही विचार करते हैं।[14]

2.1.1 ट्रायर ने शब्द और भाषा के शब्द-समूह के बीच अर्थ-क्षेत्र (Wort felder) की उपस्थिति को माना। इन्होंने अर्थ-समानता, भिन्नता आदि अर्थ के संबंधों के आधार पर क्षेत्रों का विभाजन किया है।[15] मेरा वर्तमान कार्य भी इसी सिद्धान्त पर आधारित है, किंतु मैंने "अर्थ" पर आधारित विभाजन नहीं किया है, बल्कि "शब्द" पर आधारित। शब्दों का आधार भी कई प्रकार का हो सकता है। भारतीय भाषाओं में शब्द विज्ञान का कार्य बिल्कुल नहीं हुआ है। थोड़ा-बहुत कार्य सांख्यिकी के आधार पर हुआ है। वर्तमान कार्य का मुझे कोई पूर्व उदाहरण नहीं मिला है। अवश्य अंग्रेजी और स्पैनिश के पारिवारिक शब्दों (cognate words) पर एक कार्य हुआ है। अपने ज्ञान की सीमा के कारण मैंने वह कार्य नहीं देखा है। परिवार के निजी शब्द, समान शब्द, जिसमें उधार के शब्द भी आ जाते हैं, रिश्ता, रंग आदि एक क्षेत्र के शब्द (इस कार्य में मनोवैज्ञानिकों और नृतत्वविज्ञानियों की रुचि ही अधिक है), समान स्रोतीय-भिन्नार्थी शब्द आदि क्षेत्रों में कार्य का उद्भाव हो सकता है और इन सभी क्षेत्रों में अर्थ संबंधी विवेचन को पर्याप्त अवसर मिलता है। हिंदी और तमिल के समान शब्दों की संख्या भी बड़ी है और यहाँ साथ में ऐसे शब्दों की सूची दी जा रही है, जो किसी भी तरह अभी पूर्ण या अंतिम नहीं है। उसमें प्रस्तुत शब्दावली के अति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रिक्त दोनों भाषाओं में समान अर्थ रखने वाले शब्दों की सूची है, जैसे कारण, मरण, दान, कार्य चक्र, मन, बल, भय, राजा आदि। लेकिन इस सूची का तुलनात्मक विश्लेषण में अधिक महत्त्व नहीं होता। उन शब्दों की संख्या को देखते हुए एक सत्य पर प्रकाश पड़ता है कि अधिकतर शब्द भिन्न अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं और समान अर्थ वाले शब्द प्राय: वस्तुओं, सांस्कृतिक शब्दों तक ही सीमित होते हैं। भाषाओं की प्रकृति को देखते हुए इस तथ्य पर आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि एक ही भाषा में थोड़े समय में शब्दों का रूप, अर्थ आदि बदल जाते हैं। यदि यही निष्कर्ष और भाषाओं के संदर्भ में भी निकलें, तो सामान्य सिद्धान्त बनाने में सहायता होगी।

2.1.2—हिंदी तथा गुजराती, बंगला आदि भाषाओं के लिए पारिवारिक शब्दों की तुलना का कार्य भी अधिक अच्छा रहता। ये भाषाएँ एक स्रोत की हैं और इनकी पारिवारिक शब्दावली कभी एक रही होगी। उस शब्दावली में दोनों भाषाओं में परिवर्तन तथा परिवर्तन की दिशाएँ अयेध्य होंगी। गुजराती में बहुत से शब्द मिलते हैं, जो हिंदी से भिन्न अर्थ रखते हैं, जैसे आँचल (स्तन), झड़प (तेज़ी), माथा (सिर), मापना (नापना), कठिन (कड़ा), नकाम (बेकार, व्यर्थ), अभण (अ+भण-बोलना) (अशिक्षित), झीना (महीन), सिवाय (बिना), पोताना (अपना-केवल अन्य पुरुष में) आदि। ये शब्द भाषा के इतिहास को समझने में सहायक होंगे। तो, एक परिवार की दो भाषाओं में भी समान रूप भिन्नार्थी शब्दों का विश्लेषण हो सकता है। घूम-फिरकर ये सभी कार्य तुलनात्मक अर्थ विज्ञान के आयामों को छूते हैं, क्योंकि भाषाओं में शब्द होते हैं और शब्दों के विभिन्न अर्थ होते हैं।

2.2—मैंने इस कार्य में स्रोत पर ज़ोर दिया है। इसलिए इस सिलसिले में समान स्रोत निश्चित करने का एक अतिरिक्त कार्य हो गया है। किंतु उसके बिना तुलना करने का कोई आधार नहीं मिलता। इसी प्रकार पारिवारिक शब्दों के विश्लेषण में भी स्रोत निश्चित करना आवश्यक हो जाता है। तमिल और हिंदी के शब्दों में अर्थ की समानता के निम्न अन्य आधार मिलते हैं। (क) समान अर्थ रखने वाले शब्द, जैसे वेलै–काम, मरम्–पेड़ आदि। अर्थ की जटिलता और तरलता के कारण व्यापक स्तर पर इस तरह का कार्य संभव नहीं है। (ख) ध्वनि साम्य रखने वाले शब्द-पल् (दाँत-क्षण), तन् (अपना-शरीर) सिल् (ठीकरा-सिल) आदि। इसमें स्रोत का पाबंद नहीं है। लेकिन अन्य शब्द इसमें नहीं आ सकते, मुख्य रूप से हमारी सूची के कई शब्द, क्योंकि बहुधा वे भिन्न ध्वनि–रूप और हिज्जा रखते हैं। (ग) समान दृश्य-रूप के शब्द–इसमें स्रोत या ध्वनि का आधार नहीं होता। जैसे परम, उपरि, कनक आदि। इस सूची में भी हमारी सूची के बहुत से शब्द नहीं आयेंगे। इन अंतिम दो सूचियों की दो प्रमुख कमियाँ हैं—इनकी असमाविश्यता, जिससे सूची जल्दी ही चुक जायेगी और विश्लेषण-अयोग्यता। दोनों का आधार केवल बाह्य साम्य है, जिस कारण इनमें एक-विशेषता के शब्दों का समावेश नहीं होता। हमारी सूची में आशा-निराशा, बोधना-दुर्बोधना, अभ्यास-देहाभ्यास, पशु-मृग जैसे शब्दों के संबंधों का-सा सूक्ष्म विवेचन इन सूचियों में नहीं हो सकता, यद्यपि छोटी या आरंभिक कक्षाओं में पढ़ाने के उद्देश्य से ऐसी सूचियाँ भी बहुत उपयोगी हो सकती हैं। इस प्रकार स्रोत की पूर्व धारणा से हम अपना कार्य-क्षेत्र सीमित कर लेते हैं और उसी के अन्दर सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं।

2.3—समान स्रोतीय शब्द विश्लेष्य भाषाओं तथा अन्य किसी भाषा के हो सकते हैं। यहाँ अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली, अंग्रेज़ी आदि शब्द भी लिये गये हैं। विश्लेषणार्थ वे ही शब्द लिये गये हैं, जो स्वतंत्र हैं और कोशगत अर्थ रखते हैं। इस संदर्भ में शब्दिम (lexeme) की चर्चा उपयुक्त होगी। हॉकेट के अनुसार शब्दिम शब्द-जैसा रूप है। कोई भी 'शब्द', जो किसी संदर्भ (context) में अपने से बड़े 'शब्द' का निकटम घटक नहीं है, एक शब्दिम है। करना, करता, किया, करो, आदि 'कर' धातु से बने शब्द एक शब्दिम में आते हैं। एक शब्दिम का एक ही मूल अर्थ होता है। शब्दिम में एक धातु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के अन्य व्युत्पन्न (derivative) शब्द भी आते हैं, जो कोशगत अर्थ की दृष्टि से भिन्न हो जाते हैं, जैसे बुरा (वि)–बुराई (सं), डाँट (सं)–डाँटना, (क्रि) आदि। यहाँ, इस कार्य में तुलना की दृष्टि से शब्दिमों की ही प्रविष्टियाँ दी गयी हैं और तमिल भाषा में हिंदी धातु से बनने वाले देशी व्याकरणिक रूप भी, उनकी अर्थ-संबंधी विशेषता को जानने के लिए दिये गये हैं।

2.3.1. अस्वतंत्र पदों को यहाँ लिया नहीं गया है, यद्यपि उनके संबंध में विश्लेषण हुआ है। जैसे[मध्य] के संबंध में 'मध्यस्थता' आदि शब्दों को लिया गया है। किन्तु 'स्थ' के आधार पर बनने वाले शब्दों को लिया नहीं गया है। इन अस्वतंत्र पदों का विवेचन तुलनात्मक पद विज्ञान में प्रमुख हो सकता है और शब्द विज्ञान में वह उपयोगी नहीं होगा। इस दृष्टि से यह बात रोचक है कि उधार लिये हुए पद भी, स्वतंत्र रूप से, स्वतंत्र अर्थ में, देशी शब्दों के साथ मिलकर नये शब्दों का निर्माण करते हैं, [स्थ] तमिल के 'उटैमै' (भाव०-रखना) के साथ 'वाला' के अर्थ में 'उटमस्तन'[16] (मालिक) का अर्थ देता है।[17]

2.4––स्रोत निश्चित करने में निम्नलिखित चार आधार काम आये हैं।

2.4.1––पहला आधार ध्वनि का है। जहाँ किन्हीं शब्दों में विदेशी ध्वनियों या विदेशी भाषा की ध्वनि-पद्धति का पुट दिखायी पड़े, वहाँ शब्द के विदेशी होने की संभावना अधिक रहती है। /ष/ तथा उसके गुच्छ तमिल में उधार की ध्वनियाँ हैं। जैसे, शब्दारंभ में /ग ब ज द/ शब्द में/, ब्द, द्व, द्द ब्ब, स + व्यंजन आदि गुच्छ /, पुरानी ध्वनियों के लिए नये विकसित वर्ण (या ध्वनि-रूप) जैसे /ट्च/ (क्ष), /क्ञ/ (ज्ञ) आदि नये प्रयोग और अनियमितताएँ शब्द के स्रोत का अनुमान देते हैं। यहाँ द्रष्टव्य है कि बहुधा शब्द का हिज्जा इस अनियमितता को नहीं दिखाता बल्कि बोलने वालों का भाषायी व्यवहार कई वर्षों से इसे परम्परा के रूप में अपनाता चला आ रहा है। तमिल भाषी मूल, उधार लिये उच्चारण के अनुसार 'डब्बा' कहता है, जब कि उसकी लिपि-पद्धति और ध्वनि-पद्धति के अनुसार वह 'टप्पा' ही है। भाषा की ध्वनि-प्रकृति के अनुसार किसी विदेशी ध्वनि या गुच्छ का किसी स्थान पर न आना भी, निषेधात्मक रूप से उसके विदेशी होने का प्रमाण देता है। तमिल में शब्दारंभ में/र, ल/का प्रयोग नहीं होता था, तो शब्दों में पूर्व-स्वरागम होता था। ऐसे शब्द हैं, उलोकम्, उरोमम्, इलक्कियम् आदि। शब्दारंभ में /प्र/ के न आने से स्वर-भक्ति के कारण /पिर/ का रूप मिलता है। इन निषेधों से शब्द को पहचान सकते हैं। प्रायः स्वर-भक्ति को हटाकर गुच्छ पहचान लें, तो शब्द पहचान में आ जाता है। जैसे 'किरुत्तिरिमम्' का रूप 'कृत्रिम' समझ में आ जाता है। इस प्रकार के शब्दों में वैषम्य की नियमितता (regularity of correspondence) का होना हमें विश्लेषण में सहायता देता है। /ह/ के शब्दारंभ में न आने के कारण अत्तु (हद), आरम् (हार), एट्टु (हेड) आदि स्वरारंभ शब्दों को समान रूप से पहचाना जा सकता है। कई संस्कृत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में /आ/ तमिल में/ ऐ / हो जाता है। यह परिवर्तन बाद में हिंदी शब्दों में भी होने लगा। इस नियमित परिवर्तन से इन शब्दों के मूल रूप को पहचाना जा सकता है, जैसे रवा (रवा), चालै (शाला), मुकरै (मुखड़ा), मुत्तिरै (मुद्रा), कारै (गारा) आदि। इस आधार का मुख्य दोष यह है कि भाषा विदेशी शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुसार बदलती है। इस कारण प्रायः विदेशी और देशी शब्द अलग-अलग नहीं दिखायी देते। मैंने कंटा (उ० कंडा) (घंटा) जैसे शब्दों में बहुत कोशिश करके साम्य को पाया है, जिसे दूर की कौड़ी लाना भी कहा जा सकता है। क्योंकि क, ट दोनों स्थानों में क्रमशः 7 और 4 के योग से 28 शब्दों[18] (या कम से कम 16) में से स्रोत का निर्णय करना पड़ेगा। वैसे 'कंडा' का उच्चारण पूर्णतः देशी है।

2.4.2––निषेध आदि पदग्रामीय प्रक्रियाएँ [अ-अन्- निर्-] आदि के योग तमिल भाषा में उधार के हैं। इसी प्रकार [-स्थ, दुर्-, -ज्ञ, सं-,प्र-, परि-, अव-] आदि पद इनसे बने शब्दों के विदेशी होने का अनुमान देते हैं। जैसे दिन से 'तिनचरि' के 'चर्या' पद को जानने में मदद मिलती है। तमिल में 'प्रांत' नहीं है, लेकिन [ईय] के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कारण 'प्रांतीय' समझ में आ जाता है। [स्थ] से 'योग्यस्थ' (ईमानदार व्यक्ति), 'कार्यस्थ' (सचिव) आदि शब्द पहचाने जाते हैं, यद्यपि ये शब्द हिंदी में नहीं हैं। [वन्त] रूप तमिल में अपना निर्दिष्ट अर्थ नहीं देता। फिर भी 'बलवंत' (जबर्दस्ती से), 'बलवान' के सादृश्य तथा पदों के उच्चारण और क्रम के आधार पर पहचाना जा सकता है।

इस आधार का मुख्य दोष यह है कि आवर्तक (recurrent) पदों की संख्या बहुत कम है। सभी शब्दों को इसके आधार पर पहचाना नहीं जा सकता। उधार के पदों से 'भूसंधि' आदि नये शब्दों के निर्माण तथा देशी शब्दों के साथ योग आदि प्रक्रियाओं से भी कठिनाई होती है। विश्लेषणकर्ता को इन दोनों स्थितियों के लिए तैयार होना चाहिए।

2.4.3—**अर्थ** : यह सूची भिन्नार्थी शब्दों की है, तथापि अर्थ का विवरण स्रोत-निर्धारण में सहायता देता है। 'ममता' दोनों भाषाओं में 'मम' की भावना पर आधारित अर्थ रखता है, यद्यपि दोनों में अर्थ भिन्न है। अर्थ संकोच, अर्थ विस्तार, अर्थादेश आदि पुराने सिद्धान्तों का यहाँ उपयोग हो सकता है। तमिल में 'संबंधी' दाम्पत्य के संबंध को भी प्रकट करता है; 'जगह' निवास स्थान के अर्थ में आता है; 'लोह' समस्त धातुओं का बोध कराता है, 'बटवारा' किसी भी बाँटने, देने के कार्य को सूचित करता है; 'निर्वाण', व्यंग्यात्मक रूप से जैनों-बौद्धों के उस बाह्य रूप का वर्णन करता है, जिसमें जैन-बौद्ध भिक्षु शायद दीखते थे (द्र. पाखंडी); 'कूजा' आकार में भिन्न दूसरी, किंतु समानधर्म वस्तु का प्रत्यय उत्पन्न करता है। इस प्रकार अर्थ का विवरण शब्दों के संबंध को प्रकट कर देते हैं। 'विकास, तीव्र, परवाह, समाधान, गुण' आदि शब्द दोनों भाषाओं में मिलते-जुलते अर्थ-क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस कारण इन्हें पहचानना कठिन नहीं है।

पूरी सूची को एक नज़र देख जाने पर मालूम होगा कि सूची में बहुत कम शब्द ऐसे हैं, जो दोनों भाषाओं में पूर्ण रूप से भिन्न अर्थ क्षेत्र रखते हैं। यहाँ तक कि 'खिलाड़ी'[19] का बदमाश होना भी समानता रखता है। हिंदी के मुहावरे 'खेल खेलना' से हम लोग परिचित ही हैं। 'शासन' का वर्तमान अर्थ शिला लेखों के संदर्भ में विकसित हुआ। शासन की बातें, राज्यादेश शिला पर खुदते थे और फिर वही शिला 'शासन' हो गयी। मुख्य गायन-कार्यक्रम के बीच में छोटे गीत या पत्रिका के कलेवर में चुटकुले आदि टुकड़ों की तरह चिपके हुए होते हैं। इससे इन्हें 'तुक्कटा' नाम मिला है। वैसे अर्थ के संबंध का यह बात निष्कर्ष नहीं, अनुमान मात्र है। इस प्रकार के शोध कार्यों में निष्कर्ष तक पहुँचने में अनुमान साधन के रूप में बहुत मदद करता है। केवल उसके आधार पर कोई सिद्धान्त नहीं बनाना चाहिए।

उपर्युक्त तीनों आधार परस्पर संबद्ध हैं। ध्वनि-रूप-अर्थ के संबंध में कई शब्दों को पहचाना जा सकता है। 'पिरकिरुति' में ।प्र। का ।पिर।, [प्र] का उपयोग तथा दोनों शब्दों में स्वभाव का अर्थ हमें एक स्रोत का विवरण देते हैं।

2.4.4—जहाँ एक शब्द का अर्थ हमारी पूरी सहायता नहीं कर पाता, वहाँ एक अर्थ क्षेत्र से संबंधित शब्दों के वितरण से भी अनुमान लग सकता है। 'पशु' और 'मृग' शब्दों के वितरण से (दे० 3.9,1) हम इन शब्दों के रूप को समझ सकते हैं। 'नागरिक' शब्द नगर से, नगर के निवासियों से संबंध रखता है और सभ्यता (culture) से दूर का ही संबंध रखता है। इन शब्दों के अर्थ-साम्य तथा स्रोत को हम दोनों भाषाओं में एक ही प्रयोग से जान पाते हैं—**सिंधु घाटी की सभ्यता सिंधु-घाटी का 'नाकरिकम्'** इस समान प्रयोग के कारण 'नागरिक' का, सभ्यता से संबंध होने का अनुमान मिलता है और इस शब्द का दूसरा अर्थ 'फैशन' नगर के साथ सभ्यता के संबंध को प्रकट करता है। हिंदी में भी 'व्यवहार की सभ्यता' का उल्लेख होता है। इस प्रकार अनुमान से एक और शब्द पहचान लिया जाता है। इसी तरह **'अपात्र'** की तुलना में **'अभांड'** की रचना स्पष्ट होती है। (दे० प्रविष्टि 58)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2.4.5—उपर्युक्त आधारों की पुष्टि में बाह्य साक्ष्य योग देते हैं। कई शब्दों के बारे में हमें मालूम है कि उनका प्रयोग किस अवसर पर, किस अर्थ में बाहर से लिया गया। 'मोटर, टिकट, फैन' आदि शब्दों के स्रोत के बारे में हमें कोई संदेह नहीं है, क्योंकि ये प्रत्यय आधुनिक हैं और उनके साथ ही शब्द चले आये हैं। वकील और वकालत आदि शब्द इन विचारों के साथ ही आये हैं। इनमें दोनों भाषाओं में वकील समान अर्थ में चलता है। इसके आधार पर दूसरा व्युत्पन्न शब्द वकालत स्पष्ट हो जाता है।

2.4.5.1—शब्दों की व्युत्पत्ति के बारे में 'शासन' के संबंध में देख चुके हैं (दे० 2.4.3)। भाषा के ऐतिहासिक अध्ययन से शब्दों के अर्थ परिवर्तन का क्रम समझ में आ सकता है। जब कोई भाषा दूसरी भाषाओं से शब्द उधार लेती है, तो उसके अर्थ-क्षेत्र के साथ नहीं, बल्कि किसी विशेष अर्थ में। फिर स्वतंत्र रूप से अपने अर्थ-क्षेत्र का विकास करती है। भाषा के इतिहास से उधार शब्द के मल अर्थ तथा उसमें अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ स्पष्ट हो सकती हैं। इस प्रकार इतिहास के प्रमाण से शब्द के स्रोत का पता लग सकता है।

2.4.5.2—व्युत्पत्ति के संबंध में हमें सावधान रहने की जरूरत है। क्योंकि उधार के रूपों में ध्वनि-परिवर्तन, विभिन्न कालों में उधार आदि बातों से शब्दों की ठीक रूप से तुलना न करें, तो निष्कर्ष में दोष आ सकता है। 'विभूति' शब्द ही 'भभूत' बना। इस कारण 'भभूत' और 'विपूति' तुलनीय हैं। 'पक्ष' के दो तमिल रूप मिलते हैं 'पक्कम्' और 'पट्चम्', जिनमें पट्चम् बाद का है। दोनों की हिंदी 'पक्ष' से ही तुलना होगी। तमिल में 'पाख' के अभाव में 'पक्कम्' का स्रोत (या समान रूप) 'पाख' नहीं होगा,[20] न हिंदी 'पाख' के अनुसार तमिल में 'पाकम्' रूप ही मिलता है। 'क्षीर' शब्द तमिल में लिया गया होता, तो उसका रूप 'क्षीर' या 'शीर' होता, क्योंकि और कहीं /क्ष/ का /क/ रूप नहीं मिलता। इसलिए 'कीर' रूप का संबंध 'खीर' से ही है। इस कारण ये दोनों ही तुलनीय हैं। तमिल का 'चित्तम्' शब्द 'चित्त' और 'सिद्ध' दोनों से संबंध रखता है। उसकी दोनों से अलग-अलग तुलना होगी। इन बातों को पहले से देख लेना आवश्यक होगा।

2.4.5.3—'wit' और 'वेद' शब्दों में भ्रामक व्युत्पत्ति का दोष हो सकता है। तमिल में 'विट्टु' का अर्थ चुटकुला है, जो अंग्रेजी 'wit' से निकला है। यह शब्द धात्वर्थ में संस्कृत 'वेद' (ज्ञान) से संबंधित है। फिर भी विट्टु और वेद दोनों की तुलना नहीं कर सकते, क्योंकि हम ऐतिहासिक रूप से जानते हैं कि दोनों का स्रोत भिन्न-भिन्न है।

2.4.5.4—दोनों भाषाओं की शब्दावली में ही हमें बाह्य-साक्ष्य मिलता है। हिंदी में रंग के अर्थ में 'वर्ण' नहीं है (दे० प्रविष्टि 725)। लेकिन 'विवर्ण' समानता का इशारा करता है। 'वैदिक' और 'लौकिक' दोनों शब्दों के प्रयोग की विशेषताएँ (वेद संबंधी तथा लोक व्यवहार संबंधी) हमें मूल अर्थ का संकेत देती हैं। हिंदी 'लक्षण ग्रंथ', 'लक्ष्य ग्रंथ' आदि प्रयोगों के आधार पर 'लक्षण' तथा तमिल 'लक्ष्य' के स्रोत का पता चल पाता है।

2.4.4.5—दूसरे प्रकार का बाह्य साक्ष्य अन्य भाषाओं में मिलता है। उन भाषाओं में शब्द के उच्चारण, लिपि, अर्थ आदि विशेषताओं के निकट साम्य से स्रोत निश्चित करना आसान होता है। इनमें दोनों भाषाओं के बीच की कड़ी भी मिल जाती है। इस प्रकार के साक्ष्यों का उल्लेख शब्दों के सामने किया जाता है। इस प्रकार के साक्ष्य के अभाव में 'संज्ञा' 'असह्य' (दे. प्रविष्टियाँ 280, 20) की तुलना संभव न होती और 'तुक्कटा' की तुलना का संदेह रहित आधार नहीं मिलता।

2.4.6—जहाँ कोई आधार समझने में नहीं आता और स्रोत की समानता की पुष्टि नहीं होती, वहाँ केवल अनुमान के आधार पर तुलना की गयी है। 'पुकार, अति, चलनम्, अतप्पु, चालरम्, पिरचुरम्' आदि शब्द इस कोटि में आते हैं और इन संदिग्ध शब्दों को प्रश्न चिह्न के साथ दिया गया है। हो सकता है बाद में पुष्टि में कहीं से कोई प्रमाण मिल सके।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2.4.6.1––जहाँ अन्य आधारों के अभाव में अर्थ की अधिक भिन्नता आ जाती है, वहाँ अनुमान भी काम नहीं देता। इस कारण संभव है कि तमिल के ऐसे बहुत से शब्द हमेशा के लिए खो गये हों और कुछ को फिर से ढूँढ़ निकालने के लिए कहीं से कोई साक्ष्य मिल सकते हों। उदाहरण के लिए अंतस्तु (गौरव), काणिक्कै (निवेदन), आत्तिरम् (चिढ़, गुस्सा), मायम् (जादू), किलम (टूट-फूट), आस्ति (संपत्ति), चवरट्चणै (शऊर, शान), आदि शब्दों के स्रोत का पता नहीं चला है, यद्यपि ध्वनि तथा पदों की अद्रविड़ प्रकृति के कारण ये शब्द उधार के दिखायी पड़ते हैं। आवश्यकता इन शब्दों को ढूँढ़ निकालने की है, क्योंकि इन्हीं में अर्थ-भेद के नये स्वरूप देखने को मिलेंगे। अन्य द्रविड़ भाषाओं के संदर्भ में भी ऐतिहासिक अध्ययन किया जाये, तो संभव है, इनमें कुछ शब्द स्पष्ट हो सकेंगे।

3.0 अर्थ की तुलना

3.1––यहाँ दोनों भाषाओं के अर्थ विज्ञान का तुलनात्मक स्वरूप, जो इस सूची से निकला है, प्रस्तुत करने का यत्न करूँगा। इस कार्य की आवश्यकता या उद्देश्य के प्रति अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ-साथ इसका व्यावहारिक उपयोग भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। भाषा बोलने वाला अपने दिमाग़ में शब्द और उसके संबंध में अर्थ का तथा अर्थ की संरचना का स्वरूप बिठा चुका होता है। इस स्थिति में दूसरी भाषा सीखते समय इससे भिन्न कोई स्वरूप उसे कठिनाई में डाल देता है। भाषा सीखने वाले को सबसे अधिक कठिनाई अर्थ के सूक्ष्म भेदों के कारण होता है। सामान्य रूप से मोटे भेद, जैसे अवसरम्-जल्दी उसे शीघ्र मालूम हो जाते हैं। लेकिन अनाधिकार (चेष्टा) जैसे प्रयोगों में उसे बहुत दिन तक कठिनाई होती है। मेरा अनुभव है कि एक शब्द और उसका अर्थ सीखने की अपेक्षा उस शब्द के विभिन्न रूप सीखना अधिक कठिन होता है। संस्थान के कई छात्राध्यापकों को साल के अंत तक 'लाग' (∠ √ लग), 'जँचना' (जाँच) आदि शब्दों का प्रयोग तथा 'निंदात्मक' और 'निंदास्पद' का भेद नहीं मालूम था। मुहावरों और रूढ़ प्रयोगों में भी अधिक कठिनाई होती है। उन्हें कर डालना, कर देना, मन करना, मन मारना आदि प्रयोगों के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं थी। इस प्रकार कुछ कठिनाइयों की ओर यहाँ इशारा हो सकता है।

3.2––शब्द-प्रयोग की प्रमुख और प्रथम कठिनाई उन शब्दों की है, जो भिन्न अर्थ रखते हैं। जैसे तमिल में शब्द 'पशु' (गाय), 'मृग' (जानवर), 'अवसरम्' (जल्दी), 'अपेक्षा' (प्रार्थना) आदि। इस प्रकार की सूची प्राथमिक ही होगी, क्योंकि कोई शब्द केवल एक ही अर्थ रखता हो, ऐसा नहीं होता। हर शब्द दूसरी भाषाओं से भिन्न कई अर्थ रखता है। भाषा के प्रयोग के आधार पर उसके प्रयोग में हमेशा अंतर दिखायी पड़ेगा। जैसे 'गाय' कहते ही हमारे मन में कई अर्थ उभरते हैं।

3.3––गाय––1––वह जानवर (जिसे हम देखते हैं, जिसे अभी नाम नहीं दिया गया है।)
2––'लछमी', गोपाल की गाय (एक निश्चित जानवर)
3––'मुझे गाय लेनी है' (उस वर्ग का कोई एक सदस्य)
4––'गाय दूध देती है' (पूरा वर्ग, जो भैंस, बैल आदि अन्य वर्गों से भिन्न है)
5––'गाय पालते थे' (गाय, बछड़े, बैल आदि भी)
6––गाय–बैल (समस्त प्राणी वर्ग, जिसके ये दोनों प्रतिनिधि हैं)
7––'उनके पास गायें, घर, खेत थे' (संपत्ति)
8––'वह तो गऊ है', 'निरा बैल है' (स्वभाव का प्रतीक)

ये सभी अर्थ प्रत्ययात्मक, सांस्कृतिक तथा भाषायी होते हैं। यहाँ पहला अर्थ भाषाओं में न हो, तो तुलना का कोई सवाल ही नहीं है। वस्तु का अभाव शब्द का अभाव बताता है। शेष तीन अर्थ प्रत्ययात्मक हैं, जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाषा-मात्र के लिए सामान्य हैं। लेकिन इनकी भी भाषा के प्रयोग में विशिष्टता है। (दे०3.4) हिंदी में गायों के प्रचलित नाम धौरी, श्यामा आदि हैं, जो तमिल में नहीं हैं। अन्य अर्थ व्यवहार पर आधारित हैं, जो संदर्भों में प्रकट होते हैं। एक दूसरा शब्द 'रोटी' लिया जा सकता है। 'वह रोटी फेंक दो', 'आपने रोटी खा ली ?' 'मेरी रोटी कैसे चले ?', 'मैं रोटी खाता हूँ' (भात या खिचड़ी नहीं), 'गेहूँ की रोटी' (जो जौ, मक्के की रोटी से भिन्न है), 'बेटी-रोटी का संबंध', 'रोटी कमाना' आदि कई अर्थों में यह प्रयुक्त है। तमिल भाषी रोटी के अपने जीवन में विरल प्रयोग के कारण 'रोटी' के इन सभी अर्थों से अनभिज्ञ होगा, यद्यपि ये विचार वह 'भात' शब्द से बना लेता हो, (लगभग ये सभी अर्थ किसी न किसी रूप में भात से बन जाते हैं)। तमिल 'रोटी' और हिंदी 'रोटी' की तुलना करते समय ये भेद सामने आने चाहिए। 'गाय', 'रोटी' से संबंधित विचारों को तो इस कार्य में सूक्ष्म रूप से देखा नहीं जा सकता। परन्तु मोटे-मोटे अर्थों को, जो दोनों भाषाओं में संदर्भों में प्रकट होते हैं, हम स्पष्ट कर सकते हैं।

3.4––भाषा का हर शब्द अपना विशेष अर्थ-क्षेत्र रखता है। केवल कुछ ध्वन्यात्मक शब्दों को छोड़कर, जिनकी व्युत्पत्ति निश्चित नहीं होती, अन्य शब्दों के अर्थ का विश्लेषण हो सकता है। सामान्य तमिल भाषी के लिए ठाकुर, गांधी राष्ट्रीय जीवन के विशेष व्यक्तियों के नाम हैं। कुछ प्रदेशों में ये विशेष जातियों के लिए सामान्य शब्द हैं। गुजरात में गांधी (पंसारी) ऐसे वर्ग के लिए भी आता है, जो व्यापारी है। हिंदी में 'ठाकुर' उस वर्ग के गुणों का प्रतिनिधि भी है। 'अरे, वह है पूरा ठाकुर।' इन प्रयोगों में हम अंतर देख सकते हैं। तमिल में 'बृहस्पति' व्यंग्यात्मक रूप से बेवकूफ़ के लिए आता है। हिंदी में 'पाखंडी', 'पोंगा' आदि द्रष्टव्य हैं। 'हरिश्चन्द्र' व्यंग्य में झूठ बोलने वाले के लिए आता है। घटोत्कच, भीम आदि झिड़कने के लिए आते हैं। हिंदी में ख़ुदा और भगवान के प्रयोग में अंतर किया जाता है, जब कि भगवान एक ही हैं। (द्र०खुदा ∠ स्वधा)। इसी प्रकार 'शनि' आदि शब्द समान धर्म (contingency) के कारण कुछ विशेष गुणों के लिए आते हैं। 'पीड़ा' शब्द पीड़ा देने वाले किन्हीं कारणों का प्रतिनिधि हैं, इसलिए इन दोनों शब्दों का, मुसीबत व्यक्त करने या झिड़कने के लिए प्रयोग होता है। सूची में ऐसे कुछ प्रयोग भी दिखाये गये हैं। जानवरों के नाम विशेष गुणों के प्रतिनिधि हैं। हिंदी में जिस अर्थ में (घृणा के साथ) 'सुअर' प्रयुक्त होता है, उस अर्थ में तमिल में 'कुत्ता' का प्रयोग होता है। तमिल में 'पिशाच, प्रेत, कुत्ता, सुअर, बैल, बन्दर, गधा' झिड़कने के शब्द हैं तथा 'आँख, सोना, मणि, तोता, बछड़ा, पिल्ला' आदि बच्चों के लिए प्यार के संबोधन के शब्द हैं।

कुछ शब्दों में अर्थ का परस्पर संबंध भाषाओं में भिन्न-भिन्न हो सकता है। पास और दूर का विलोम तो स्पष्ट है, लेकिन किन्हीं संदर्भों में यहाँ व्यतिरेक का लोप हो जाता है। कुछ उदाहरण देखें :

मेरा घर पास है, लेकिन उसका दूर।

वाह, घर कितना पास है ! ओफ़, घर से स्टेशन कितनी दूर है !

3909

आपका घर पास है ? नहीं, दूर है।

आपका घर दूर है ? नहीं, पास ही है।

आपका घर कितनी दूर है ? पास ही में है, दूसरा ही घर है 1 मील दूर है, 200 मील दूर है।

अंतिम प्रश्न में पास-दूर का व्यतिरेक नहीं है। लेकिन ऐसे प्रयोगों को शब्दावली में नहीं, समग्र भाषा के प्रयोगों में ही देख सकते हैं।

3.5—शब्दों को उधार लेने वाली भाषा किसी विशेष अर्थ में उसे ग्रहण करती है। कभी केवल एक अर्थ को लेती है, कभी किसी सामान्य अर्थ को। जैसे तमिल 'पुष्टि' पुष्ट होने के भाव को प्रकट करता है, पुष्टि करने को नहीं। कई शब्द मूल अर्थ से भिन्न अर्थ को ही ग्रहण करते हैं। जैसे 'नियति, जमा, जाग्रत',

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदि। तमिल में 'आशा' के अर्थ को प्रकट करने के लिए पहले से 'नंपिक्कै' शब्द है। इस कारण 'आशा' इच्छा के लिए प्रयुक्त होने लगा। प्रायः भाषाओं के शब्द पुराने अर्थों को छोड़कर नये अर्थ ग्रहण कर लेते हैं और पुराने अर्थ कहीं किसी यौगिक शब्द रूप में ही दिखायी पड़ते हैं। 'समाज' के लिए हिंदी का 'society' का अर्थ नया है। उसके पास कीर्तन समाज, आर्य समाज आदि पुराने अर्थ वाले कुछ शब्द अवशेष रूप में हैं। तमिल ने इस नये अर्थ को 'समूह' शब्द को दिया है और वर्तमान हिंदी 'समूह' का अर्थ कुछ-कुछ तमिल में 'समाज' से व्यक्त होता है। इस प्रकार की व्यवस्था कई शब्दों में दिखायी पड़ती है।

3.6.1—भाषाओं में अपनी आवश्यकता के अनुसार पुराने पदों से नये शब्द विकसित करने की शक्ति भी होती है। तमिल भाषा में 'कला शाला' सुनने वाला उसके अर्थ तक नहीं पहुँच पायेगा, यद्यपि कला और शाला दोनों ही हिंदी में हैं। तमिल भाषा जुकाम के लिए 'जलदोष' का प्रयोग कर सकता है और यह शब्द उसे उतना ही हिंदी का लगता है, जितना 'काव्य दोष' या 'जल प्रपात'। लेकिन हिंदी भाषी इस अर्थ को पहचान नहीं पायेगा। इसी प्रकार अभांड, योग्यतांश (प्र. 618) सवाल-जवाब (प्र. 296) आदि शब्द नये अर्थ में बने हैं।

3.6.2—नयी पारिभाषिक शब्दावली में दोनों भाषाओं में अंतर होना स्वाभाविक है, क्योंकि यह दोनों भाषाओं में प्रायः स्वतंत्र विकास है। इसमें पुराने शब्दों को नया अर्थ दिया जाता है, जैसे तमिल समूह (society) निरूपण (demonstration). पारंपर्य (आनुवंशिकता) आदि और कई नये रूप विकसित कर लिये जाते हैं, जैसे योग्यतांश (अर्हता), भूसंधि (भूडमरू मध्य), नगर विस्तरिप्पु (city development) गुणातिशय (characteristics) आदि।

3.7—तमिल ने अवसर के अर्थ में 'संदर्भ' को लिया है, तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि तमिल में 'अवसर' का अर्थ भिन्न होगा। यही क्रम मर्यादा-आदर, श्रद्धा-ध्यान, दर्शन-तत्त्व, लोह-धातु, प्रेम-अभिमान, रोम-कंबल, निज-सत्य आदि कई शब्दों में देखने को मिलता है।

इस व्यवस्था का मुख्य कारण है, शब्दों का व्यतिरेकी इकाई के रूप में कार्य करने का गुण। हर शब्द दूसरे से कुछ भिन्न अर्थ में आता है। इसलिए इनमें अर्थ का यह वितरण होता है। व्यतिरेक का अर्थ विलोम नहीं है, बल्कि प्रकार्य की भिन्नता ही है। (दे० 1.8.2)। इसलिए किन्हीं दो शब्दों में बहुत सूक्ष्म अंतर मात्र दिखायी पड़ता है, जिसे केवल प्रयोगों में ही स्पष्ट कर सकते हैं। जैसे 'विकास' और 'विस्तार' दोनों सामान्य-रूप से हिंदी का जैसा ही अर्थ रखते हैं। लेकिन 'विकास' केवल फूलों के संदर्भ में, बढ़ने के अर्थ में आता है, शहर के विकास के संदर्भ में 'विस्तार' आता है और मनुष्य के विकास (evolution) के संदर्भ में 'परिणाम'। तमिल 'विश्वास' और हिंदी 'विश्वास' में मौलिक रूप से अर्थ-भेद है। तमिल में विश्वास 'belief' के लिए नहीं आता। तमिल का प्राथमिक अर्थ कृतज्ञता का है। लेकिन अकृतज्ञ होना भी एक प्रकार का विश्वासघात ही है। इस कारण **विचुवाचम् इल्लात** ('विश्वास' रहित) तथा विश्वासघात ये दोनों अर्थ यहाँ आकर एक केन्द्र में मिल जाते हैं और पाठक के मन में समान अर्थ क्षेत्र का भ्रम उत्पन्न करते हैं। ये अंतर विलोम या पर्याय के परिप्रेक्ष्य में बहुत कम स्पष्ट हो पायेंगे और व्यतिरेक का सिद्धान्त ही इन्हें स्पष्ट बता पायेगा।+

+—इस संदर्भ में ही अर्थ संकोच, अर्थ विस्तार आदि अर्थ-प्रक्रियाएँ लागू हो सकती हैं। लेकिन 'संकोचन' या 'विस्तार' शब्दों से प्रक्रिया का बोध होता है, जब कि उधार में ये प्रक्रियाएँ नहीं होतीं। संकोच या विस्तार का भाव अर्थ वितरण में संयोग मात्र है। वितरण की प्रक्रिया का ही यहाँ विस्तार में विवेचन किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3.8—यदि अर्थ की हम कोई 'अर्थिम' इकाई दे पाते, तो शायद दिखा पाते कि किस प्रकार 'समर्थिम' के लिए भिन्न-भिन्न शब्द गढ़ लिये जाते हैं और कैसे दो भाषाओं में यह प्रक्रिया समान रूप से चलती है। यदि कोई अर्थ हमारे पास है, तो हम आवश्यकतानुसार उसका विलोम बना लेते हैं। उधार लिये शब्दों में व्युत्पन्न अर्थों के लिए स्वतंत्र रूप से समान शब्द-रचना होती है। जैसे तमिल में 'आदर' का अर्थ है सहारा। इसलिए बेसहारा, असहाय के लिए 'अनादर' का प्रयोग होता है। उधार के शब्दों में निः–, दु–, अ–आदि रूपों से शब्द बनते हैं, जो मूल अर्थ का बोध कराते हैं। दे० आदर, बोधन, गति आदि। लेकिन यह बात उन शब्दों पर नहीं लागू होती, जो व्युत्पन्न रूप में ही उधार लिये जाते हैं। तमिल में 'बंध, आशा, धर्म' तीनों से भिन्न अर्थ में 'निर्बंध, निराशा, अधर्म' का प्रयोग होता है। संभव है ये तीनों विलोम ही स्वतंत्र रूप से उधार लिये गये हैं। इसी तरह तमिल में 'आतुर' का अर्थ 'कामातुर' में व्यक्त नहीं होता।

शब्दों की काफ़ी व्यापक अर्थ में प्रयोग की आवश्यकता होती है। प्रेम की भावना दो व्यक्तियों से हटकर मनुष्य मात्र तथा अपनी हर वस्तु से प्रेम के रूप में प्रकट होता है, जिसे, मनुष्य प्रेम, प्रकृति प्रेम, देश प्रेम आदि शब्दों में व्यक्त करते हैं। तमिल में प्रेम के संदर्भ में 'अभिमान' का प्रयोग होता है और ये सारे शब्द अभिमान से बनते हैं। (प्रविष्टि 62)। इसी तरह अवसरवादी के लिए 'संदर्भवादी', धर्म मानने वाले के लिए 'मतानुतापि', जादूगर के लिए 'विद्याकार' आदि शब्दों की रचना बहुत रोचक है।

3.9—अनुभवों की समानता के कारण दो भाषाओं में शब्द के अर्थ का विस्तार लगभग समान दिशाओं में होता है। इसका कारण यह है कि उस शब्द के माध्यम से दोनों भाषा-भाषी एक ही प्रकार के अनुभवों और विचारों को प्रकट करते हैं। 'समाधान' शब्द के चार विशिष्ट अर्थ हैं। सांत्वना देना, झगड़ा निपटाना, तीव्र आवेश की स्थिति में शांत करना, समझौता कराना। ये चारों शांति के क्षेत्र से संबंध रखते हैं। इन चारों को दोनों भाषाएँ समान रूप से लेती हैं। लेकिन तमिल का 'रोते बच्चे को चुप करना' या हिंदी का 'शंका निवारण' समान नहीं हैं।

3.9.1—हिंदी का 'पशु' तमिल का 'मृग' है।+ पशु संबंधी सभी विचार तमिल में 'मृग' से प्रकट होते हैं। पशु बल-मृगबल, पाशविक-मृग (वि), पशुत्व-मृगत्तनम्, पशुराज-मृगराज, वह तो निरा पशु है–अवन् वेरुम् 'मृगम्'।

अब तमिल 'पशु' (गाय) के प्रयोगों को देखें।

गोवध-पशुवध, गोरक्षा-पशुसंरक्षा, गोमूत्र-पशुमूत्र। इसी प्रकार के अन्य प्रयोग गोमांस, गो चारण, गो माता, गो पूजा, गो वैद्य, आदि भी 'पशु' रूप से बनते हैं। तमिल भाषा-भाषी आवश्यकतानुसार 'मृग' या 'पशु' से शब्द बना ले सकता है। सांस्कृतिक एकता के कारण ये शब्द इन भाषाओं में समान ही होंगे। इस प्रकार के शब्द विस्तार के अन्य उदाहरण हैं—आदर, तत्त्व, लक्ष्य, मंत्र, बोधन, आदि। अर्थ-भेद का कार्य इनमें केवल एक शब्द से होता है और अन्य संबद्ध रूपों में भी फैलता जाता है।

3.10—जहाँ भिन्न अर्थ वाले शब्दों को अपने अन्य रूपों की रचना की आवश्यकता होती है, वहाँ दूसरी भाषा में अर्थ भेद से उस विचार के अभाव के कारण वे रूप दिखायी नहीं पड़ते। 'आदर' के रूपों को लें।

तमिल—	आतरि	आतरकु	आतरिप्पु	आतरवालर्	निरातरि	निरातरवु	—	आदि
हिंदी—	आदर	—	—	—	—	निरादर	अनादर	आदृत आदि

तमिल के सभी शब्द हिंदी में नहीं हैं। यदि 'आदर' और 'सहायता' की 'आतरि' से तुलना करें, तो तमिल के रूपों के समान रूप हिंदी में मिल जायेंगे। जैसे आतरिप्पु (सहायता), आतरवालर् (सहायक) आदि।

+ ऐतिहासिक रूप से तमिल का अर्थ ही पुराना है। हिंदी ने अर्थ परिवर्तन किया, तो नये संदर्भों में प्रयोग भी गढ़ा। द्रष्टव्य : 496

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन उसी शब्द के स्तर पर अर्थ न होने से 'आदर' के सभी शब्द नहीं मिलते। कहीं-कहीं मिली-जुली व्यवस्था भी दिखायी पड़ती है, जहाँ पर्यायों के कारण रूपों में स्पष्ट विभाजन नहीं होता।

3.11—	वाचि	—	√पठ, √पढ़
	वाचकन्	—	पाठक
	पटित्तल्, वाचिप्पु,	—	वाचन
	पाट्म, वाचकम्	—	पाठ (lesson, text)
	पटिप्पकम्	—	वाचनालय

ऐसे स्वतंत्र-रचित शब्दों के उस शब्द के संदर्भ में दूसरी भाषा में अर्थ का अभाव दोनों भाषाओं में शिक्षण के लिए ऐसी सूची की आवश्यकता बताता है, जो भिन्न रूप-एक अर्थ वाले हैं। जैसे तमिल-असंदर्भ-वेमौके, अजाग्रत–असावधानी, असुख-अस्वस्थता, अदृष्टशाली-भाग्यवान, अश्रद्धा-लापरवाही तथा दुर्वासना-दुर्गंध आदि। हिंदी अभद्र-**आभास**, निश्चेष्ट–**अचैवट्ट**, असमर्थ-योग्यता रहित (इल्लात), अविश्वास-**अवनंपिक्कै**, तथा असाधु, असावधानी, अमान्य, अलौकिक आदि शब्द तमिल में नहीं हैं और वहाँ कोई अर्थ नहीं पायेंगे।

3.12—अर्थ-भिन्नता का यह पहलू कई शब्दों में स्पष्ट विभाजन रेखाओं में नहीं दिखायी पड़ता। हिंदी अधिकार के तीन अर्थ हैं—रोब, अधिकार करना, और हक़। इन तीनों का परस्पर संबंध इस प्रकार होगा।

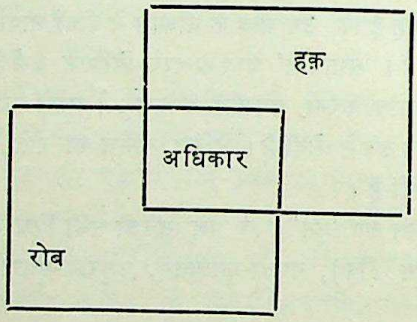

रोब में व्यक्ति अधिकार करता है। हक़ हो तो ही अधिकार हो सकता है। अधिकार के कारण रोब आ जाता है। हक़ से ही रोब की भावना बढ़ती है। इनका संबंध तमिल के 'अधिकार' शब्द से अधिक प्रकट नहीं होता, क्योंकि 'अतिकारम्' में हक़ का अर्थ स्पष्ट नहीं है।+ लेकिन तमिल भाषी जब कहता है, "अतिकारमाक वरु-किरान्" (अधिकार से आता है), । तो उसमें हक़ की भावना प्रकट होती है।

3.13—इस प्रकार की भिन्नताओं को सूक्ष्म रूप में देखने के लिए हम हिंदी और तमिल के 'हद' शब्दों को ले सकते हैं ? (यहाँ मैं लोभ से नहीं, बल्कि सुविधा के लिए वृक्ष-चित्र का उपयोग कर रहा हूँ। वैसे हम देख चुके हैं कि एक शब्द के संदर्भ में यह बहुत उपयोगी साधन है।)
दोनों शब्दों के विवरण से स्पष्ट होगा कि दोनों भाषाएँ शब्दों के अर्थ का समान क्षेत्र नहीं बनातीं। बिगड़ने के अर्थ में हिंदी दूसरे ही शब्द का प्रयोग करती है और तमिल में भौतिक सीमा 'एॅल्लै' से प्रकट होती है। इस तरह का कोई वाक्य तमिल में संभव नहीं है, जो 'अत्तु' का 'हद, सीमा' के अर्थ में प्रयोग करे, जैसे, हमारे देश की हदें लंबी हैं, 'फाके की हद तक'। शब्द के अर्थ के किस अंश पर बल दे, यह उस भाषा की प्रकृति, व्यवहार और आवश्यकता पर निर्भर होती है और किसी सामान्य सिद्धान्त से निश्चित नहीं होती।

+ घोषित रूप में तो नहीं ही है। 'मेरा इस पर अधिकार' आदि प्रयोगों में 'उरिमै' का प्रयोग होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

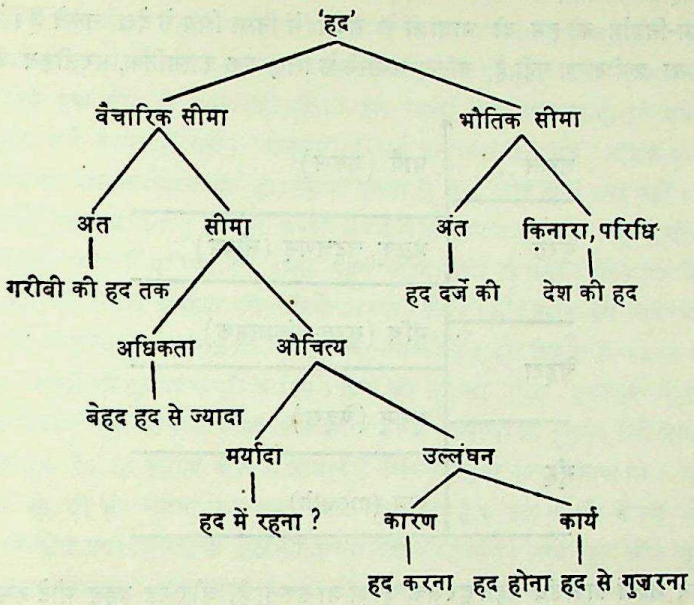

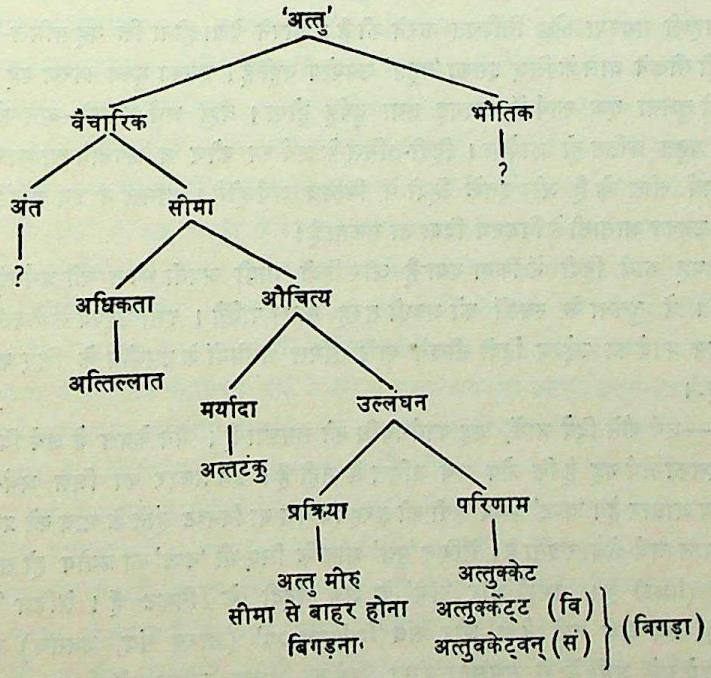

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3.14—भाषा में अर्थ और शब्दों का एक अंतहीन क्रम है, जिसमें दोनों का कहीं-कहीं संबंध बिठा दिया जाता है। यह सामंजस्य एक भाषा में भी बदलता जाता है, जैसे शब्द-अर्थ की दोनों पट्टियाँ बढ़ती-घटती जाती हैं। इस क्रम-निर्वाह को हम दो भाषाओं के संदर्भ में निम्न चित्र से देख सकते हैं। वैसे चित्र कोई वैज्ञानिक मापन या क्रमीकरण नहीं है, बल्कि समझने के लिए एक काल्पनिक, सरलीकृत दृश्य-विधान है।

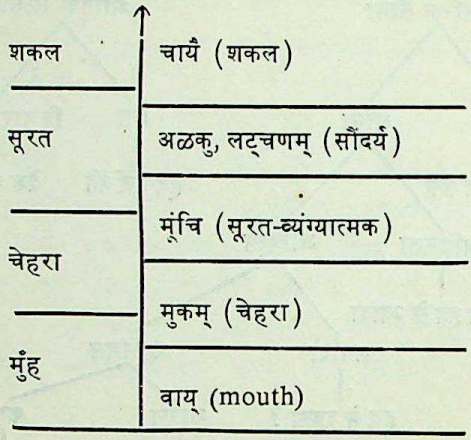

इस प्रकार शब्दों का संबंध बहुत दूर तक जोड़ा जा सकता है, और यह बहुत मोटे रूप में दो भाषाओं के शब्दों के संबंध को प्रकट कर सकता है।

4—कार्य की समस्याएँ

4.1 पहली समस्या क्षेत्र निश्चित करने की है। आपने देखा होगा कि यह तमिल-हिंदी कोश जैसा है और हिंदी ही सीखने वाले के लिए इसका 'बहुत' उपयोग नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि एक साथ दो भाषाओं की तुलना एक कार्य में अनगढ़ तथा दुर्वह होगा। वहाँ अर्थ के ताने–बाने को अंकित करना और समझना बहुत कठिन हो जायेगा। हिंदी-तमिल के अर्थ का कोण न अपनाने का कारण यह है कि ये शब्द प्रायः आर्य स्रोत के हैं और इनके हिंदी में विविध अर्थ होंगे। तमिल में इन शब्दों के अर्थ के क्षेत्र सीमित हैं और उनका आसानी से विवरण दिया जा सकता है।

दूसरे, यह कार्य हिंदी में किया गया है और हिंदी भाषी अपनी भाषा की अर्थ-संरचना के स्वरूप से परिचित हैं। वे तुलना के स्थलों को अच्छी तरह समझ पायेंगे। इसी उद्देश्य से केवल तमिल के अर्थ दिये गये हैं। इस कार्य का उद्देश्य हिंदी सीखने वाले तमिल भाषियों के उपयोग के लिए शब्द-सूची तैयार करना नहीं है।

4.2—अर्थ कैसे दिये जायें, यह कार्य-विधि की समस्या है। मैंने केवल वे अर्थ दिये हैं, जो तमिल में प्राप्त हैं। इसका अर्थ यह है कि शेष अर्थ तमिल में नहीं हैं। इस प्रकार का भिन्न अर्थ-क्षेत्र ही हमारी तुलना का मुख्य आधार है। 'नष्ट' शब्द हिंदी की तरह विनाश या विनष्ट होने के भाव को प्रकट नहीं करता, अन्यथा वह समान अर्थ-क्षेत्र रखता है। लेकिन 'पुत्र' शोक के लिए भी 'नष्ट' का प्रयोग हो सकता है, क्योंकि वह एक क्षति (loss) है। 'सभा' और 'संघ' के अर्थ हिंदी के निकट हैं। लेकिन **'सभा'** 'union' (मज़दूर सभा) का अर्थ नहीं देता और **संघ** 'federation' (भारत संघ, जनसंघ) का नहीं। इस अन्तर को न दिये गये अर्थों में से समझना होगा, अर्थ का अभाव सूचित नहीं किया गया है। जहाँ किसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अर्थ को एक शब्द नहीं प्रकट नहीं कर पाये, वहाँ एक से अधिक शब्द दिये गये हैं। उन शब्दों के समान अर्थ (कुल योग) को उक्त शब्द का अर्थ मानना चाहिए। 'निष्ठुर' के तीन अर्थ दिये गये हैं। तीनों में कोई इसका ठीक प्रतिपादन नहीं करता, लेकिन तीनों का सामान्य अर्थ शायद इसके अर्थ को प्रकट कर पाये। (इस संदर्भ में हमारा चित्र 3.14 इसे समझने में उपयोगी होगा।) इसी प्रकार तमिल 'तापम्' का अर्थ हिंदी के किसी एक शब्द से प्रकट नहीं होता। इन स्थलों में आवश्यकतानुसार अंग्रेजी शब्द भी दिये गये हैं, यदि उनसे अर्थ स्पष्ट हो सकें। 'ताम्तूम्' के अर्थ को 'recklessnes' अधिक स्पष्ट रूप से बता रहा है। गुणतिशय को 'characteristics' ही समझा सकता है, अन्य कोई हिंदी शब्द नहीं। इस बाह्य प्रभाव के लिए विद्वानों से क्षमा माँगता हूँ। जहाँ केवल संदर्भ से अर्थ स्पष्ट हो सके, वहाँ हिंदी वाक्य में तमिल शब्द को रखकर अर्थ स्पष्ट किया गया है। इससे संदर्भ और संदर्भ-भिन्नता दोनों समझ में आ सकते हैं।

4.3—कार्य की तीसरी समस्या स्रोत निश्चित करने की है। यदि स्रोत का विवरण न मिले, तो यह होगा कि मैंने 'हद' और 'अत्तु' में मात्र दो शब्दों की तुलना की है। इस स्थिति में कहना कठिन हो जायेगा कि किन-किन दो शब्दों की तुलना करनी चाहिए। 'हद' की तुलना 'ऍत्तु' (ठोकर मारना) या 'कत्तु' (चिल्लाना) से क्यों नहीं? 'हद' की दोनों भाषाओं में प्रयोग की विशेषताओं की तुलना, इसी आधार पर हो सकती है कि दोनों शब्द 'एक' हैं। इस कारण स्रोत के आधार से चिपके रहना अत्यावश्यक था। यदि स्रोत संबंधी विवरण ठीक न हो, तो भी तुलना का स्वरूप भिन्न हो जाता है। उस स्थिति में हम 'समाधान' के दोनों भाषाओं में समान क्षेत्र तथा भिन्नता के क्षेत्र की तुलना नहीं कर पायेंगे। यदि 'मूढ़' और 'मूटन्' की व्युत्पत्ति एक न हो तो 'अंध विश्वास' और 'मूट नंपिक्कै' की रचना की तुलना नहीं हो सकती।

4.4.1—कार्य की सबसे प्रमुख समस्या अर्थ निश्चित करने की है। इसका कारण यह है कि कई शब्दों में अर्थों का इतना अधिक संबंध होता है कि इनमें विभाजन-रेखा खींचना कठिन हो जाता है। इस संबंध में पीछे जगह-जगह विचार कर चुका हूँ। यहाँ दो-एक उदाहरणों से स्पष्ट करूँगा। 'विकास' और 'विस्तार' में अंतर करना कठिन है, क्योंकि किसी का विस्तार उसका विकास बताता है और विकास में विस्तार करने या बढ़ने का गुण निहित रहता है। इस कारण दोनों शब्द एक ही अर्थ में, एक ही संदर्भ में आ जाते हैं। 'फ़ायदा,' 'लाभ' दोनों शब्द, समान धर्म के कारण आर्थिक लाभ और अन्य किसी प्राप्ति के लिए आ जाते हैं। 'हानि' और 'नाश' के संबंध में उल्लेख कर चुका हूँ। जब हिंदी भाषी कहता है कि 'उसको तमीज़ नहीं है' वहाँ कब यह केवल सूचना देने वाला शब्द है कि किसी को जानकारी नहीं है और कब निंदात्मक शब्द हो जाता है, यह कहना कठिन हो जाता है। तमिल में प्राण, प्राणशक्ति, प्राण धारण करने की लालसा (जिजीविषा), प्राणवान् अवस्था (liveliness), प्राण धारण करने का समय, (आयु) इस समय को बनाये रखने के उपाय (गुज़ारा) आदि कई अर्थों के क्रमों को 'जीवन, जीवनम्, जीवितम्' तीनों शब्दों में बाँटना पड़ता है। इन अर्थों में इन शब्दों का पुनरावर्तन (over lapping) भी होता है। जब भाषा-भाषी से ही इनके निश्चित अर्थ के बारे में पूछा जाये, तो उसका उत्तर असंदिग्ध नहीं होगा। यही समस्या 'तापम्, परितापम्, परितवि' के संबंध में है। 'उपयोकम्, पिरयोजनम्, लापम्', इन तीनों का तमिल भाषी एक ही संदर्भ में निषेधार्थक प्रयोग कर सकता है और अपना अर्थ ('बेकार') स्पष्ट कर देता है। अपने समान धर्म के कारण इन तीनों में स्पष्ट अंतर अधिक नहीं रह जाता, जब तक कि कुछ विशेष संदर्भों में ये सीमित नहीं हो जाते। 'व्यापार में लाभ', 'आने का प्रयोजन' 'चाकू का उपयोग' आदि। तमिल खाना-पीना के संदर्भ में भी यही पुनरावर्तन द्रष्टव्य है। हिंदी जल, पानी में कोई स्पष्ट अंतर नहीं किया जा सकता है। इतना ही स्पष्ट है कि लोग प्रायः काशी से 'गंगा का पानी' नहीं लाते।

4.4.2—पिछले पैरा में भाषा बोलने वालों के अर्थ के संबंध में संदेह का उल्लेख किया है। मैंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शब्दों के प्रयोग के संदर्भ में भाषा-भाषियों से अर्थ जानना चाहा, तो मुझे इसमें अधिक सफलता नहीं मिली। इसी संदर्भ में हमें वर्णनात्मक अर्थ विज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। (दे० 1.6)। विभिन्न लोगों, विभिन्न प्रादेशिक रूपों तथा अर्थ परिवर्तन की चल रही होती प्रक्रिया के कारण भी शब्दों का अर्थ निश्चित करना कठिन हो जाता है। इस संबंध में कोश हमारी अधिक सहायता नहीं करते। कोशकार का उद्देश्य बहुमुखी होता है। वह पुराने, नये, साहित्यिक, बोली के सभी अर्थों को देने का यत्न करता है। 'बृहत हिंदी कोश' में 'वर्ण' का अर्थ रंग दिया गया है, जबकि कोई हिंदी भाषी इस अर्थ में अब इसका प्रयोग नहीं करता (बोली का प्रयोग हो सकता है ?)। कोशों में दिये हुए कई अर्थों में से प्रयोग से निर्धारित अर्थों को ही तुलना के लिए ग्रहण करना चाहिए। जहाँ पुराने अर्थ में कोई समस्त या व्युत्पन्न शब्द का प्रयोग मिले, ' विवर्ण', तमिल' 'दिग्विजय' आदि, उन्हें उसी रूप में ले लेना चाहिए। उन रचनाओं से 'वर्ण' और 'विजय' को अलग कर क्रमशः रंग और जीत का अर्थ निश्चित नहीं किया जा सकता।

4.5.1—तुलना करते समय शोधकर्त्ता को भाषा की संरचना को भी ध्यान में रखना चाहिए। यदि तमिल में [स्थ, ज्ञ] आदि से भिन्न प्रकार की शब्द रचना मिले, तो उन्हें तुलना के लिए मूल प्रविष्टि में दिखा लेना चाहिये। जैसे कुटुंबस्थ (गृहस्थ), कलैज्ञन् (कलाकार) आदि। इससे दो भाषाओं की शब्द रचना पर प्रकाश पड़ेगा। हिंदी और तमिल दोनों में 'शील' तथा 'वादी' दोनों रूप स्वतंत्र शब्द भी हैं और तमिल 'गुणशील', 'संदर्भवादी' हिंदी 'प्रगतिशील', 'अवसरवादी' में बद्ध रूप भी हैं। दोनों स्तरों पर अर्थ प्रकट हो सकता है। निषेधात्मक रूपों के प्रयोग की विशेषताओं का पहले ही उल्लेख किया जा चुका है।

4.5.2—अर्थ-संरचना में बड़ी कठिनाई शब्द-वर्ग बनाने और सही रूपों की तुलना करने की है। हिंदी 'याचना' का तमिल रूप 'याचकम्' है और 'याचक' का 'याचकन्'। क्योंकि तमिल में धातु में / अम् / जोड़ने से भाववाचक संज्ञा और / अन् / जोड़ने से करने वाले व्यक्ति (agentive) का बोध होता है। इसी कारण 'वाचन–वाचकम् , वाचक–वाचकन्', 'नायकत्व–नायकम्, नायक–नायकन्' आदि शब्द रूप तुलनीय हैं। शोधकर्त्ता को बाह्य साम्य के आधार पर ग़लत शब्दों की तुलना नहीं करनी चाहिए। संज्ञा और विशेषण के भेदों में भी यह व्यवस्था देखी जानी चाहिए। शुद्ध (वि)–चुत्त, चुत्तमान, शुद्धता–चुत्तम्, स्थायी-निरंतर, निरंतरमान, स्थायित्व-निरंतरम्, इसमें तुलना समान व्याकरिणक रूपों की ही होनी चाहिए।

4.5.3—तमिल के कई शब्द संज्ञा बताये गये हैं, जो हिंदी में संज्ञा नहीं होते और उनके विशेषण और क्रिया विशेषण रूप दिये गये हैं। तमिल में प्रायः विशेषण और क्रिया विशेषण के अलग शब्द नहीं हैं। संज्ञा शब्द में परिवर्तन से ही ये वाक्य–रचना में स्पष्ट होती हैं।

चांतम्–शांति, चांतमान–शांत, चांतमाक—शांत

चांतमान इटम्–शांत स्थान

इटम् चांतमाक इरुक्किवरतु—स्थान शांत है।

चत्तमान इटम्–शोर वाला स्थान (noisy)

इटम् चत्तमाक इरुक्किरतु–स्थान शोर वाला है।

इस प्रकार इन दोनों वाक्यों में हिंदी विशेषण के स्थान तमिल में क्रिया विशेषण का प्रयोग होगा। इसी कारण कई जगह (वि) और (क्रि. वि) दोनों रूप एक ही अर्थ में दिये गये हैं।

यहाँ बहुत शोर है—इंकु ओंरे चत्तमाक इरुक्किरतु।

इसमें वाक्य–रचना ही भिन्न है। हिंदी के अनुसार इसका रूप होगा यहाँ + शोर से + है। इस अंतर के कारण ये रूप देना आवश्यक हुआ है। क्रिया विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है।

नाटकम् चुवारचियमाक इरुक्किरतु–नाटक रोचक है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नान् चुवारचियमाक पटित्तेन्–मैंने रुचि से पढ़ा (तल्लीनता से पढ़ा)
इस कारण हर स्थान पर सभी अर्थ देना संभव नहीं हुआ है। लगभग सभी क्रिया विशेषणों के ये दोनों प्रयोग होते हैं––'हिंदी विशेषण+है' तथा 'हिंदी क्रिया विशेषण+अन्य क्रियाएँ'। इसे भाषा के अध्येता थोड़े से अभ्यास से पहचान सकते हैं। हिंदी के सामान्य विशेषण के प्रयोग भी तमिल में इसी रचना से प्रकट होते हैं।

(बच्चा) सुन्दर है––आल़कु+आक इरुक्किरतु

सुन्दर (बच्चा)––अल़कु+आन

कहीं-कही इस रचना के रूपों में संज्ञा शब्द विश्लेषण में अलग किये भी जा सकते हैं, किंतु उनका संज्ञा के रूप में प्रयोग नहीं होता। जैसे––'अनायाचम्' का प्रयोग नहीं होता, किंतु उसी से 'अनायाचम्+आक'––'अनायास' का रूप व्युत्पन्न किया जाता है। 'अपूर्वम्, चकजम्, चूचकम्, पत्तिरम्, (भद्र) आदि रूप इसी प्रकार के हैं। इनमें संज्ञा रूपों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में प्रायः नहीं होता, लेकिन व्याकरिणक विशेषताओं में दो और बातें उल्लेखनीय हैं। कहीं-कहीं संज्ञा रूप का ही क्रिया विशेषण जैसा प्रयोग होता है और विशेषण के दो रूप मिलते हैं––बिना अंतिम /म/ के और उसके साथ [आन] के। इनको यथासंभव सभी शब्दों में दिया गया है, जिससे इनके अर्थ स्पष्ट हो सकें। क्रिया के अकर्मक तथा सकर्मक दो रूपों की रचना भी कहीं-कहीं कुछ भिन्न है। ये रूप क्रमशः संज्ञा में [पटु], [पटुत्तु] से बनते हैं। भले इनकी संज्ञा का स्वतंत्र प्रयोग न हो।

केवलप्पटु––अपमानित होना, केवलप्पटुत्तु––अपमानित करना।

पत्तिरप्पटु–सुरक्षित होना, पत्तिरप्पटुत्तु–सुरक्षित करना, चंतोषप्पटु–खुश होना, चंतोषप्पटुत्तु–खुश करना। सूची को पूर्णतः वैज्ञानिक बनाने के लिए इन व्याकणिक रूपों को भी दिया गया है। यदि कहीं ये रूप दिये न गये हों, तो भी अध्येता अर्थ के आधार पर इनकी रचना समझ सकता है।

4.6––इस कार्य का महत्त्व वहीं तक है, जब तक प्रस्तुत शब्दों का इन्हीं अर्थों में प्रयोग होता रहेगा। पीछे विचार किया जा चुका है कि इनमें कितने शब्द सामान्य व्यवहार में आते हैं और कितने शब्द तमिल भाषा के लिए अनिवार्य हैं (दे० 1.6.0.1)। लेकिन प्रयोग का यह आधार भी बहुत दूर तक सफल नहीं लगता। भाषाएँ परिवर्तनशील हैं और आधुनिक युग में भाषाओं में यथा-इच्छा परिवर्तन किये जासकते हैं, भाषा भाषियों का स्वभाषा प्रेम, जो यत्नपूर्वक बाहरी प्रभावों को दूर रखना चाहता है, शासन की भाषा-नीति, भाषा की नये शब्दों के निर्माण की शक्ति आदि कई बातें तमिल भाषा के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि 75 वर्ष पहले की लिखित तमिल भाषा में आज की अपेक्षा अधिक संस्कृत मूल के शब्द थे। यह भी सही है कि आधुनिक तमिल में नये, पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में तमिल रूपों का ही उपयोग किया जाता है। इन दोनों बातों का, उक्त कार्य को अनावश्यक सिद्ध करने का संदेह स्वाभाविक है। लेकिन भाषाओं में परिवर्तन इतनी जल्दी नहीं होते और उनमें आमूल परिवर्तन अकल्पनीय है। इस कारण अनुमान कर सकते हैं उक्त शब्द, बोलचाल की भाषा में कुछ दशकों तक विद्यमान रहेंगे और कई शब्द, जो हिंदी में बात, बच्चा आदि उर्दू के शब्दों की तरह तमिल के अंग बन चुके हैं, भाषा में सदैव चलते रहेंगे।

5––**निष्कर्ष**––दोनों भाषाओं की शब्दावली का वह अंश, जिसे दोनों अपने अर्थ–संप्रेषण में प्रयोग में लाती हैं, विद्वानों के सामने प्रस्तुत है। उस अंश का उपयोग दोनों भाषाएँ कैसे करती हैं और उस उपयोग की समानताएँ और भिन्नताएँ क्या हैं; इसका विवरण मैंने भूमिका में देने का यत्न किया है। यह एक नया कार्य-क्षेत्र था और मेरे सामने कोई नमूना नहीं था। इस कारण मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि यह कितना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपयोगी या कितना सही होगा। यह सुविज्ञ पाठकों के सामने है और मैं उम्मीद करता हूँ कि विद्वद्गण अपना अमूल्य सुझाव देकर मुझे अपने आगे के कार्य में पथ-प्रदर्शन देते रहेंगे।

अंत में आभार प्रदर्शन के दो शब्द कहना चाहता हूँ। संस्थान के निदेशक डा. व्रजेश्वर वर्मा मेरे कार्य में रुचि लेते रहे और समय-समय पर प्रोत्साहन देते रहे। उन्हीं के सौहार्द से यह कार्य संभव हो सका है और उनके कहने से इसे मैं आगे बढ़ा रहा हूँ। डा. राजगोपालन ने कार्य के संबंध में परामर्श दिये और डा. कृष्णस्वामी अय्यंगार ने पाडुंलिपि को देखकर सुझाव देने का कष्ट किया। संस्थान के दो-तीन सत्रों के तमिल भाषा-भाषी छात्राध्यापक शब्द प्रयोग संबंधी विवरण देते रहे और इस सत्र के छात्राध्यापकों ने पांडुलिपि तैयार करने में मेरी सहायता की। साथ ही साथ संस्थान के पुस्तकालय और कार्यालय से मुझे पर्याप्त सहयोग मिलता रहा। इन सबके प्रति एक ही शब्द में आभार प्रकट कर मैं सोच लेता हूँ कि काफ़ी बड़ा बोझ उतार दिया है, जो कि वास्तव में शायद संभव ही नहीं है।

1 Bloomfield, Language Page 178

2 C. C. Fries, Page 43 (The only true and correct meanings of words therefore are the situations in which they are used).

3 A Aileen Traver, English word lists, Page 87.

4 Robert Lado-Linguistics across culture, Page 16.

5 Saussure, Page 16 The linguistic sign unites not a thing and a name, but a concept and a sound image).

6 Saussure, Page 111.

7 Saussure, Page 113.

8 Bloomfield, Page 29.

9 Saussure, Page 10.

10 Bloomfield, Page 74.

11 Firth, Page 19 (Meaning, that is to say, is to be regarded as a complex of contextual relations, and phonetics grammar, lexicography and semantics each handles its own components of the complex in its appropriate Context).

12 Chomsky, Current Issues, Page 77 (In general, as syntactic description becomes deeper and deeper what appears to be senantic questions fall increasingly within its scope).

13 मैं यहाँ संरचना को मोटा रूप मात्र दे रहा हूँ। यह कार्य किसी भी प्रकार पूर्ण (exhaustive) नहीं है।

14 Bloomfield, § 9.6, 16.5

15 Lyons, Structural Semantics, Page 45-48

16 मैं ध्वनि संबंधी विवरण के लिए। । का तथा पद संबंधी विवरण के लिए [ ] का प्रयोग कर रहा हूँ। शब्द ' ' में दिये जा रहे हैं।

17 द्रष्टव्य मेरा लेख हिंदी, तमिल, मलयालम के तीन प्रत्यय––माध्यम, जून, 1966

18 /क/ के लिए क ख ग घ (क़ ख़ ग़); /ट/ के लिए ट ठ ड ढ

19 यहाँ पर मैं हर शब्द की 'व्युत्पत्ति' की अटकलें नहीं लगा रहा हूँ। मैं केवल अर्थ समानता की संभावनाओं की ओर इशारे करने की चेष्टा कर रहा हूँ।

20 शायद "पक्ख" हो सकता था, लेकिन यह रूप हिंदी में नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थ-सूची

1. कालिका प्रसाद भटनागर —वृहत्त हिंदी कोश, ज्ञानमंडल, वाराणसी,

2. केशवराम पाल —हिंदी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों में अर्थ–परिवर्तन, प्राची प्रकाशन, मेरठ, 1964.

3. जगन्नाथन, वी.रा —हिंदी तमिल और मलयालम के तीन प्रत्यय,माध्यम, जून 1966.

4. रामचंद्र वर्मा —शब्द और अर्थ, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 1966.

5. Aileen Traver. A —English Ward Lists—A study of their adaptability for instruction.

6. Bloomfield. L. —Language, George, Allen and Unwin, London, 1962.

7. De. Saussure. F. —Cours in General Linguistics, Peter Owen Ltd, London, 1960.

8. Dwight Bolinger —Atomization of Meaning, Language 41—4, Aug, 1964.

9. Firth. J —The Technignes of semantics, in Papers in Linguistics, London, 1957.

10. Fries. C. C —Teaching and learning English as a foreign language, The University Press, Canada, 1962.

11. Hayakawa —Language in thought and action, George, Allen and Unwin Ltd, London 1952. (अध्याय 2, 4, 6, 10 द्रष्टव्य हैं)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

12. Hardev Bahri —Hindi Semantics, Bharati Press, Allahabad, 1959

13. Katz. J. J and Fodor. J. A. —The Structure of a semantic theory, in Readings in the philosophy of Language (Ed) Katz and Fodor, Prentice–Hall Inc, New Jersey, 1964.

14. Lyons —Structural Semantics, Basil Blackwell, Oxford, 1963 (पहला भाग द्रष्टव्य है)

15. Monier Williams —Sanskrit English Dictionary.

16. Noam Chomsky —Aspects of the theory of Syntax, M I T, Cambridge, 1965.

17. Noam Chomsky —Current Issues in Linguistic theory in Readings In the Philosophy of Language.

18. Noam Chomsky —Syntactic Structures, Mouton and co, 1957.

19. Ogden and Richards —Meaning of Meaning, Harcourt Brace, New York, 1930.

20. Quine. W. V. —Speaking of Objects in Readings in the Philosophy of Language.

21. Quine. W. V. —Words and Objects, M I T Press, Massachusettes, 1963 (अध्याय 3, 7, 9-16 द्रष्टव्य हैं) ।

22. Sapir. E. —Language, Harcourt Brace, 1921.

23. Sapir. E. —Language, Culture and Personality. University of California Press, 1964.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शब्द-सूची

1. **अंक-म्** (सं)—अंक—नाटक का अंक।
   —अंग-अंग, विभाग; शरीर के अवयव। **–त्तिनर्**–सदस्य।
2. **अंकुलम्** (सं)—अंगुल–इंच।
3. **अंकी-कारम्** (सं)—अंगीकार—स्वीकृति; मान्यता (Recognition)। **–करि** (क्रि)–स्वीकार करना; मान्यता देना।
4. **अंचलि** (सं)—अंजली—नमस्कार, अभिवादन।
5. **अंतरंक** (वि)—अंतरंग—घनिष्ट, आत्मीय; रहस्यपूर्ण। **–म्** (सं)–घनिष्टता; निजी बात; आपसी बात, रहस्य बात। **–माक** (क्रि. वि) घनिष्टता से; अंतरंगता से (confidentially)–दे० 491
6. **अंति (म-म्)** (सं)—अंतिम ?—संध्या; अंत। **–वेळै**–संध्या समय। **० कालम्**–आख़िरी समय, मरणासन्न अवस्था।
7. **अकंकार–म्~आंकार-म्** (सं)—अहंकार—ईर्ष्या, जलन; गुस्सा। **तुरांकारम्** (सं)–दुः+अहंकार —गुस्सा; ईर्ष्या। **–माक** (क्रिः वि.)।
8. **अकंतै** (सं)—अहंता—घमंड, अहं।
9. **अकंपाव-म्** (सं)—अहंभाव—घमंड, अहं, हेकड़ी।**–माक** (क्रि. वि.) घमंड से, रोब से।
10. **अकति** (सं)—अगति—शरणार्थी। दे० 167
11. **अकत्ति** (सं)—अगस्त्य—अगस्त्य (पेड़, शाक आदि)।
12. **अकराति** (सं)—अकारादि—शब्दकोश।
13. **अकस्तियर** (सं)—अगस्त्य–अगस्त्य ऋषि।
14. **अकिल** (वि)—अखिल—स्थान की विराटता का सूचक, प्रायः अकिल इंतिय—अखिलभारतीय, सार्वदेशिक। अकिल उलकम्—सारा संसार। दे० 292
15. **अक्किर (अक्र)–कारम्** (सं)—अग्रहार—(उ. अग्र—) किसी भी बस्ती में मंदिर के चारों ओर की गलियाँ, जिनमें प्रायः ब्राह्मण रहते हैं।
16. **अचंपावित-म्** (सं)—असंभावित–अनहोनी; दुर्घटना। **–माक** (क्रि. वि.)—अनहोनी तौर पर।
17. **अचरीरि** (सं)—अशरीरी—पौराणिक कथाओं में देवताओं द्वारा बिना प्रकट हुए बोली गयी आवाज़, आकाशवाणी।
18. **अचल्** (वि)—असल–असल, जो नकली नहीं है; मूल (original); पूँजी।**–ले** (क्रि. वि) वास्तव में, असल में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

19. **अचात्तिय-म्** (सं)—असाध्य (उ. असाददियम) बहुत अधिक, बहुत बड़ा का भाव, पद। **–~–मान** (वि)—बहुत अधिक, बड़ा। –'काम', 'तैरियम् (धैर्य), 'क्रोध', 'व्यापार' आदि। **चात्तियम इल्लै** –संभव नहीं है, मुश्किल है, कठिन है।

20. **अंचिक-म्** (सं)—असह्य—गंदगी। **–मान** (वि.) –गंदा, घिनौना,घिन पैदा करनेवाला। **–माक** (क्रि. वि)। द्र० असह्यम् –मलयालम्। **०पिटित्त** (वि) –घिनौना।

21. **अचूयै** (सं)—असूया—गंदगी, घिन; ईर्ष्या, जलन। **०प्पटु** (क्रि)—घिन का अनुभव करना; जलना। **०पिटित्त** (वि) –गंदा, घृणित; ईर्ष्यालु। **–कारन्** (सं) –ईर्ष्यालु।

22. **अचुर-न्** (सं)—असुर–असुर।–(वि)–असुर का; बड़ा, बहुत,। –'वेग', 'बल', 'कार्य' आदि।

23. **अजकजांतर-म्** (सं)—अज+गज+अंतर (उ. अजगजांदरम्) –बहुत बड़ा, व्यापक स्तर का कार्य; अज को गज में परिवर्तित करने जैसा चमत्कारिक कार्य; धूर्तता, धोखा। **–~– मान** (वि) – बहुत बड़ा (monumental)। द्र० अजगजांतर–क०, म०।

24. **अट्चतै** (सं)—अक्षत—अक्षत चावल, जो शुभ कार्यों में आशीर्वाद के तौर पर सिर पर डाला जाता है। **०पोटु** (क्रि) (मु०)—शुभारंभ करना, श्री गणेश करना।

25. **अट्टकाच-म्** (सं)—अट्टहास—हुल्लड़, ऊधम; बदमाशी। **–चिरिप्पु** –अट्टहास (∠ चिरिप्पु –हँसी)।

26. **अत-प्पु** (सं)—अदब—अकड़, रोब; घमंड।**–प्पाक** (क्रि. वि)।

27. **अति** (वि)—अति—बड़ा, बहुत। **०चूरन** –शूर—बड़ा वीर। **०वेकमाक** (क्रि. वि) –बहुत तेजी से; बहुत शीघ्रता से।

28. **अतिकार-म्**—अधिकार—रोब; हुकूमत; अध्याय (chapter)।। **–मान** (वि) रोबीला।**–माक** (क्रि. वि)–रोब से, अधिकार से। **–कारि (सं)**–अधिकारी, असफ़र।

29. **अति-चय-म्** (स)—अतिशय–आश्चर्य, ताज्जुब। **– ~ – मान** (वि) —आश्चर्यजनक, **माक** (क्रि वि) आश्चर्यजनक; दुलर्भ (rarely)। **–चयि, – – प्पटु** (क्रि.)–आश्चर्य करना।

30. **अति-रुष्ट (ष्टं)–म्** (सं)—अदृष्ट–भाग्य, किस्मत। **– – मान** (वि) **माक** (क्रि. वि)। दे० 542। **– – चालि** (सं)—शाली–भाग्यशाली–। **तुरति – –** (सं)—दुः+ ०(उ. दुर—)–दुर्भाग्य, **– – मान** (वि), **माक** (क्रि. वि.), **चालि** (सं)।

31. **अतीत (मान)** (वि)—अतीत—बहुत अधिक, बहुत बड़ा। जैसे –'दुख', 'कार्य' आदि **–म्** (सं)।

32. **अत्तियंत (अत्यंत)-म्** (सं)—अत्यंत—आत्मीयता, घनिष्टता। **–~– मान** (वि)। **–माक** (क्रि.वि.)

33. **अत्ति-ययनम्** (सं)—अध्ययन-मंदिर-मठों में ब्राह्मण लड़कों का वेद आदि धर्म ग्रंथों का पाठ सीखना। प्रायः **–वेतात्ति** –(सं)—वेदाध्ययन।

34. **अत्तु** (सं)—हद—हद, औचित्य की सीमा। **०मीरु** –(क्रि) –हद करना, उल्लंघन करना। **०केटु** (क्रि) –बिगड़ना, हद करना। **०केट्ट** (वि) –जो हद से गुज़रा हो, बुरा, खराब, **० वन्** (सं) –वह जिसने हद कर दी हो; बुरा आदमी, सुधार से बाहर (Incorrigible) व्यक्ति। **०इल्लै** –क्या हद नहीं, (बुरे कार्यों की) सीमा नहीं। **०अटंकु** (क्रि) –सीमा, मर्यादा में रहना।

35. **अनंत-म्** (सं)—अनंत—बहुत बड़ी संख्या, जो गिनती में न आये; अधिकता का भाव।

36. **अनर्त्तम्** (सं)—अनर्थ—हानि, अनिष्ट; अनहोनी, विपत्ति।

37. **अनल्** (सं)—अनल—आँच। **० कारु-लू** (∠कारु–हवा)। **०अटि** (क्रि)—आँच लगना।

38. **अनायाच–माक** (क्रि. वि)—अनायास—अनायास, आसानी से। **–मान** (वि)। **दे०** 111

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

39. **अनुचं-तानम्** (सं)—अनुसंधान—नियमित व्यवहार; सत्कार्य का पालन; रियाज़ ।-**ति** (क्रि) । दे० 46

40. **अनु-चरणं** (सं)—अनुसरण—सहायता, मदद; समर्थन; अनुगमन (to follow); अनुकूलन (adjustment) । **–चरि** (क्रि)–अनुगमन करना, पालन करना; एड्जस्ट करना । **–चरित्तु** (क्रि. वि)–के अनुसार; समर्थन करना; एड्जस्ट करके । **०याक** (क्रि. वि)–सहायता के लिए, सहायक के रूप में ।

41. **अनु-ताप-म्** (सं)—अनुताप—सहानुभूति । – – **मान** (वि)–सहानुभूतिपूर्ण, दयालु । **–तापि** (सं)–सहानुभूति रखने वाला; समर्थक (supporter) । – – **प्पटु** (क्रि)–तरस खाना । **मतानुतापि** (सं)–धर्म को मानने वाला, दे० 61 । **०इल्लात**-(वि)–निरभिमानी, निष्ठुर । – – **क्कूट्टम्** (सं) शोकसभा । दे० 157

42. **अनुपंतम्** (सं)—अनुबंध—परिशिष्ट ।

43. **अनुप-वि** (क्रि)—अनुभव—कष्ट भुगतना, भोगना; अनुभव करना (कष्ट, आनंद, सुख-दुख आदि भावों का) । **–वम्** (सं)—अनुभव (experience) । **–वस्तन** (सं)–अनुभवी (∠स्थ) । द्र० अनुभवस्थन्–म० ।

44. **अनुमति** (सं)—अनुमति—अनुमति, इज़ाज़त; (स्कूल, कालेज में) प्रवेश, दाख़िला ।० (क्रि)–अनुमति देना; प्रवेश देना ।

45. **अनुमानम्** (सं)—अनुमान–संदेह । द्र० अनुमानमु-ते० ।

46. **अनु-ष्टानम्** (सं)–अनुष्ठान—धार्मिक कार्यों का निर्वाह; सत्कार्य का पालन, निर्वाह । **–ष्टि** (क्रि.) । **विरतम** ० (क्रि)—व्रत रखना; पालन करना । दे० 39

47. **अनेक-(म्)** (वि)—अनेक—कई, अनेक । **–माक** (क्रि. वि)—प्रायः, बहुधा । मैं 'अनेकमाक' कल आऊँगा (या) नहीं आऊँगा ।

48. **अन्निय-न्** (सं)—अन्य—विदेशी । **–र्** (बहु०) । –(वि) । **–नाटु** (सं)–विदेश (∠नाटु-देश) । **–क्चेलावणि** (सं)–विदेशी मुद्रा । द्र० अन्य (जेंद), एलियस (लै), एल्योस, एन्योइ (ग्री) ।

49. **अन्नियाय-म्** (सं)—अन्याय—अत्याचार; अन्याय, बेइन्साफ़; गड़बड़, गोलमाल । –(वि) । **–विलै** (सं)—बहुत अधिक दाम ।

50. **अन्नियोनियम** (सं)—अन्यान्य ? —घनिष्टता, मित्रता । **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि) दे० ।

51. **अप-करणम्** (सं)—अपहरण—अपहरण करना, हथिया लेना; बल से अधिकार से किसी वस्तु पर कब्ज़ा पाना । **–करि** (क्रि)–छीन लेना, हथिया लेना; खोयी हुई चीज़ को छीनकर वापस पाना, जैसे पुलिस ने चोरों के अड्डे से कई हज़ार रुपये छीने (अपकरित्तार्कळ्); ज़ब्त करना, (confiscate) ।

52. **अपकारम्** (सं)—अपकार—उपकार का उलटा, बुराई ।

53. **अफ्चारम्** (सं)—अपचारम्—अपचार, धृष्टता (profanity), बड़ों के सामने अकृत्य, अशिष्ट व्यवहार ।

54. **अपत्त-म्** (सं)—अबद्ध—(उ० अबद्दम्) अर्थहीनता, बेवक़ूफ़ी, वाहियातपना (trash) । **–मान** (वि) ।

55. **अपयम्** (सं)—अभय—शरण, रक्षा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

56. **अपरातम्** (सं)—अपराध—अपराध, दोष, गलती; अर्थ दंड, डाँड़। दे० 396। **–ति** (सं)—दोषी; कैदी। **निरपराति** (सं)–निर्दोष व्यक्ति।

57. **अपवातम्** (सं)—अपवाद—इल्जाम, दोषारोपण। प्रायः निर्दोष पर आरोप। द्र० अपवादम् –म०, अपवाद—दोष देना, बुरा कहना–सं०।

58. **अपस्मारम्** (सं)—अपस्मार—बेवकूफ़, बौड़म। प्रायः लोगों को झिड़कने के लिए।

59. **अपांट** (वि)—अ+भांड—अनुचित, अन्यायपूर्ण। प्रायः–०**प्पळि** (सं)–निरपराध पर लगाया आरोप। द्र० अपात्र (हिं)–अयोग्य, अनधिकारी। **०म्** (सं)।

60. **अपाय-म्** (सं)—अपाय—खतरा।**–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। **०इल्लात** (वि)–रक्षित, जिसमें खतरा नहीं हो।

61. **अपार (मान)** (वि)—अपार—बहुत अधिक, बड़ा। **–विलै** (सं)–अधिक दाम, **–वेलै**–बहुत बड़ा काम; सुन्दर, लुभावना। **–म्** (सं)–सौंदर्य; कमाल।

62. **अ-पिमानम्** (सं)—अभिमान—प्रीति, प्रेम, वात्सल्य। **तेचा**–(सं)–(उ० दे–) देश-प्रेम–**मता**–(सं)–धर्म-प्रेम। **पाषा**–(सं) (उ० बा–)–भाषा-प्रेम। **मनिता**–(सं)–मानव मात्र से प्रेम। **–पिमानी** (सं)–प्रेमी, **तेचा–, मता–, पाषा–, मनिता**–आदि।

63. **अपिविरुत्ति** (सं)—अभिवृद्धि—(उ० अविविरुद्दि)। विकास, समृद्धि; सुधार, जैसे बीमार की हालत में 'अपिविरुत्ति'। द्र० अभिवृद्धि–म०।

64. **अपूर्व-म्** (सं)—अपूर्व—दुर्लभता (rareness); अच्छे गुण का भाव। **–~ मान** (वि)–दुर्लभ; सुन्दर, अच्छा, **०मनुष्यन्**–(सं)–बहुत अच्छा आदमी। **–वेलै** (सं)–बहुत सुन्दर, बढ़िया काम। **–चामान्** (सं)–दुर्लभ वस्तु। **–माक** (क्रि. वि) दुर्लभ (rarely); विरले ही, बड़े कष्ट, यत्न से।

65. **अपेट्-चै** (सं)—अपेक्षा—आशा, आकांक्षा; प्रार्थना, अनरोध।—**चि** (क्रि)–प्रार्थना करना, अनुरोध करना, याचना करना; इच्छा करना। **–चकर्** (सं)–(बहु० आदर)—**अपेक्षक**–प्रत्याशी। द्र० अपेक्षा—इच्छा करना, चाहना, माँगना-सं.।

66. **अप्पि-याचम्** (सं)—अभ्यास (उ० अब्बि–)—पढ़ाई, अध्ययन; रटाई। **तेकाप्पि**–(सं)–देह+–(उ० दे—)–व्यायाम। **चिट्चाप्पि**–(सं)–शिक्षा+अभ्यास–बच्चों को पहले शिक्षा प्रारंभ करने का संस्कार, अक्षरारंभ। द्र० अभ्यास-मर०।

67. **अप्पील्** (सं)—अपील—मुकदमे की बड़ी इजलास में अपील; विरोध, प्रविवाद (किसी बात का)। चोन्न पेच्चुक्कु० इल्लै–उसकी बात का कोई इन्कार, प्रतिवाद नहीं।

68. **अमित-म्** (सं)—अमित—बहुत अधिकता का भाव। **–~–मान** (वि)–अधिक, **०लापम्**। (सं)–बहुत अधिक लाभ।

69. **अमिलम** (सं)—अम्ल—तेजाब।

70. **अमोक** (वि)—अमोघ—बढ़िया, शानदार। **–म्** (सं)। **०आरंपम्** (सं)–शानदार आरम्भ, उद्घाटन। **–वरवेर्पु** (सं) शानदार स्वागत।

71. **अम्चम्** (सं)–अंश—(उ० अम्सम्) सौंदर्य; गुण। **कलै** ० (सं)—कला सौंदर्य, सुन्दर कलात्मकता। **तेय्व** ० (सं)–ईश्वर का गुण, रूप; दैवी गुण। **तायिन्**० (सं)–(बच्चे में) माँ का गुण, रूप।

72. **अयोक्किय (अयोक्य)-न्** (सं)—अयोग्य–(उ० अयोग्यन्) बदमाश, शोहदा, गुंडा; धोखेबाज़, कपटी, धूर्त। **–तनम्** (भाव)—बदमाशी, छल-कपट। दे० 677

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

73. **अरुकतै** (सं)—अर्हता—योग्यता, कुशलता। प्रायः निषेधार्थ में। **ऐंन्न०**—क्या योग्यता है (यानी, अयोग्य है)। **०इल्लात** (वि)—अयोग्य, बेकार, खराब। द्र० अर्हत-म० (निषेधार्थ में)।
74. **अर्त्तम्** (सं)—अर्थ—अर्थ (meaning)। **०इल्लात** (वि)—बेकार, अर्थहीन, फिजूल।
75. **अलटचिय–म** (सं)—अलक्ष्य—उपेक्षा; तिरस्कार। **–मान, माक** (क्रि. वि)। दे० 702
76. **अलाति (यान)** (वि)—अलहदा?—खास, विशेष; असाधारण विचित्र, **पिरकिरुति** (सं)–विचित्र स्वभाव, असामान्य स्वभाव। **–पोक्कु** (सं)–विचित्र विशिष्ट व्यवहार। **–याक** (क्रि. वि)–वह लोगों में 'अलातियाक' दीखता है।
77. **अल्क्का** (वि)—हल्का—नीच; कमीना, निकृष्ट०। (सं) नीचव यक्ति। द्र० हल्का-क०, ते०।
78. **अल्प (अर्प)–म्** (सं)—अल्प—दरिद्रता (स्वभाव की) अकिचंनता; कमीनी। **–त्तनम्** (भाव)। **–न्** (सं)-दरिद्र स्वभाव का व्यक्ति, नीच। **–आयुचु** (सं)–अल्पायु–कम उम्र, अल्प आयु; गाली, जैसे 'मुआ'।
79. **अ-वकाच-म्** (सं) अवकाश–फुरसत समय; छुट्टी। **–माक** (क्रि. वि)—आराम से, फ़ुर्सत से। **चा–माक** (क्रि. वि)—सावकाश—फुर्सत से; समय मिलने पर। **चा**– –(सं)—फुर्सत, समय; आराम।
80. **अवचर-म्** (सं)—अवसर—जल्दी। **–मान** (वि) शीघ्र; जल्दी। **–माक** (क्रि. वि)–जल्दी से। **–क्कारन्** (सं) जल्दवाज, जो जल्दी मचाता है। **–प्पटु** (क्रि.) जल्दी मचाना, बेसब्र होना।
81. **अवता-नम** (सं)—अवधान—कला, कौशल। –नि (सं)–जो कौशल जानता है। प्रायः **अष्ट–नि** –जो एक साथ आठ कार्य कर सकता है। **चतावतानि**—शतावधानी आदि।
82. **अव-तारम्** (सं)—अवतार—(ईश्वर का) अवतार; साक्षात् (वह, तो हरिश्चंद्र का 'अवतारम्' है); जन्म। **–तरि** (क्रि.)—अवतार लेना; जन्म लेना, प्रायः बड़े लोगों के लिए–जैसे, गांधी जी ने जन्म लिया (अवतरित्तार्)।
83. **अवमति** (क्रि)—अवमति—अपमान करना; अनादर करना। **–प्पु** (भाव)
84. **अवमा-नम्** (सं)—अपमान—अपमान; अनादर। **–नि** (क्रि)
85. **अवयवम्** (सं)—अवयव—शरीर के अंग।
86. **अवरोकणम** (सं)—अवरोहण—(संगीत में) सुर का अवरोह
87. **अवस्तै** (सं)—अवस्था— कष्ट, मुसीबत, परेशानी। **०प्पटु** (क्रि) परेशान होना। **पिराण०** (सं) (मु०)—प्राण संकट, जान की आफ़त, तकलीफ़।
88. **अस्ति** (सं)—अस्थि—दाह-क्रिया के बाद बची अस्थि और राख।
89. **आकिरुति ~ आकृति** (सं)–आकृति—शरीर का डीलडौल। **०यान** (वि)–लंबा-तड़ंगा, गठा हुआ।
90. **आ-क्किर (क्र)–कम्** (सं)—आग्रह—(उ० आग्र–) आग्रह; इच्छा। – – **कि** (क्रि)–हठ करना; इच्छा करना। **तुरा** – – (सं)–दुराग्रह– (उ० दुरा)—दुराग्रह, हठ।
91. **आक्किर (आक्र)–मणम्** (सं)—आक्रमण—आक्रमण, चढ़ाई, हमला। **–मि** (क्रि)–जगह पर कब्ज़ा कर स्थित होना, बलपूर्वक कब्ज़ा करना; जगह घेर लेना, जैसे रेल्वे पैविलियन ने सबसे अधिक जगहों पर कब्ज़ा किया (आक्किरमित्ततु), **०प्पु** (सं)–बलपूर्वक आक्रमण और कब्ज़ा, जैसे चीन का भारत की भूमि पर ०।
92. **आक्रोच-म्**—(सं) 'आक्रोश—अत्यधिक क्रोध, उन्माद के स्तर पर क्रोध। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। बैल बहुत 'आक्रोचमाक' हम पर झपट आया। दे० 664, क 27

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

93. **आचामि** (सं)—असामी—आदमी। प्रायः **पेरिय०**–वह तो बड़ा आदमी है (व्यंग्य); होशियार, कुशल व्यक्ति।

94. **आ-चास्रम्** (सं)—आचार—धार्मिक पवित्रता, शुद्धि।–**मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। **तुरा** (सं)–दुः+०—अन्याय, अनीति, अत्याचार, कुकर्म, अनाचार, **अना०** (सं)– 'आचारम' की कमी, अपवित्रता।

95. **आचुवाच-म्** (सं)—आश्वासन—तसल्ली, ढाढ़स; (रोते बच्चों को) शांत करना, आराम, निश्चितता, कार्य समाप्त होने पर की निश्चितता (relief)। –**माक** (क्रि. वि)–आराम से, तसल्ली से। –**मिल्लात** (वि)—कठिन (कार्य) जिसमें आराम न हो, बेसब्र।

96. **आचै** (सं) आशा—इच्छा, कामना। **पेराचै** (सं)–लालच (∠पेर्-बड़ा)। **निराचै** (सं)–निराशा। **आचापाचम्** (सं)—आशा+पाश—इच्छा-मोह। दे० 748

97. **आजनुपाकु** (सं)—आजानुबाहु—सुन्दर, गठा रूप; दीर्घकाय; डीलडौल।

98. **आट्चे-पम्** (**पणै**) (सं)—आक्षेय-आपत्ति। –**पि** (क्रि) आपत्ति करना। द्र० आक्षेपण–ते०। आक्षेपम् म०।

99. **आणव-म्** (सं)—आणव (∠अणु)—घमंड। –**माक** (क्रि. वि) मान (वि)। द्र० अणु–आणव

100. **आतंक-म्** (सं)—आतंक—सहानुभूति, करुणा, आतुरता, हानि का दुख, असंतोष। –**प्पटु** (क्रि)–सहानुभूति प्रकट करना; असंतुष्ट होना, शिकायत करना। द्र० आतंक–मानसिक कष्ट–सं०। दे० 105

101. **आत-र-वु** (सं)—आदर—आश्रय शरण; सहारा सहायता; समर्थन। दे 740 –**वान** (वि)–सहायतापूर्ण, सहायक। –**वाक** (क्रि. वि)–सहारे, सहायतापूर्ण, सहायक। –**रि** (क्रि.)–आश्रय देना, सहायता देना; समर्थन करना, **०प्पु** (भाव०)–समर्थन; (राज) आश्रय; सहारा (backing)। – – **वाळर** (सं)–सहायक; समर्थक (supporter)। **निरात** – – (सं)–निः+आदर–असहाय अवस्था, –**रिप्पु** (सं)–परित्याग (rejection)। ~– – **वान** (वि)–असहाय, **वाक** (क्रि. वि)–बेसहारा, –**रि** (क्रि)—छोड़ देना, परित्याग करना; समर्थन न करना; सहायता न देना।

102. **आताय-म्** (सं)—आदाय—लाभ, फ़ायदा (profit, benefit); सहायता, सहारा, सुविधा। – **विलै** (सं)–सस्ता दाम

103. **आतिक्कम्** (सं)—आधिक्य—हुकूमत, शासन; अधिकार, भारत पर अंग्रेजों का' आतिक्कम्'। दे० 28

104. **आतीन-म्** (सं)—आधीन—मठ आदि धार्मिक संस्था, जैसे धर्मपुरम् का 'आतीनम'; अधीनता, परतंत्रता, जैसे अंग्रेज़ों के आतीनम् में। दे० 350। **तेय्व** –**माक** (क्रि. वि)–दैवी योग से, संयोग से।

105. **आतुर-म्** (सं)—आतुर—चिंतायुक्त सहानुभूति तथा उत्सुकता। –**प्पटु** (क्रि)–चिंता तथा सहानुभूति प्रकट करना। राम की बीमारी की बात सुन मुझे 'आतुरम्' हुआ। द्र० आतुर–मानसिक कष्ट –सं.। दे० 100. **काम०** (सं), **मोक०** (सं)–कामातुर, मोहातुर होना, कामवासना। दे० 668

106. **आत्मार्त्तम्**—आत्मा+अर्थ—दिली भाव, दिल की सचाई। –**आक** (क्रि. वि)–मन से।

107. **आप-त्तु** (सं)—आपत्ति ~ आफ़त ? –विपदा, दुर्घटना; मुसीबत, परेशानी। –**त्तान** (वि)–ख़तरनाक। द्र० चंपत्तु (संपत्ति), विपत्तु (विपत्ति)।

108. **आपाच-म्** (सं)—आभास—गंदगी; अश्लीलता। –**मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। द्र० आभास–क०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

109. **आमोति** (क्रि)—आमोद—मंजूर करना; समर्थन करना, अनुमोदन करना (to second)

110. **आयत्त-म्** (सं)—आयत्त—तैयारी, मुस्तैदी, द्र० सं.० । **–माक** (क्रि. वि) –तैयार । **–माकु** (क्रि) –तैयार होना, प्रायः युद्ध आदि विशेष कार्य के लिए । दे० 406

111. **आयाच-म्** (सं)—आयास—थकावट; क्लेश, क्लांति । **–प्पटु** (क्रि) –थकना; मन न लगना असंतुष्ट, खिन्न होना । दे० 38 । द्र० सं ।

112. **आरत्ति** (सं)—आरती—मंदिर में दीप की आरती; विवाह आदि अवसरों पर वर-वधू आदि की मंगल-कामना करते हुए, हल्दी के पानी से भरे थाल की आरती उतारना ।

113. **आरम्** (सं)—हार—फूल माला । **मुत्तारम्** (सं) –मोतियों का हार ।

114. **आरा—तनै** (सं)—आराधना—मंदिर में या घर में पूजा; पूजा के समय दीप दिखाना, दीपाराधन, जिसे प्रायः **तीप०** (उ० दी–) कहते हैं । **–ति** (क्रि) –पूजा करना ।

115. **आरूटम्** (सं)—आरूढ़ ?—रमल ।

116. **आलयम्** (सं)—आलय-मंदिर । प्रायः **देव०** (उ० दे–) ।

117. **आलो-चनै** (सं)—आलोचना–सोच-विचार, विचार-विमर्श । **–चि** (क्रि) –सोचना, विचार-विमर्श करना । **चति०** –षड्यंत्र-वार्ता (∠चति-षड्यंत्र) । दे० 763

118. **आवेच-म्** (सं)—आवेश—आवेश, प्रायः क्रोध; किसी पर देवता का उतरना । **–माक** (क्रि. वि) –बड़े आवेश में, क्रोध में, जोश से, **मान** (वि) –गुस्सैल ।

119. **आस्तान-म्** (सं)—आस्थान—राज दरबार । **–वित्तुवान्** (सं)–०+विद्वान– दरबारी कवि आदि ।

120. **इंकितम्** (सं)—इंगित—शिष्टाचार, समयोचित व्यवहार । **–कें ट्ट, इल्लात** (वि) –अशिष्ट, असभ्य । **–आक** (क्रि. वि) –ढंग से, कायदे से, सभ्य ढंग से । द्र –सं । दे०280

121. **इंतिरियम्** (सं)—इंद्रिय—वीर्य, शुक्र । द्र –सं । दे० 416

122. **इत-म्** (सं)—हित—आराम, सकून; तसल्ली । **–मान** (वि) –सुखद; आरामदेह । **–माक** (क्रि. वि) ।

123. **इतिकावम्** (सं)—इतिहास—इतिहास ग्रंथ (रामायण और महाभारत) ।

124. **इना-म्** (सं)—इनाम—पुरस्कार; मुफ्त सेवा । **–माक** (क्रि. वि) –पुरस्कार स्वरूप; मुफ्त में ।

125. **इम्-चै** (सं)—हिंसा (उ० इम्सै)—परेशानी, मुसीबत —।— **चि** (क्रि.) ० **पटुत्तु, ०चेय्**; (क्रि) परेशान करना, तंग करना; सताना । **०पट्** (क्रि) –परेशान होना, सताया जाना । दे० 728 **अकिम्चै** (सं) –अहिंसा –अहिंसा (गांधी, बौद्ध दर्शन में)

126. **इलकु~लकु (वान)** (वि)—लघु—आसान । **–वाक** (क्रि. वि) –आसानी से ।

127. **इलक्कणम्** (सं)—लक्षण—व्याकरण । दे० 701. द्र० लक्षण ग्रंथ ।

128. **इलक्कियम्** (सं)—लक्ष्य—साहित्य । दे० 702 । द्र० लक्ष्य ग्रंथ ।

129. **इलाक्का** (सं)—इलाका—(सरकारी, दफ्तरी) महकमा, विभाग । **मरामत्तु०** (सं) –पी. व. डी (P. W. D.) । दे० 639

130. **इ-ष्ट-म्** (सं)—इष्ट—इच्छा; इष्ट, प्रिय । – –**मान** (वि) –प्रिय, **माक** (क्रि. वि) –प्रियता से, – –**प्पटु** (क्रि) –इच्छा करना । **अनि** – – (सं)–अनिष्ट—अनिच्छा, – – **माक**, (क्रि. वि) –अनिच्छा से । ० **इल्लात** (कि) –अप्रिय; अनिच्छापूर्ण ।

131. **ईन-म्** (सं)—हीन—तुच्छता, निकृष्टता । –~–**मान** (वि) –नीच, निकृष्ट, तुच्छ । **पलवीनम्** (सं) –बल हीन (उ० बल–) कमज़ोरी । **अंकवीनम्** (सं) –अंगहीन –अंगहीनता ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

132. **उ-तयम्** (सं)—उदय—उदय; सबेरा; (अच्छाई का) उदय (मु०)। **चूरियो** –(सं) –सूर्योदय। **चंतिरो** –(सं) –चंद्रोदय। **–ति** (क्रि) –उदय होना, मन में, बात आना। सूझना; उत्पन्न होना, जन्म लेना।

133. **उताचीन-म्** (सं)—उदासीन—उपेक्षा, लापरवाही। **–प्पटुत्तु** (क्रि) –उपेक्षा करना। **–माक** (क्रि. वि) –उपेक्षापूर्वक, लापरवाह।

134. **उत्तमि** (सं)—उत्तम+ई–पतिव्रता, शीलवती नारी; उत्तम नारी। दे० 509

135. **उत्तरीयम्** (सं)—उत्तरीय—अँगोछा।

136. **उत्तियोक-म्** (सं)—उद्योग—(उ० उद्दि) नौकरी। **–स्तन्** (सं) –नौकर-पेशा व्यक्ति।

137. **उत्तेच-म्** (सं)—उद्देश (उ० उद्दे–)—उद्देश्य; राय; निर्णय, निश्चय। **–माक** (क्रि. वि)–लगभग, अंदाजन।

138. **उत्वेकम्** (सं)—उद्वेग—(उ० उद्वे) –उत्तेजना; जोश, उत्साह; क्षणिक आवेश।

139. **उन्मत्तम्** (सं)—उन्मत्त—पागलपन।

140. **उप-चारम्** (सं)—उपचार—(उ० प्रायः उबजारम्) आदर-सत्कार, सेवा। **–चरि** (क्रि)।

141. **उपन्नियाचम्** (सं)—उपन्यास—तकरीर, भाषण; धार्मिक कथा, हरिकथा।

142. **उपयो-कम्** (सं)—उपयोग—उपयोग; फ़ायदा। **–कि** (क्रि)—उपयोग करना। **० इल्लै**–बेकार, खराब।

143. **उपरि** (वि)—उपरि—अधिशेष (surplus)।

144. **उपवाचम्** (सं)—उपवास—आहार रहित व्रत। दे 771

145. **उपाति(तै)** (सं)—उपाधि—तकलीफ, परेशानी; शारीरिक कष्ट।

146. **उरुमाल्** (सं)—रूमाल—गले में लपेटने का कपड़ा; स्कार्फ़।

147. **उरोमम्** (सं)—**रोम**—रोम; प्राणियों के रोयें; ऊन।

148. **उर्पत्ति** (सं)—उत्पत्ति—(कारख़ाना आदि का) उत्पादन।

149. **उर्पातम्** (सं)—उत्पात—अनहोनी, भारी दुर्घटना; प्राकृतिक प्रकोप।
(सं)—उत्पाद –लंगड़पन; अंग-विकार, अंग-हीनता।

150. **उलोकम्** (सं)—लोह—धातु (metal)। दे० 416

151. **उषार** (सं)—होशियार—सावधान, सतर्क, (मुकाबले के लिए) तैयार।

152. **ऊनम्** (सं)—ऊन—अंग-विकार, अंगहीनता; कमी, अभाव। दे० 131

153. **ऍत्तन-म्** (सं)—यत्न—तैयारी; प्रयास, प्रयत्न। **–नि** (क्रि) –प्रयास करना।

154. **ऍन्तिरम्~यंतरम्** (सं)—यंत्र—कल, मशीन; पत्थर की चक्की, जाँता। द्र० यंत्र→जाँता।

155. **एक** (वि)—एक—एक ही; अधिक। **एक कालम्** –एक ही समय। **०वेकम्** –बहुत तेज़ी। **०म्** (सं) –अधिकता। **०माक** (क्रि. वि) –अधिक।

156. **एकातिपत्तियम्** (सं)—एकाधिपत्य—एकाधिकार (monopoly); पूर्ण शासन, जैसे भारत पर अंग्रेजों का 'एकातिपत्तियम्।

157. **कंटन-म** (सं)—खंडन—आपत्ति; खंडन, विरोध, प्रतिवाद। पुलिस के अत्याचार का 'कंटनम्'। **–क्कूट्टम्** (सं) –विरोध-सभा, दे० 41. **कंटि** (क्रि) –डाँटना, झिड़कना; अनुशासित, **०प्पु** (सं) दृढ़ अनुशासन; कठोर-आचरण, सख्ती का व्यवहार (strictness), द्र० क 2।– **प्पाक** (क्रि. वि) –अनुशासन में, कठोरता से; ज़रूर, निश्चित रूप से, निश्चय ही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

158. **कंटम्** (सं)—खंड—टुकड़ा। प्रायः, **–तुंटमाक** (क्रि. वि) –टुकड़ा-टुकड़ा, करके (∠तुंटम्-टुकड़ा) (सं) –कंठ –कंठ

159. **कंपिलि** (सं)—कंबल—ऊन; कंबल। **०आटै** (सं) –ऊनी कपड़े।

160. **कंपीर-म्** (सं)—गंभीर—(उ० गंबी–) गंभीरता; रोबीलापन; शालीनता। **–मान** (वि); **माक** (क्रि. वि)।

161. **कच्चा** (वि)—कच्चा—कच्चा (माल आदि)। **०प्पोरुँल्** (सं) –कच्चा माल। **०पिलिम्** (सं)–कच्चा फ़िलिम।

162. **कच्चेरी** (सं)—कचहरी—अदालत; दफ़्तर; सभा। **चंकीतक्०** (सं) –संगीत सभा, समारोह। **चीट्टूक्** –(सं) –ताश –का जमात (चीट्टु–ताश) द्र० कछेरी –क०।

163. **कटम्** (सं)—घट—(उ० गडम्) घट वाद्य।

164. **कट्टा-ट्-चम्** (**–क्षम्**) (सं)—कटाक्ष—कृपा, कृपा-दृष्टि। **–ट्चि** (**क्षि**) (क्रि.) कृपा करना।

165. **कटिन-म्**—(सं)—कठिन–मुश्किल; कड़ा, सख्त। **–~–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। द्र० कठिन –कड़ा, सख्त; मुश्किल; निष्ठुर –सं, कठिनमु –सख़त, कड़ा; निष्ठुर –ते०।

166. **कण्णिय-म्** (सं)—गण्य—(उ० ग–) ईमांदारी; गौरव, इज्ज़त। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। द्र० गण्य-मान्य।

167. **कति** (सं)—गति—(उ० ग–) शरण; सहारा; गति, हालत। दे० 10। **०इल्लान** (वि) –बेसहारा। **०केट्ट** (वि)–बिगड़ा हुआ, खराब, **०वन्** (सं)–बिगड़ा हुआ, असहाय व्यक्ति। **अतो०** (सं) –अधोगति **–**बिगाड़, बुरी दशा; अवनति। **०कलंकु** (क्रि०) –त्रस्त होना, व्याकुल होना, भयभीत होना। (<कलंकु –व्याकुल होना)।

168. **कतै** (सं)—कथा; कहानी, प्रायः, **चिरु०** (short story); झूठ। **०त्तल्** (क्रि) –कल्पना करना, झूठ बोलना।

169. **कत्तिरि** (सं)—कर्तरि—कैंची। ० (क्रि) –कैंची से काटना; संबंध तोड़ना (मु०)

170. **कन-म्** (सं)—धन—भार, वज़न। –(वि) –तीव्र, अत्यधिक, जैसे 'कन' वेग, **'कन'** योचनै (तीव्र चिंतन, गहरा चिंतन) आदि। **–मान** (वि) –भारी। **–माक** (क्रि० वि)।

171. **कमीचु** (सं)—कमीज़—औरतों की पूरी बाँह की कमीज़, जिसे –प्रायः मुसलमान औरतें ही पहनती हैं।

172. **कम्मि** (वि)—कम, कमी—थोड़ा; कम; कमी, अभाव। **–याक** (क्रि. वि) –कम।

173. **करार्** (वि)—करार—कठोर, नियमनिष्ठ, सख्त (strict); अनुशासनप्रिय। ० **विलै**–एक दाम।

174. **करुणै** (सं)—करुणा—कृपा, दया।

175. **करुमम्** (सं)—कर्म—(पितृ आदि) कर्म; मुसीबत जताने का शब्द।

176. **कर्त्ता** (सं)—कर्ता—ईसाई धर्म के ईश्वर, प्रभु। दे० 516

177. **कर्व** (**रुव**) **म्** (सं)—गर्व—(उ० गर्व–) घमंड, अहंकार। **कर्वि** (सं)–घमंडी।

178. **कलकम्** (सं)—कलह—झगड़ा, कलह; विद्रोह (mutiny)।

179. **कलचम्** (सं)—कलश—मंदिर के ऊपर बना कलश; धार्मिक कृत्यों का कलश।

180. **कलयम्** (सं)—कलश—बर्तन (मटका आदि)।

181. **कलाच्चारम्** (सं)—कला+आचार ?–संस्कृति।

State Museum Library Lucknow

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

182. **कला रचनै** (सं)—कला+रसना—कला का आस्वादन, कला-मर्मज्ञता। **कला रचिकन्** (सं) – कलारसिक। **कलैञान्** (सं)—कलाकार। **रचनै** (सं)—रसिकता, परख।

183. **कलि** (सं)—कलि—कलि (युग); दुख, मुसीबत। **०तीर्** (क्रि. एक०अक०)–दुख दूर करना, होना।

184. **कल्या (ल्लिया) णम्** (सं)—कल्याण—विवाह, दे० 781; संस्कार। **पूणूल्०** –जनेऊ संस्कार।

185. **कवलम्** (सं)—कवल—कौर। **–चेॅय** (क्रि) –छीनना, हथियाना (मु०)। **कपळीकरम्** (∠कवली-कर ?) **चेॅय्** (क्रि)—हड़पना। द्र० काल-कवलित।

186. **कवि** (सं)—कवि—कविता, काव्य। **०भन्** (सं) कवि।

187. **कष्ट-म्** (सं)—कष्ट—कठिनाई; कष्ट, तकलीफ। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। **पणक्०** आर्थिक कठिनाई। 332

188. **काणम्** (सं)—घान–कोल्हू। द्र० घाणी –गु०, गाण० क०।

189. **कातै** (सं)—गाथा—कथा, महाकाव्य। **राम०** (सं) –रामकथा, रामकाव्य।

190. **काप्पि** (सं)—कॉपी—नकल; प्रतिलिपि। **० अटि** (क्रि) –(परीक्षा में) नकल करना। **०एॅट्टु** (क्रि) –प्रतिलिपि लेना।
(सं) –कॉफ़ी–कॉफ़ी।

191. **कामम्** (सं)—काम—काम वासना, विषय सुख (lust)।

192. **कामरा** (सं)—कमरा—घर के आगे का प्रमुख कमरा जो बैठक का काम दे। प्रायः **०उळ्** (कमरा)।

193. **कार-म्** (सं)—खारा–तीखापन, तिक्तता, मिर्च का स्वाद; नमकीन पदार्थ। **–मान** (वि)–तीखा, तिक्त।

194. **कार्** (सं)—कार—कार, बस।

195. **कालट्चेपम्** (सं)—काल क्षेप—धार्मिक कथा करना; गुज़ारा करना। **० चेॅय्** (क्रि)।

196. **कालन्** (सं)—काल—यम।

197. **कालम** (सं)—काल–समय; मौसम; मौत (मु०)। **कालम्** (सं) –तन (अपना)+काल –आधुनिक काल; वर्तमान काल; आजकल, इस समय। **केॅट्ट ०** (सं)— बुरा समय, कुसमय। **० मारु** (क्रि) –दिन फिरना, समय बदलना। **अ०** (सं) –बेवक्त; अकाल (मृत्यु) आदि। **० आकु** (क्रि)–मरना, गुजर जाना।

198. **कालावति** (सं)—कालावधि—काल-समाप्ति (expiry), प्रायः बंध-पत्र, वचन पत्र आदि की तिथि–समाप्ति; मौत (मु०)।

199. **कालि** (वि)—खाली–खाली; खत्म। **आळ्** (आदमी) ० —आदमी मर गया; भाग गया। **०याकु** (क्रि)–खाली–होना; समाप्त होना। **०प्पयल्** (सं) –बदमाश, गुंडा, आवारा (∠पयल्-लड़का)

200. **किरंति** (सं)—ग्रंथि–ग्रंथि (gland); एक रोग।

201. **किरकणम्** (सं)—ग्रहण—(सूर्य-चन्द्र) ग्रहण।

202. **किराक्कि** (सं)—ग्राहकी–ग्राहक; माँग; महँगाई; नखरा। **०~० यान** (वि) –महँगा। **०चेॅय्** (क्रि. मु) नखरे करना। **०याकु** (क्रि)–महँगा होना। **०प्पटि** (सं)–महँगाई भत्ता। **०याक**–(क्रि.वि)।

203. **किरुति** (सं)—कृति—गाने, पद (संगीत)।

204. **किरुत्तिरुमम्** (सं)—कृत्रिम—नटखट; शरारत, चालबाजी। द्र० कृत्रिमम्–म०।

205. **किरुमि** (सं)—कृमि—बैक्टीरिया, वैरस आदि कीटाणु।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

206. **किलेच-म्** (स)—क्लेश—चिंता; बेचैनी, आशंका। प्रायः **मनक** ० (सं)। **–माक** (क्रि. वि)
207. **किल्लाटि** (सं)—खिलाड़ी—बदमाश, चालबाज, धूर्त; प्रेम की झिड़की। द्र० खिलाड़ि –ते ०।
208. **किळास** (सं)—गिलास—(उ० गि–)काँच।
(सं) –क्लास –कक्षा।
209. **किस्ति** (सं)—किश्त—लगान, भूमि कर; पिछले जमाने में बड़े राजाओं को या अंग्रेज़ शासन को, छोटे राजाओं द्वारा प्रति वर्ष दी जाने वाली नियत राशि।
210. **कीर्** (सं)—खीर—दूध का बना हुआ पेय। प्रायः **पाताम्**० (उ०वा–) –बादाम का दूध।
211. **कीर्त्तनै** (सं)—कीर्तन—(मीरा आदि के) पद। जैसे त्यागराज कीर्त्तनै।
212. **कुंकुम-म्** (सं)—कुंकुम,—सिंदूर, किसी भी रंग का। **–प्पू** (सं) –केसर (∠पू-फूल)
213. **कुं-टन्** (सं)—गुंडा—(उ० गुडन्) मोटा आदमी।– **टु** (सं) –मोटापा।
214. **कुटुंप-म्** (सं)—कुटुंब—परिवार।**–स्तन्** (सं)—गृहस्थ। दें। **–कट्टुप्पाटु** (सं)—परिवार नियोजन। (∠कट्टुप्पाटु–अनुशासन)
215. **कुण-म्** (सं)—गुण—(उ० गु–) गुण; स्वास्थ्य; ठीक होना। **०इल्लात** (वि) अनुपयोगी, बेकार, खराब। **–वान** (सं)—गुणवान, **–वति** (सं. स्त्री), **तुर्क०** (सं) –दुर्गुण –(उ० दु) दुर्गुण। **–मटै** (क्रि) –चंगा होना, स्वास्थ्य लाभ करना (बीमारी के बाद)। दे० 343
216. **कुणातिचयम्** (सं)–गुण+अतिशय (दे०)–(उ० गु–) चरित्रगत विशेषताएँ (characteristics)।
217. **कुतर्क्क-म्** (सं)—कुतर्क—चख़चख़, बेकार, की बहस।–~– **मान** (वि) –बकवास जैसा।
218. **कुतूकल-म्** (सं)—कुतूहल—आनंद, हर्ष। **–मान** (वि) **माक** (क्रि. वि)।
219. **कुप्पि** (सं)—कुप्पी—शीशी, बोतल; वह दिया, जो शीशी में बत्ती डालकर बनाया जाता है।
230. **कुयुक्ति** (सं)—कु+युक्ति—व्यंग्य। **–यान** (वि), **याक** (क्रि. वि)।
221. **कुरोत-म्** (सं)—क्रोध—वैमनस्य, वैर-दुश्मनी; विद्वेष, आक्रोश। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।
222. **कुशाल्** (सं)—खुशहाल—खुशी, आनंद। **०आक** (क्रि. वि) –खुशी से, प्रसन्नता से।
223. **कूजा** (सं)—कूज़ा—(उ० प्रायः, गूजा) बड़ा बर्तन, जिसके गले की चूड़ियों में हैंडल वाला ढक्कन कसा जाता है (पानी रखने, ले जाने के लिए)।
224. **कूलि** (सं)—कुली—मजदूरी का पैसा।**०वेलै** (सं) –मजदूरी का काम। **०क्कारन्** (सं) –कुली +कार—मजदूर। **तिनक्**० (सं) –दिन+कुली –(उ० दि) रोजाना मज़दूरी। **कैक्**० (सं)—रिश्वत।
225. **केवल-म्** (सं)—केवल—नीचाई; निकृष्टता, अपमान। **–मान** (वि) –नीच, बुरे ढंग का, अपमानजनक। **–माक** (क्रि. वि)—अपमान पूर्वक, हीनता से, नीचता से। **–प्पटुत्तु** (क्रि) बेइज्ज़त करना; नीचा दिखाना। **–प्पटु** (क्रि) –अपमानित होना।
226. **केचरम्** (सं)—केसर—फूल के बीच का रेशा, जिसमें मकरंद होता है।
227. **कोटूर-म्** (सं)—कठोर—क्रूरता, नृशंसता। **–मान**(वि) –क्रूर, भयंकर, वीभत्स, **माक** (क्रि. वि)
228. **कोर-म्** (सं)~**अकोर-म्**—घोर –कुरूपता; वीभत्सता। **–मान** (वि) –कुरूप; वीभत्स, भयानक। द्र० अघोर—घनघोर–गु०।
229. **कोलि** (सं)—गोली—(उ० गो–) कंचा।
230. **कोष-म्** (सं)—घोष—(उ–गो) नारा, जो जुलूस आदि में लगाये जाते हैं; आवाज़। द्र० घोष यात्र–जलूस –म०।– **माक** (क्रि. वि)—ज़ोर-शोर से।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

231. **कोषा** (वि)—गोशा—(उ० गो) ज़नाना। ०**आस्पत्तिरि**-ज़नाना अस्पताल, प्रायः प्रसव अस्पताल, ज़च्चा-अस्पताल।

232. **कोष्टि** (सं)—गोष्ठी—(उ० गो) भजन, कीर्तन आदि की मंडली; टीम।

233. **कोळम्** (सं)—गोल—(उ० गो–) गोल (globe); (भू) गोल (earth)। **पू** (उ० वू–) ० (सं)—भूगोल।

234. **कौरवम** (सं)—गौरव—(उ० गो) ठाट बाट, शान; घमंड। **–मान** (वि)। **–माक** (क्रि. वि)–इज्ज़त से, शान से। **पोॅय्क्०**-झूठी शान। **कौरवि** (क्रि) –आदर करना।

235. **क्षेत्तिरम्** (सं)—क्षेत्र—पुण्य स्थान, तीर्थ आदि पवित्र स्थान। **क्षेत्तिराटनम्**—तीर्थाटन।

236. **चंकट-म्** (सं)—संकट—तकलीफ़, मुसीबत; पेट आदि में दर्द या अन्य कष्ट। **–मान** (वि) –कष्टदायक, **माक** (क्रि. वि)। **तरुम०** (सं)–धर्म०–(उ० दरुम) धर्म संकट, दुविधा, परेशानी।

237. **चंकति** (सं)—संगति—ख़बर, समाचार। द्र० संगति–म०

238. **चंकमम्** (सं)—संगम—नदी, समुद्र या नदियों का संगम।

239. **चंकम्** (सं)—संघ–सभा। मज़दूर 'चंकम्', तमिल 'चंकम्', लेखक 'चंकम्', व्यापारी 'चंकम्', आदि।

240. **चंका-त्तम्** (सं)—संघात्—दोस्ती; संगति, संबंध। प्रायः कुसंगति के संदर्भ में। मुझे तुम्हारा० नहीं चाहिए। उसका क्या दोष; उसका ० ही ऐसा है। **–त्ति** (सं) दोस्त, (खेल आदि –सामूहिक कार्य के परिचित) सदस्य दोस्त। द्र० संगति—क०।

241. **चंकिरक-माक**(क्रि. वि)—संग्रह+**आक**—संक्षेप में। **–म्** (भाव) द्र० संग्रहमु-ते०।

242. **चंकिरांति** (सं)—संक्रांति—मकर संक्रांति का त्योहार।

243. **चंकिलि** (सं)—शृंखला–(लोहे की) जंजीर; सोने का हार, हँसुली आदि। द्र० शृंखला→साँकला।

244. **चंचयनम्** (सं)—संचयन—मृत का अस्थि संचयन।

245. **चंचल-म्** (सं)—चंचल—परेशानी, बेचैनी; आशंका। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि), **प्पटु** (क्रि)–बहुत परेशान होना, चिंतित होना। प्रायः, **मनच्०**।

246. **चं (सं) चिकै** (सं)—संचिका—पत्रिका।

247. **चंतर्प्प (र्प)-म्** (सं)—संदर्भ–अवसर, समय।—**वाति** (सं)–संदर्भ+वादी—अवसरवादी। **चमय ०पोल्**—अवसर के अनुकूल। (<पोल–अनुसार)। **अ०** (सं) ग़लत समय, बेमौक़े, – – **माक** (क्रि० वि)। जैसे मौक़ा देखकर (० **पार्त्तु**), समय~मौक़ा मिलने पर (० **किटैत्ताल्**), बड़ा अच्छा मौक़ा (**नल्ल०**)।

248. **चंति** (सं)—संधि–मिलन, प्रायः **नार्०** (सं)–चौराहा (<नालु-चार)। ०**प्पु** (सं) मुलाक़ात, भेंट; रेलवे जंक्शन। ०~० **त्तल्** (क्रि) –मिलना, भेंट करना।

249. **चंतोष-म्** (सं)—संतोष—खुशी, आनंद। **–मान** (वि) **माक** (क्रि: वि)। **–प्पटु**(क्रि) खुश होना, प्रसन्न होना।

250. **चंपंत-म्** (सं)—संबंध—संबंध; शादी। **–प्पट्ट** (वि) संबंधित। दे, 488, 546

251. **चंप-वम्** (सं)—संभव—घटना। **–वि** (क्रि) –घटना।

252. **चंपा-ति** (क्रि)—संपाद—पैसा कमाना, अर्जित करना। **–त्तियम्** (सं) –कमाई।द्र० संपादन–प्राप्त करना, कार्य-संपादन–सं.।

253. **चंपावनै** (सं)—संभावना—दक्षिणा या उपहार में दिया जाने वाला धन या वस्तु; भेंट।

254. **चंपा-षणै** (सं)—संभाषण—दो या अधिक व्यक्तियों में वार्तालाप। **–षि** (क्रि)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

255. **चंपिरताय-म्** (सं)—संप्रदाय, रीति, रस्म; शिष्टाचार (formality)। **–मान** (वि) –रस्मी; शिष्टाचारपूर्ण। **–माक** (क्रि: वि) –रस्म के तौर पर, यों ही।

256. **चंपुटम्** (सं)—संपुट—डिबिया ।

257. **चकज-म्** (सं)—सहज—घनिष्टता, आत्मीय व्यवहार; स्वाभाविकता, आसानी, सरलता। **–माक** (क्रि: वि), **मान** (वि)। दे० 347, क 6

258. **चक्कट-म्** (सं)—शकट—पहिया।

259. **चकाय-म्** (सं)—सहाय—सहायता; सहारा, पक्ष लेना, समर्थन करना। **चकायि** (क्रि)–सहायता करना, सहारा देना। **मान** (वि), **माक** (क्रि. वि) –सस्ता। **अचकाय** (वि) –असहाय –बहुत अधिक, बहुत बड़ा, जैसे; 'अचकाय' शूर, 'अचकाय' काम आदि।

260. **चकुन-म्** (सं)—शकुन—शकुन, शुभ–अशुभ का घटनाओं के आधार पर ज्ञान, शुभ घड़ी; घटनाओं के आधार पर शुभ शकुन देखना, जो हर कार्य के प्रारंभ के पहले किया जाता है। **–अप०** (सं) –बुरा शकुन; अशुभ की आशंका, **–माक** (क्रि. वि)।

261. **चक्करम्** (सं)—चक्र—पहिया।

272. **चक्करै** (सं)—शर्करा—शक्कर, चीनी; शक्कर।

263. **चत्तिय-म्** (सं)—सत्य—सच; कसम, प्रतिज्ञा। **०चेंय्** (क्रि) –कसम खाना।**–माक** (क्रि. वि) सच में। **–चंतन्** (सं)—सत्यसंध—सत्यवादी।

264. **चत्तिरम्** (सं)—सत्र—धर्मशाला।

265. **चनि** (सं)—शनि—शनि (वार); शनिदेव; सामान्य रूप से मुसीबत प्रकट करने वाला, झिड़कने वाला शब्द।

266. **चन्निति** (सं)—सन्निधि—मंदिर में गर्भगृह के सामने का स्थान, जहाँ भक्त एकत्र होकर दर्शन करते हैं। **–तेंरु** (सं)—मंदिर के सामने की सड़क (<तेंरु–गली)

267. **चम्मा-नम्** (सं)—सम्मान—पुरस्कार; भेंट। **–नि** (क्रि) उपहार देना, पुरस्कार देना; आदर करना।

268. **चप्त-म्** (सं)—शब्द—(उ० सब्दम्) आवाज। **–माक** (क्रि. वि)–जोर से। **०पोटु** (क्रि) –शोर करना; चिल्लाना। **नि०~निच्** (सं) (उ० निस्सब्दम्) –निःशब्द, मौन।

269. **चपल-म्** (सं)—चपल—लालच, मोह–इच्छा। **–माक** (क्रि. वि)।

270. **चपै** (सं)—सभा-सभा; बैठक; विद्वत्सभा, गोष्ठी। **चट्ट०**—संसद, **मेल्०**—राज्य सभा, **कीळ०**—लोक सभा। **चपानायकर** (सं) लोक सभाध्यक्ष। **चपापति** (सं)–सभाध्यक्ष।

271. **चमयोचितम्** (सं)—समयोचित—कुशलता, होशियारी, कुशाग्रता। **–माक** (क्रि. वि) कुशलता से, युक्ति से। **०पोल्**—समयानुकूल।

272. **चमत्कार-म्** (सं)—चमत्कार—होशियारी, कुशलता, कुशाग्रता, चतुरता। **–माक** (क्रि. वि)–बड़ी होशियारी से, **मान** (वि)। दे ० 310

273. **चम-म्** (सं)—सम—समान। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। **–उरिमै** (सं) –समान अधिकार। **–तर्मम्**—सम+धर्म—समानता (equality); समाजवाद।

274. **चमरच-म्** (सं)—समरस—शांति; सुलह, समझौता। **–प्पटु** (क्रि) –युद्ध; लड़ाई का शांत होना, सुलह होना।

275. **चम-र्त्तु** (सं)—समर्थ—होशियार, अक्लमंद; बच्चों से प्यार से कहा जाने वाला शब्द। **–र्त्तान** (वि)—होशियार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

276. **चमस्तानम्** (सं)—संस्थान—देशी राज्य, रियासत। द्र० संस्थान –क०, संस्थानमु –ते०, संस्थानम् –प्रदेश, प्रांत–म०; संस्थान –निवास-स्थान–सं. ।

277. **चमाजम्** (सं)—समाज—सभा; संगठन, संस्था आदि। जैसे **महिला०, आंध्र०, विद्यार्थी०** । द्र० आर्य समाज, ब्रह्म समाज, कीर्तन समाज। द्र-सं०।

278. **चमातानम्** (सं)—समाधान—शांति; समझौता। **–प्पटुत्तु** (क्रि), **०चेॅय्**—झगड़ा–निपटाना; चुप कराना, शांत करना, समझौता कराना, सांत्वना देना।

279. **चमारातन-म्** (सं)—समाराधन्—(धार्मिक पर्वों पर) भोज।

280. **चमिक्अै** (सं)—संज्ञा—संकेत, इशारा, प्रायः, हाथ, चेहरे के भाव द्वारा। द्र० संज्ञा –ते०, सं.। दें० 120

281. **चमुताय-म्** (सं)—समुदाय—समाज। **–नलम्** (सं)—समाज-कल्याण।

282. **चमूक-म्** (सं)—समूह—समाज। **–वाल्क्कै** (सं) सामाजिक जीवन। **–इयल्** (सं)–समाज विज्ञान। (सं)—सम्मुख–बड़े लोगों, ईश्वर के सामने। –त्तिल् –सम्मुख, सामने।

283. **चम्चा–रम्** (सं)—संसार—(उ०म्स) पत्नी; परिवार; गृहस्थी। **–रि** (सं)–गृहस्थ।

284. **चम्म-तम्** (सं)—सम्मत—राजी, मंजूर करना, स्वीकार करना।—**ति** (क्रि)—मंजूर करना; इजाजत। द्र० शास्त्र सम्मत, तर्क सम्मत। दे० 352

285. **चम्रट्-चणै** (सं)—संरक्षण—जिसमें रक्षा की प्रार्थना की जाती है। **–चि** (क्रि) संरक्षण करना, पालना-पोसना।

286. **चरच-म्** (सं)—सरस—प्रेमालाप। **–माटु** (क्रि) प्रेमालाप करना।

287. **चरणाकति** (सं)—शरणागति—हार मान लेना, पराजय, हथियार डालना। **०अटै** (क्रि)—हारमान लेना। जैसे; डाकुओं की पुलिस के हाथ 'चरणाकति'। **चरण्** (सं)–(पुलिस आदि में) आत्म समर्पण।

288. **चराय्** (सं)—शराई—निकर

289. **चरितम्** (सं)—चरित—जीवन चरित, जीवनी। **चुय** (स्वयं) ० (सं)—आत्म कथा।

290. **चरित्तिरम्** (सं)—चरित्र—इतिहास। **वाल्क्कैच्०** (सं)—जीवनी।

291. **चरुम-म्** (सं)—चर्म—मनुष्य का चर्म; खाल। **–रोकम्, –व्याति** (सं) –चर्मरोग।

292. **चर्वतेच** (वि)—सार्वदेशिक—विश्व (सम्मेलन, संगठन आदि)। द्र० सार्वदेशिक –पूरे देश का। दे०14

293. **चर्वातिका-रम्** (सं)—सर्वाधिकार—अधिनायकत्व (dictatorship)। **–रि** (सं) –अधिनायक, तानाशाह, निरंकुश शासक।

294. **चलन-म्** (सं)—चलन—चंचलता; बेचैनी, परेशानी। **–मटै** (क्रि)–परेशान होना। **निच०** (सं)–निः+चलन—अचंचलता, मनकी स्थिरता, शांति, **–माक** (क्रि. वि)–शांति से, निर्विकार भाव से।

295. **चल्लाप-म्** (सं)—संलाप—प्रेमालाप। प्रायः, **चरच०**। दे० 286। **–पि** (क्रि)।

296. **चवाल्** (सं) —सवाल—चुनौती; ।—**विट** (क्रि) —चुनौती देना। **चालजाप्पु** (सं) –सवाल+जवाब—टाल-मटोल, बहाना। द्र० सवालु, क० ते०।

297. **चांकोपांक माक** (क्रि. वि)—सांगोपांग—आद्योपांत; विस्तार में, पूर्ण रूप से।

298. **चांत-म्**—शांत—खामोशी; शांति, शांत भाव। **चांति** (सं)–खामोशी। **–प्पटुत्तु** (क्रि) —चुप करना, **मटै** (क्रि)—चुप होना; शांति मिलना।

299. **चाकच-म्** (सं)—साहस—छल, कपट; चाल; धोखा। **–क्कारि** (सं) –डाइन।

300. **चाकित्तियम्** (सं)—साहित्य—संगीत की रचना, कृति। जैसे, दीक्षित का ०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

301. **चाचनम्** (सं)––शासन––विपत (Bill of Rights आदि); वसीयत; पट्टा; आलेख, जैसे **कल्, चिला** (शिला) ० (सं) ––शिलालेख । **अरचियल्** (राजनीति) ० (सं) –संविधान । दे० 335

302. **चाचुवत-म्** (सं)––शाश्वत––स्थापित्व, स्थिरता; दूसरे के नाम पर संपत्ति कर देना । **–माक्कु** (सं) –संपत्ति का हस्तांतरण कर देना ।**–मान** (वि) –स्थिर, स्थायी । **–माक** (क्रि. वि) –हमेशा के लिए, शाश्वत रूप से । **०इल्लात** (वि)––अस्थायी । दे० 471

303. **चाट्चि** (सं)––साक्षी––गवाह, गवाही; प्रमाण । तुम्हारे आने का 'साक्षी' (प्रमाण) क्या है ?

304. **चातक-म्** (सं)––साधक––रियाज; नखरे करना, बनना; हठ करना; अड़ना; किसी के पक्ष में होना; समर्थन; फ़ायदा, लाभ । **–मान** (वि) –सुविधाजनक; सहायक, समर्थक; उपयोगी; फ़ायदेमंद, सस्ता । दे० 142

(सं) ––चातक––चातक पक्षी, चकवा ।

305. **चातनम्** (सं)––साधन––(यातायात के) साधन्; उपकरण ।

306. **चाति** (क्रि)––साध––उपलब्धि करना, उद्देश्य प्राप्ति करना, इच्छा साधना; हठ करना; आग्रह-पूर्वक किसी बात पर अड़े रहना; भोजन परोसना । **चातनै** (सं) ––साधना, –साधना, उपलब्धि; हठ, दुराग्रह ।

(सं)–जाति–(उ० जा) जाति ।

307. **चातु** (सं)––साधु––निष्कपट, शांत स्वभाव का व्यक्ति, भोला-भाला, मासूम । **०वान** (वि), **वाक** (क्रि. वि)––भोला । द्र० साधु० सं० ।

308. **चात्तिय-म्** (सं)––साध्य––आसान; सुलभ, संभव, वह जो हो सके, शक्ति; शक्ति के भीतर का । **०इल्लै**––संभव––नहीं है, कठिन है । **–क्कूरु** (सं)––संभावना (possibility) । **–प्पट्टाल्**––यदि संभव हो तो । दे० 680

309. **चात्वि(त्वी)क-म्** (सं)––सात्विक––शांति, अहिंसा ।

310. **चामर्त्तिय-म्** (सं)––सामर्थ्य––होशियारी, कुशलता; चातुर्य । **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि) **–चालि** (सं)––होशियार व्यक्ति, निपुण; चतुर व्यक्ति । दे० 272

311. **चा(चुवा)मि** (सं)––स्वामी––भगवान; उच्च वर्ण के लोगों के लिए सामान्य संबोधन् ।

312. **चायप्पु** (सं)––साहब––(उ० सायबु भी) मुसलमान । द्र० सायबु––अंग्रेज, विदेशी––म० ।

313. **चायै** (सं)––छाया––परछाई; शक्ल; प्रतिबिंब । द्र० छायाग्रह–सं ।

314. **चारणर्** (सं)––चारण––स्काउट्स ।

315. **चारम्** (सं)––सार––सार, संक्षेप । **०इल्लात** (वि) –निस्सार, नीरस; बेकार ।

316. **चारीरम्** (सं)––शरीर––गला, आवाज; प्रायः गायकों के संदर्भ में ।

317. **चारु** (सं)––सार––(फल का) रस, निचोड़; इमली का तैयार किया पानी, जिससे चावल खाया जाता है । दे० 680

318. **चालै** (सं)––शाला––सड़क; संस्था । **पाट०** (सं) –पाठशाला-स्कूल । **कला०** (सं) कालेज । **चिरैच्** (जेल) ०(सं) –जेल । **पर्ण०** (सं) –पर्णकुटी । **नेटुं०** (सं) –राज पथ, हाईवे (<नेटुम्––लंबा) । द्र० तोळिल्चालै––त० तोषिल् शाला-म० –कारखाना ।

319. **चास्त्रीय** (वि)–शास्त्रीय–शास्त्रीय (प्रायः संगीत के संदर्भ में) ।

320. **चाळरम्** (सं)––झालर––खिड़की ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

321. **चिका-रम्** (सं)—सिगार, श्रृंगार—सौंदर्य; अलंकार, श्रृंगार करना, सजधज। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)–सुन्दर, सजा हुआ (प्रायः मनुष्य के ही संदर्भ में)। **–रि** (सं-स्त्री०)—सुन्दरी; (क्रि)–स्वयं का श्रृंगार करना, सजाना। **–रन्** (सं–पु०) सुन्दर आदमी।

322. **चि-तनै** (सं)—चिंतन—विचार। **–ति** (क्रि) चिंतन करना, विचार करना।

323. **चितै** (सं)—चिंता—विचार; मन। ० **चैंय्** (क्रि)–ध्यान करना, सोचना।

324. **चिकै** (सं)—शिखा—(सिर के) वाल। ०**अलंकारम्** (सं)—हेयर डू। **चिकामणि** (सं)–शिखा+मणि—वहुत बढ़िया व्यक्ति, **पुत्तिर०**—पुत्र रत्न।

325. **चि-ट्चै** (क्षै), (सं)—शिक्षा–दंड।—**ट्चि** (क्रि) दंड देना। **तीवांतर** ०(सं)—काला पानी (<तीवु—द्वीप)। **चिट्चाप्पियाचम्** (सं)—दे० 66

326. **चितिल-म्** (सं)—शिथिल—खंडहर। **–मटै** (क्रि) –(इमारत का) टूटना, खंडहर होना।

327. **चित्त-म्** (सं)—सिद्ध—तैयारी। **–माकु** (क्रि) –तैयार होना। ०**चैंय्** (क्रि) –तैयार करना। —**र्** (सं. वहु०)–साधु सिद्ध। दे०।
(सं)—चित्त—मन। **–प्पिरमै** (भ्रम) (सं) –अस्पमार, पागलपन।

328. **चित्तांतम्** (सं)—सिद्धांत—मत-राय; उसूल; संप्रदाय। **चैव** (शैव)०(सं) –शैव धर्म की विचार-धारा, शैव दर्शन।

329. **चिप्पाय्** (सं)—सिपाही—जवान, सैनिक।

330. **चिम्णि** (सं)—चिमनी—मिट्टी का तेल, प्रायः, ०**एँण्णेय्** (तेल)। ०**विलक्कु** (सं) –मिट्टी के तेल से जलने वाला छोटा दिया, कुप्पी।

331. **चिरत्तै** (सं)—श्रद्धा—(उ० सिरद्दै) ध्यान, लगन। ०**याक** (क्रि. वि)—लगन से, तल्लीनता से; ध्यान पूर्वक। **अ०** (सं) लापरवाही, असावधानी; निश्चितता, ०**याक** (क्रि. वि) –असावधान; निश्चित। **पक्ति** (भक्ति) ०(सं)—आदरपूर्ण लगन, –०**याक** (क्रि. वि) आदर और लगन से। **चिरत्ति** (क्रि)–ध्यान देना।

332. **चिरम-म्** (सं)—श्रम—कठिनाई, मुसीबत। **तेक** (देह) (उ०दे) ० (सं)–शरीर कष्ट, थकान; कमज़ोरी। **पणच्०** (सं)–आर्थिक कठिनाई। **–मान** (वि)–कठिन, मुश्किल, ०**वेलै०** (सं)कठिन कार्य। ०**माक** (क्रि. वि) दे० 187

333. **चिलाकि** (क्रि)—श्लाधा—प्रशंसा करना; प्रिय लगना, चुनना। ०**त्तल्** (भाव)

334. **चिलाक्किय-म्** (सं)—श्लाध्य—बढ़िया। वेहतर अच्छाई, औचित्य। **–मान** (वि)

335. **चिलै** (सं)—शिला—मूर्ति, प्रतिमा।

336. **चिल्प** (**प्**)**-म्** (सं)—शिल्प—मूर्ति, पत्थर की मूर्ति।—**क्कलै** (सं)—शिल्पकला, मूर्ति कला। **चिल्पि** (**पि**) (सं)—शिल्पी—मूर्तिकार।

337. **चीचा** (सं)—शीशा, शीशी, वोतल।

338. **चीतनम्** (सं)—स्त्रीधन—दहेज।

339. **चीतोष्णम्** (सं)—शीत+उष्ण—जलवायु, आवोहवा।

340. **चीमै** (सं)—सीमा—विदेश, प्रायः इंग्लैण्ड। ०**क्कारन्** (सं)–अंग्रेज; गोरा। ०**क्कारी** (सं स्त्री०)

341. **चील-म्** (सं)—शील—सद्गुण, सदाचार, सच्चरित्रता।—**न्** (**वान्**) (सं)—चरित्रवान्। सदा० चारी, **कुण** ० (सं) –गुण+शील— (उ० गुण) अच्छे गुणवाला, गुणी, – – म् (भाव)। **आचार०** 'आचारम्' (दे०) में रहना,– –**न्** (सं)—जो 'आचारम्' में रहता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

342. **चुंटा** (सं)--शुंडा--छोटे लड़कों का अंग-विशेष, छुन्नी। द्र० शुंडा > सूंड। दे० 346

343. **चुक-म्** (सं)—सुख—सुख; स्वस्थता, खुशहाली।**–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि)। **अ०** (सं)–परेशानी, बीमारी, अस्वस्थता।**–पोकम्** (सं)—सुखभोग—सुख-समृद्धि, संपन्नता। **चुकातार-म्** (सं)—सुख+आधार—स्वास्थ्यविज्ञान, आरोग्य शास्त्र, (hygiene), **–मान** (वि) –स्वस्थ; स्वास्थ्यप्रद (hygienic); साफ़। **०अटै** (क्रि)–बीमारी आदि के बाद स्वास्थ्य लाभ करना। दे० 265

344. **चुतारि** (क्रि)—सुधार—सम्हलना; सम्हालना, ठीक ठाक करना। **०प्पु** (भाव)।

345. **चुत्त-म्** (सं)—शुद्ध—सफ़ाई। **–मान** (वि)—साफ़; ठीक, अच्छा। **–माक** (क्रि. वि) –साफ़ (रहना आदि); ठीक (काम करना आदि); पूर्ण रूप से, पूरा (ले जाना, पागल आदि); बिल्कुल (नहीं है)। **अ०** (सं) –गंदगी,– –**मान** (वि)– –**माक** (क्रि. वि)।

346. **चुण्णि** (सं)—छुन्नी—पुरुषेंद्रिय, लिंग। दे० 347

347. **चुमुक-म्** (सं)—सुमुख—सहजता, आत्मीयता; अच्छा संबंध, मैत्री। **–मान** (वि), **–माक** (क्रि वि)। दे 557, क 6

348. **चुरंक-म्** (सं)—सुरंग—(कोयला, नमक आदि की) खान। **–वळि, –प्पातै** (सं)—सुरंग,सुरंग मार्ग; खान के अंदर का मार्ग।

349. **चुलप-म्** (सं)—सुलभ—आसानी।**—मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। दे० 439

350. **चुवातीन-म्** (सं)—स्वाधीन—स्वतंत्रता, होश। **चित्त ० इल्लात** (वि)—बेहोश; पागल। **—मान** (वि), **माक** (क्रि. वि) 104

351. **चुवारचिय-म्** (सं)—स्वारस्य—रुचि, रोचकता; लगन, तल्लीनता। **–मान** (वि) –रोचक, **–माक** (क्रि.वि)। **०इल्लात** (वि)—खराब, बेकार। **अ०** (सं)–बेरुखाई, अरुचि, - –**मान** (वि) **माक** (क्रि. वि)।

352. **चुवि (वी)** –**कार-म्** (सं)—स्वीकार–गोर्द लेना। - –**पुत्तिरन्** (सं) –दत्तक पुत्र। **०चेंय** (क्रि) गोद लेना। **–करि** (क्रि) –स्वीकार करना, ० **त्तल** (भाव) –स्वीकार करना, स्वीकृति। दे०।

353. **चूचक-म्** (सं)—सूचक—इंगित, इशारा। **–माक** (कि. वि)—इशारे में, संकेत में

354. **चूट्चुम-म्** (सं)—सूक्ष्म—राज, रहस्य; सूक्ष्मता; (किसी बात या काम का) मर्म। **–मान** (वि)–सूक्ष्म, कुशल; रहस्यात्मक, जटिल। **–माक** (क्रि. वि)।

355. **चूत्तिर-म्** (सं)—सूत्र—गणित आदि का 'फॉर्मुला' (गणित)।

356. **चूनिय-म्** (सं)—शून्य—शून्य, अंतरिक्ष; सूनापन; डाइन का जादू-टोना। **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि)—सूना। **–क्कारि** (सं) –डाइन। दे० 604

357. **चूर-म्** (सं)—शूर—वीरता, बहादुरी। **–न्** (सं) –बहादुर, वीर, साहसी। **–त्तन-म्** (भाव)–साहस, वीरता, - –**माक** (क्रि. वि)।

358. **चेवक-न्** (सं)—सेवक—नौकर, चपरासी, दफ्तरी। **–म्** (सं) –नौकरी; सेवा।

359. **चे-वि** (क्रि)—सेवा-भगवान के दर्शन; बड़ों के दर्शन करना। **–वै** (सं) –सेवा, दर्शन, **०चेंय्** (क्रि) –सेवा करना। **–वार्त्ति** (सं) –सेवार्थी–(भगवान के) दर्शक।

360. **चेष्टै** (सं)—चेष्टा—शरारत, नटखट, खुराफात। **०चेंय्** (क्रि)–शरारत करना, चाल चलना।

361. **चोंक्काय्** (सं)—चोगा—कमीज़, कुर्ता आदि पुरुषों का ऊपर का पहनावा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

362. **चोक-म्** (सं)—शोक—उदासी, दुख । **–माक** (क्रि. वि) –उदास, दुखित । **–मान** (वि) । –नाटकम् (सं) –दुखांत नाटक, त्रासदी । **–वाल्वकै** (सं) –दुखमय जीवन ।

363. **चो-तनै** (सं)—शोधन—परीक्षा करना । (जैसे, ईश्वर, मेरी · · ·) ; तलाशी । दे०526 । **–ति** (क्रि) –परीक्षा करना; पूछताछ करना । **०पोटु, चैय्** (क्रि) –परीक्षा करना; तलाशी लेना ।

364. **चोता** (सं)—शोहदा—गुंडा, बदमाश; सींकिया पहलवान, जो अधिक उछलता है ।

365. **चौकरिय -म्** (सं)—सौकर्य—आराम, सुविधा ।—**मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि) । **अ०**–असुविधा, – –मान (वि), माक (क्रि. वि) –असुविधाजनक ।

366. **ज (च) टै** (सं)—जटा—चोटी, जूड़ा; जटा (यहाँ उ० प्रायः सडै) ।

367. **जनंकळ्** (सं)—जन—(जनम्-जन का बहु०) लोग । **जननायकम्** (सं) –जन+नायक –गण-तंत्र, लोकतंत्र (राज०) ।

368. **जपम्** (सं)—जप—जप । प्रायः **नाम०** (सं) –नामजप । **०पण्णु** (क्रि) (मु०) **–**जप करना; हमेशा किसी बात का रोना रोना, एक बात पर अड़ा रहना ।

369. **जमा** (सं)—जमा—दोस्त; किसी एक विशेष प्रयोजन का कार्य में साथी । **०चेर्** (क्रि) –दोस्ती करना; गुट, दल बनाना (खेल आदि का) ।

370. **जमा-य्** (क्रि)—जमा (ना)?–मस्ती करना; काम जमाना ।**–याक** (क्रि. वि) –मस्ती से, खुशी से ।

371. **ज-यम्** (सं)—जय—विजय, जीत । **–यि** (क्रि) –जीतना । **अप०** (सं)—हार, पराजय ।

372. **जरू-र्** (सं)—जरूर–मुस्तैदी, तत्परता, चुस्ती, तेजी । दे० क 9 **–रान** (वि) –चुस्त, तेज (काम, पढ़ाई आदि में) । **–राक** (क्रि. वि)—मुस्तैदी से, तेजी से (काम होना आदि) । **०पण्णु** (क्रि.) –तेज काम करने के लिए उकसाना, डाँटकर काम लेना । दे० 90

373. **जल-म्** (सं)—जल—(प्रायः) पीने का पानी; गंगा आदि का जल । दे० 4333 । **–चंति** (सं) –जल+संधि—जल डमरू मध्य । **–तोषम्** (सं)—जल+दोष—(उ० दोषम्) जुकाम ।

374. **जल्सा** (ल्चा)—जलसा—(उ०जल्सा) मजा, मौज, ऐश । **०चेंय्** (क्रि) –मौज करना, ऐश करना । द्र० जलसा—ते० ।

375. **जाकै** (सं)—जगह—रिहायशी जगह; निवास, जैसे, आपका 'जाकै' कहाँ है ?

376. **जवाप्-तारि** (सं)—जवाबदारी—(उ० ब्द) जिम्मेदारी, जवाबदेही । **–पु** (भाव) –जवाब-देही, जिम्मेदारी ।—**तार्** (सं) –जिम्मेदार ।

377. **जाक्किरतै** (सं)—जाग्रत—(उ० जाग्गिरदै) सावधानी । **अ०** (सं) –असावधानी, लापरवाही, **०यान** (वि), **०याक** (क्रि. वि)—असावधान । **०यान** (वि), **–याक** (क्रि. वि) –सावधानी से, होशियारी से । द्र० जाग्रत-म् ।

378. **जाक्केट्टु** (सं)—जैकेट—ब्लाउज़, चोली ।

379. **जातक-म्** (सं)—जातक—कुंडली, जन्म-पत्री । **–क्कतैकळ्** (सं) –जातक कथाएँ ।

380. **जाप्ता (पिता)** (सं)—जाब्ता, जाविता—सूची, फ़ेहरिस्त ।

381. **जाल-म्** (सं)—जाल—इंद्रजाल; जादू, करिश्मा; छल, धोखा । **–क्कारन्** (सं) –जादूगर; छली । **०पण्णु** (क्रि) (मु०) –नाटक करना, स्वांग रचना ।

382. **जीवन्** (सं)—जीवन—प्राण (life, liveliness) । **०इल्लात** (वि)—प्राणहीन, निष्प्राण; निरीह, अशक्त ।

383. **जीवनम्** (सं)—जीवन—जीवन, जिंदगी । **०नटत्तु** (क्रि) –जीविका चलाना, गुज़ारा करना ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

384. **जीवनाम्चम्** (सं)—जीवन+अंश—(उ० म्स) –तलाक देने पर हर महीने दी जाने वाली रक्म।

385. **जीवि-तम्** (सं)—जीवित—जीवन; गुजारा। –(क्रि) –जीना, जिंदा रहना।

386. **जोँलि** (क्रि)—ज्वाला (या) ज्वलित—चमकना, चमचमाना, जगमगाना। **०प्पु** (भाव)।

387. **जो-र्** (सं)—ज़ोर—बढ़िया अच्छा, जैसे, खाना 'जोर'। **–रान** (वि) **०मलै** –बढ़िया वर्षा, अधिक बारिश। **–राक** (क्रि. वि)। द्र० जोरु –क०।

388. **ञा-नम्** (सं)—ज्ञान–बोध, प्रतिभा। **–नि** (सं) –प्रतिभावान, ज्ञानी; साधु, योगी। **अञ्**०(सं) –अज्ञान; अपने के प्रति अंधप्रेम, – **–नि** (सं)—अज्ञानी, नासमझ।

389. **ञाप-कम्** (सं)—ज्ञापक—याद, स्मृति। **–कमाक** (क्रि. वि) –याद से, याद रखकर। **–कार्त्त-म्** (सं)—ज्ञापक+अर्थ—स्मारक, - **–माक** (क्रि. वि) –याद में, स्मृति में। द्र० ज्ञापक –क०।

390. **टप्पा** (सं)—डिब्बा—(उ० डब्बा–डप्पा) टिन का डिब्बा।

391. **टिक्कट्टु** (सं)—टिकट—रेल, बस, सिनेमा आदि का टिकट, प्रवेश का टिकट।

392. **टिन्** (सं)—टिन—कनस्तर।

393. **टिपन्** (सं)—टिफ़िन—नाश्ता। **केरियर** (सं)—टिफ़िन।

394. **टूट्टि** (सं)—ड्यूटी—(उ० डूट्टी) ड्यूटी, पुलिस की गश्ती।

395. **तंटनै** (सं)–दंडन–(उ० द–)दंड, सजा। **तंटि, ० विति** (क्रि)–सजा देना, दंडित करना। दे० 755

396. **तंट-म्** (सं)—दंड—(उ० द–) अर्थ दंड, डाँड़, दे० 56; बेकार होना, व्यर्थ। **–मान** (वि) –बेकार, व्यर्थ, **माक** (क्रि. वि)—दंड स्वरूप; बेकार, व्यर्थ। द्र० दंड>डाँड़।

397. **तंटायुतम्** (सं)—दंड +आयुध -- (उ० द–) गदा।

398. **तंत-म्** (सं)—दंत—(उ० द–) हाथी दाँत। –(वि) –हाथी दाँत का, हाथी दाँत का-सा।

399. **तंति** (सं)—तंति, तंतु—(वीणा आदि का) तार; तार (telegram)।

400. **तंतिर-म्** (सं)—तंत्र—चालाकी, चातुर्य; युक्ति, कुशलता। **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि)। **राज०** (सं)—राज+तंत्र—राजनीति, **–तंतिरि** (सं) –राजनयिक, कूटनयिक। **–क्कारन्, –चालि** (सं)—चालाक, चतुर व्यक्ति।

401. **तकन-म्** (सं)—दहन—(उ० प्रायः द–) दाह क्रिया, प्राय; **–क्किरयै** –दहन क्रिया। **तकि**(क्रि) —जलना, आँच, गर्मी लगना, **वयिरु** (पेट) ० (क्रि) (मु०) –जी जलना।

402. **तकरा-रु** (सं)—तकरार—झगड़ा, कलह; मुसीबत, परेशानी। **–रान** (वि) –झगड़े का (काम मामला आदि); मुश्किल; गलत (काम, आदि)। **–राक** (क्रि. वि)।

403. **तत्तुव-म्**—तत्त्व—दर्शन शास्त्र। **०पेचु** (क्रि) (मु०) –फलसफा बखारना। **वाल्क्कैत्०** (सं) —जीवन दर्शन। **मनो०** (सं) –मनोविज्ञान। **–ञानि** (सं) –दार्शनिक; ज्ञानी। ० इल्लात (वि)–बेकार, असार। दे० 468। द्र० तत्त्व शास्त्र– म०, तत्त्व शास्त्रमु— ते०–दर्शन।

404. **तन-म्** (सं)—धन—(उ० द–) धन, धन-राशि, संपत्ति। **–वंतन्** (सं) –धनवान।

405. **तमा-षु** (सं)—तमाशा—हास्य, हंसी-मज़ाक। **–षान** (क्रि. वि) –हँसी में, खेल में, मज़े में, मज़े के लिए (घूमना, खेलना आदि)। **–षान** (वि) –हास्य प्रिय, विनोदी; हास्यपूर्ण; मजेदार, रोचक। **०क्कारन्** (सं) –मजाकिया; विनोदी।

406. **तया-र्** (सं)—तैयार—तैयारी; बनाना, उत्पादन। **–रि** (क्रि) –उत्पादन करना। **–राकु**(क्रि) –तैयार होना; बनना, **रावकु**(क्रि)–तैयार करना, तैयार रखना, बनाना, **रिप्पु** (सं)–उत्पादन; कृति, निर्मिति। दे० 110

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

407. **तर-म्** (सं)—स्तर—गुण, स्तर, जैसे **०केँटु** –स्तर गिरना। **–मान** (वि)–अच्छा, बढ़िया; मानक, स्तर का। ० **इल्लात** । (वि)—बुरा, खराब, बेकार।

408. **तरिचनम्** (सं)—दर्शन—(उ० द–) (भगवान, कभी-कभी बड़े लोगों के) दर्शन। दे० 403 **तरिचि** (क्रि)।

409. **तरुणम्** (सं)—तरुण ?—समय, उस 'तरुणम्' राम आया।

410. **तरुम-म्** (सं)—धर्म—(उ० द–) दान। **–वान** (सं)—दानी, **कर्त्ता** (सं) –ट्रस्टी। **अ०** (सं)–अनीति, अन्याय,– **–मान** (वि)– अनीतिपूर्ण, **माक** (क्रि. वि) –अन्याय से। **–चिंतनै** (सं)—धर्म+चिंतन—दानशीलता, दयालुता।

411. **तांटव-म्** (सं)—तांडव—तांडव नृत्य; बोलबाला।०**आटु** (क्रि) (मु०) –बोलबाला होना, प्रकोप होना, जैसे रिश्वत का ०, बिहार में सूखे का ० आदि।

412. **ताक-म्** (सं)—दाह—प्यास। **–माक** (वि)। द्र० दहिक्कुक –प्यास लगना –म०।

413. **ताक्कल** (सं)—दाखल—अर्जी देना, सबूत, कागज-पत्र आदि पेश करना; प्रवेश (admission)। **चेँय्** (क्रि)—पेश करना।० **आकु** (क्रि) –प्रवेश पाना।

414. **ताचि** (सं)—दासी—वेश्या; दासी (काव्य में)। **ताचन्** (सं) –दास –दास, सेवक।

415. **ताट्चणिय-म्** (सं)—दाक्षिण्य—मुरौवत, लिहाज; दया, करुणा; सहानुभूति। **–प्पटु** (क्रि)–लिहाज करना; दया करना। **—माक** (क्रि. वि)। **तयवु०** (सं) –दया+० –(उ० दयवु) दया। **निर्०** (सं)—बेरहमी, बेमुरौवत, निर्दयता, - **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

416. **तातु** (सं) —धातु—बिंदु, वीर्य। दे० 112, 150। द्र० धातु –शरीर के सात द्रवों में एक–सं०।

417. **तात्ता** (सं)—तात—दादा; नाना; बूढ़ा आदमी।

318. **तापम्** (सं)—ताप—तरसना, लालायित होना, मनचाही वस्तुन मिलने की निराशा, अतृप्ति।

419. **ताम्तूम्** (सं)—धूमधाम—(उ० दाम्द्म्) मनमाना ढंग; लापरवाही, बिना हिसाब-किताब (काम, खर्च करना) (recklessness)। द्र० धामधूम –धूमधाम –गु०, मर०।

420. **तारै** (सं)—तारा—नक्षत्र, तारा –धारा –(उ० दारै भी) धार; पानी की धार, जो दान के समय अंजुलि से दी जाती है। ०**वार्** (क्रि. मु०) –हाथ धोना, त्याग देना।

421. **तावा** (सं)—दावा—(उ० दा–भी) मुकदमा दायर करना।० **चेँय्** (क्रि)।

422. **तिटकात्तिर-म्** (सं)—दृढ़+गात्र –शरीर का गठा हुआ होना, स्वस्थ होना। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। **–चालि** (सं) –बलवान, ०**यान** (वि)।

423. **तिनचरि** (सं., क्रि. वि)—दिनचर्या—(उ० दि–) दैनिक पत्र; रोज।

424. **तिनम्** (सं)—दिन—(उ० दि–) दिन; रोज। दे० 429

425. **तियानम्** (सं)—ध्यान—भगवद्ध्यान; योग का ध्यान। द्र० ध्यानम् –म०। दे० 33

426. **तिराणि** (सं)—त्राण ? –शक्ति।

427. **तिरुष्टांतम्** (सं)—दृष्टांत (उ० दि~द्रु) देखा, अनुभव किया सत्य।

428. **तिलकम्** (सं)—तिलक—स्त्रियों के माथे पर रोली, कुंकुम आदि का टीका।

429. **तिवचम्** (सं)—दिवस—(उ० दि–) श्राद्ध। द्र० दिवसमु –ते०। दे० 424

430. **तीपकर्पम्** (सं)—द्वीप+कल्प ? – द्वीप। द्र० तमिल तीवु –द्वीप।

431. **तीर-म्** (सं)—तीर—नदी—तट, तीर।

(सं)–धीर –(उ० दी–)वीरता, शौर्य। **–न्** (सं)–वीर,बहादुर। **–मान** (वि) **माक** (क्रि.वि)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

432. **तीक्र्क-म्** (सं)—दीर्घ—तीव्रता, पैनापन, तीक्ष्णता। **–माक** (क्रि०वि) –अच्छी तरह, पूरी तरह (सोचना आदि); तीव्र रूप से; दृढ़ता से। **–तरिचि** (सं) –दीर्घ+दर्शी—भविष्य वक्ता, महान संत (prophet); दूरदर्शी। **अरिविन्०** –बुद्धि की तीक्ष्णता।—**मान** (वि), **०कण्कळ्** –तीक्ष्ण आँखें (दृष्टि), पैनी दृष्टि।

433. **तीर्त्तम्** (सं)—तीर्थ—(उ० कभी-कभी दी–) पीने का पानी। दे० 373। **०आटु** (क्रि) –नहाना, तीर्थ स्नान करना।

434. **तीविर-म्** (सं)—तीव्र—मुस्तैदी, तेजी। **–मान** (वि) –अधिक; जोरदार जैसे, **–चंटै** (जोरदार झगड़ा); गंभीर, जैसे **–विवातम्** (गंभीर चर्चा –दे०); प्रमुख, महत्त्वपूर्ण, जैसे **–विषयम्**। **–माक** (क्रि. वि) –तेजी से, जैसे आग 'तीविरमाक' फैल गयी; लगन से, जैसे 'तीविरमाक पटि' (लगन से पढ़ो)।

435. **तुक्कटा** (सं)—टुकड़ा—सुगम संगीत के गीत; मजाक, हँसी, चुटकुले। द्र० तुकड़ा –मर०

436. **तुप्पट्टा** (ट्टि) (सं)—दुपट्टा—(उ–०) चादर, बिछौना।

437. **तुमिच-म्** (सं)—ध्वंस—(उ० दु–भी) शरारत, ऊधम; तोड़फोड़। **–मटि** (क्रि)–ऊधम कर। दे० क 1

438. **तुरो-कम्** (सं)— द्रोह—(उ० दु) विश्वासघात। **–कि** –(सं) –द्रोही, विश्वासघाती।

439. **तुर्लप-म्** (सं)—दुर्लभ—(उ० दु—) कठिन, मुश्किल। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। दे० 349

440. **तुलुक्कन्** (सं)—तुर्क—मुसलमान।

441. **तुवारम्** (सं)—द्वार—छेद।

442. **तूर-म्** (सं)—दूर—(उ० दू—) दूरी; मासिक धर्म। **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि)**–माकु** (क्रि) –मासिक धर्म होना, रजस्वला होना।

443. **तू-ळ्** (सं)—धूल—किसी वस्तु का चूरा। **–ळाक** (क्रि. वि) –चूरा–चूरा (होना), महीन (पीसना) आदि। **मरत्०** (सं) –बुरादा (<मरम् –पेड़, लकड़ी)। **तूळि** (सं)–धूलि-धूल।

444. **तेचीय-म्** (सं)—देशीय—(उ० दे–भी) राष्ट्रीय। **–माक्कु** (क्रि) –राष्ट्रीयकरण करना। **–म्** (सं)– राष्ट्रीयकरण।

445. **तेवतै** (सं)—देवता—(उ० दे–) परी, छोटे देवी–देवता, अपदेवता। **तेवर्** (सं) (बहु) –देव–(उ० दे—) इंद्र वरुणादि देव, जो ईश्वर के अधीन हैं, अमर। **तेँय्वम्** (सं) –दैव –(उ० देय्–) ईश्वर।

446. **तैरिय-म्** (सं)—धैर्य—(उ० दै—) साहस, हिम्मत; मजाल; वीरता। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। **अ०** (सं) –अधैर्य –साहस हीनता, कायरता; ; अधैर्य, बेचैन होना।

447. **तोँनि** (सं)—ध्वनि—आवाज; व्यंग्यार्थ, आशय। **०**(क्रि) –अर्थ का आभास, आशय; तथा व्यंग्यार्थ प्रकट होना।

448. **तोरणम्** (सं)—तोरण—आम, अशोक के पत्तों से बनी झंडियाँ, जो शादी–त्योहारों में सजावट में बाँधी जाती हैं।

449. **तोषम्** (सं)—दोष—(उ० दो–) दोष, गलती; डीठ; छूतछात, अपवित्र होना। दे० 373

450. **नंतवनम्** (सं)—नंदनवन—उद्यान, बाग।

451. **नकल** (सं)—नकल—प्रतिलिपि; नकली, अवास्तविक। **०** (वि)–नकली, झूठ। **०** **एँटु** (क्रि)–प्रतिलिपि लेना। **०चेँय्** (क्रि)—अनुकरण करना (imitate); (परीक्षा में), नकल मारना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

452. **नक्कल** (सं)——नकल——मजाक, व्यंग्य, मखौल; स्वांग। **०चेंय्** (क्रि) –मजाक उड़ाना।

453. **नपर** (सं)——नफ़र——व्यक्ति, जैसे मेरे घर में आठ 'नपर' हैं।

454. **नळिन-म्** (सं)——नलिन——सौंदर्य, सुकुमार सौंदर्य (sleekness)। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

455. **नष्ट-म्** (सं)——नष्ट——नुकसान, आर्थिक हानि; खोना, क्षति, हानि, नष्ट होना, नाश। **–प्पटु ~ ०अटै** (क्रि) –नष्ट होना, नुकसान होना, हानि उठाना। (दोनों अर्थों में)। **ऍनक्केन्न०**–मेरा क्या नुकसान, मेरा क्या जायेगा ?। **पण०** –आर्थिक हानि। **मान०** –मान भंग, गर्व का का नाश

456 **नाकरी(रि)क-म्** (सं)——नागरिक——सभ्यता, सुसंस्कृति, जैसे सिंधु घाटी का 'नाकरीकम'; फैशन, सलीका शिष्टता। **–मान** (वि) –सभ्य, संस्कृत; शिष्ट, सलीकेदार। **–माक** (क्रि. वि)। अ० (सं) –असभ्यता, अशिष्टता, **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि)। द्र० नागरिक——शिष्ट, सभ्य–सं०।

457. **नाचूक्कु** (सं)——नाजुक——(बात करने, व्यवहार करने की) तमीज़, होशियारी; (काम आदि की) सफ़ाई; (रहने का) शऊर; खाने-पीने का सलीका; (चलने-बोलने की) अदा आदि; हर प्रकार की नाजुक मिजाजी। **–आन** (वि), **आक** (क्रि. वि)।

458. **नामम्** (सं)——नाम——वैष्णवों का त्रिपुंड। **०पोटु** (क्रि) (मु०) –धोखा देना।

459. **नायक-न्** (सं)——नायक——नेता, नायक; ईश्वर, प्रभु; कथानायक (प्रायः, **कता०**); पति। **–म्** (सं)–नेतृत्व; ईश्वरत्व; ईश्वर। **नायकि** (सं स्त्री०)–देवी, ईश्वरी; कथानायिका (प्रायः. **कता०**); पत्नी; प्रेमिका। **कळळनायकन** (सं) –खल नायक –परस्त्री का गूढ़ प्रेमी। **कळळ नायकि** (सं० स्त्री०)।

460. **निच्चय-म्**——निश्चय——निश्चय, निर्णय। **–माक** (क्रि. वि) –अवश्य, जरूर, **मान** (वि)–निश्चित, निर्णीत।

461. **निज-म्** (सं)——निज——सचाई, सच। **–मान** (वि) –सच्चा, **माक** (क्रि. वि) –सच में। द्र० निज –क०।

462. **नितरिचन-म्** (सं)——निदर्शन——प्रत्यक्ष अनुभव। **–माक** (क्रि. वि) –प्रत्यक्ष रूप से, हस्तामलकवत्।

463. **नितान-म्** (सं)——निदान——शांति, धैर्य; मंद गति; देर (late)। **नितानि** (क्रि) –देर करना; सोच-विचार करना; धैर्य रखना। **–माक** (क्रि. वि), **मान** (वि)। द्र० निदान –क०।

464. **नित्तियम्** (क्रि. वि)——नित्य——रोज; स्थायी, नित्य (दर्शन तथा काव्य में)। **अ०** (सं) –अनित्य, नश्वर।

465. **निपंतनै** (सं)——निबंधन——शर्त; नियम (regulations)। **० विति** (क्रि)–शर्त लगाना; नियम बनाना। दे० 799 द्र० निबंधन –म०, निबंधन –बंधन, बाँधने की क्रिया (अभिधा और लक्षणा) –सं.।

466. **निमित्त-म्** (सं)——निमित्त——भविष्यवाणी। **–क्कारन्** (सं) –भविष्यवक्ता, शकुन सूचित करने वाला। **केट्ट०** (सं) –अपशकुन, बुरा शकुन, बुरे लक्षण। **०~माक** (क्रि. वि) –के निमित्त, के लिए, हेतु।

467. **निमिष(ट)म्** (सं)——निमिष——मिनट।

468. **नियति** (सं)——नियति——प्रकृति, स्वभाव; नियम, जैसे **इयकैंयिन्०** (सं)–प्रकृति का नियम, **उलक०** (सं)——संसार का नियम, चलन, रिवाज। दे० 755

469. **नियमनम्** (सं)–नियमन–नियुक्ति। **नियमि** (क्रि)–नियुक्त करना; (ईश्वरीय) विधान बनना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

470. **नियम-म्** ~ **नेमम** (सं)—नियम –धार्मिक कृत्यों (व्रत आदि) का विधिवत पालन; धार्मिक कृत्य। **–माक** (क्रि. वि), **मान** (वि) –विधिवत्, शास्त्र सम्मत।

471. **निरंतर-म्** (सं)—निरंतर—स्थायित्व।–~**–मान** (वि) –स्थायी। **–माक** (क्रि. वि)–स्थायी रूप से, सदा के लिए। दे० 302, 105

472. **निराकरि** (क्रि)—निराकरण—अस्वीकार करना, ठुकराना। **निराकरणम्** (सं)।

473. **निरुवाण-म्** (सं)—निर्वाण—नंगापन।–~**–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

474. **निरूपि** (क्रि)—निरूपण—साबित करना, सत्यता सिद्ध करना। **निरूपम्** (सं) –प्रकल्प (hypothesis)। **निरूपण-म्** (सं) –प्रमाण, सबूत, **–त्तिट्टम्** (सं) –निदर्शन-कार्यक्रम (demonstration programme) (<तिट्टम्—योजना)।

475. **निर्त्तूळि** (क्रि. वि)—निः+धूलि—मटियामेट, नेस्तनाबूद; नष्ट (करना), चौपट (करना)। **–आकु** (क्रि. अक), **आक्कु** (क्रि. सक)। दे० 443

476. **निर्पंत-म्** (सं)—निर्बंध—दबाव, आग्रह। **–माक** (क्रि· वि)—बलपूर्वक, आग्रहपूर्वक। **–प्पटुत्तु** (क्रि) –आग्रह करना, दबाव डालना।

477. **निर्मूल-म्** (सं)—निर्मूल—तहस-नहस होना, पूरी तरह नष्ट होना। **–माकु** –(अ० क्रि), **माक्कु** (स. क्रि)।

478. **निर्-वाकि**~**वाकस्तन्** (सं)—निर्वाह (स्थ) –संचालक, व्यवस्थापक, प्रबंधक। **–वाकम्** (सं) –निर्वाह, प्रबंध (administration); संचालन, प्रशासन। **–वकि** (क्रि) –संचालन करना, प्रबंध करना, संभालना।

479. **निर्वत्ति** (क्रि)—निवृत्ति ?—निवारण करना, (दोष) दूर करना; (कमी) पूरी करना।

480. **निवार-णम्** (सं)—निवारण—दर्द, रोग आदि से निवारण। **–णि** (सं) दूर करने वाला (दवा आदि), जैसे दर्द 'निवारणि'।

481. **निवे-तनम्** (सं)—निवेदन—भगवान को फल आदि पूजा सामग्री का निवेदन। **–ति** (क्रि)।

482. **निष्टूर-म्** (सं)—निष्ठुर—व्यंग्यपूर्ण उपेक्षा, अपमान, छोटा दिखाना; निष्ठुरता। **–माक** (क्रि. वि), **मान** (वि)।

483. **नैस** (वि)–नाइस—महीन (कपड़ा आदि); महीन (पीसना आदि)। **०पण्णु** (क्रि) (मु०)–फुसलाना, मीठी-चुपड़ी बातें करना। **–सान** (वि)–महीन; बढ़िया। **–साक** (क्रि. वि)–महीन, चुपके से, धीरे से।

484. **नोट्टु** (सं)—नोट—रुपये का नोट; लिखने की कॉपी।

485. **पंक-म्** (सं)—भंग—भंग होना, नष्ट होना; कष्ट, मुसीबत; अपमान। **–माकु**~**–मटै** (क्रि)–नष्ट होना; अपमानित होना। **०वा** (क्रि) –कष्ट होना, तकलीफ़ होना, खलल पड़ना। **मान०** (सं) –मान भंग –मान भंग, मान हानि, बेइज्जती।

486. **पंका** (सं)—पंखा—पुराने जमाने का टाट का लंबा पंखा, जो कमरे के ऊपर पूरी लंबाई में लगता था, जिसे बाहर से चपरासी रस्सी से खींचकर चलाता था।
(सं)—भाँग–भाँग

487. **पंतक-म्** (सं)—बंधक—बंध-पत्र (promisory note)। प्रायः **–पत्तिरम्**।

488. **पंत-म्** (सं)—बंध—(उ० बं–) बंधन, जिम्मेदारी (moral binding), संबंध; रिश्ता। **–प्पट** (क्रि)—बंधित होना; संबंध, रिश्ता होना; फँस जाना (involve) दे० 250, 546

489. **पंति** (सं)—पंक्ति—पाँत, पंगत।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

490. **पंतो-पस्तु** (सं)—बंदोबस्त—(उ० बं–) सुरक्षा-व्यवस्था, रक्षापूर्ण, सतर्कता। **पोलीस्०** (सं)–पुलीस की सुरक्षा। **०आन** (वि) **आक** (क्रि. वि) –सुरक्षित। दे० 510. द्र० बंदोबस्तु म०।

491. **पकिंकर(पकिरंक)-म्** (सं)—बहिरंग—खुली रीति, जिसमें छिपाव न हो; सार्वजनिक रूप। **–मान** (वि)–खुला, स्पष्ट।– **माक** (क्रि० वि)–खुले में, चौड़े में, बिना छिपाव के। **–प्पटुत्तु** (क्रि)–राज खोलना, भंडाफोड़ करना। दे० 5

492. **पक्क-म्** (सं)–पक्ष-बग़ल, पास; पन्ना, पृष्ठ। **–त्तिल्** (क्रि. विप) पास, निकट। दे 503

493. **पक्का** (वि)—पक्का—बड़ा (जैसे पक्का पटि –बड़ा 'पटि' का नाप, जो एक किलो के लगभग होता है); बहुत बड़ा, (जैसे पक्का चोर आदि); पुख़्ता, बढ़िया (मकान, काम आदि)।

494. **पक्किरि** (सं)—फ़कीर—भिखारी (प्रायः जो साधु वेश में हो)।

495. **पक्कुव-म्** (सं)—पक्व—परिपक्वता, प्रौढ़ता (maturity); पूर्णता, तैयारी। **०अटै** (क्रि)–प्रौढ़ होना, अनुभवी होना। **–प्पटु** (क्रि.अक०)। **–प्पटुत्तु** (सक०)–जैसे बोने के लिए खेती, खाने के लिए भोजन तैयार करना, काम ठीक करना; खाल आदि को उपयोग के लिए तैयार करना। **–प्पट्ट** (वि)–अनुभवी, परिपक्व, पौढ़; तैयार। **–मान** (वि) –तैयार; उचित (अवसर आदि); अनुभवपूर्ण, प्रौढ़। **–माक** (क्रि०वि) तैयार; औचित्य के अनुसार, समयानुकूल। **०इल्लात** (वि) –अनुभवहीन; अकाल ही; कच्चा।

496. **पचु** (सं)—पशु—गाय। दे० 653। **०वतै** (सं)–गोवध। द्र० पशु –म०।

497. **पजनै** (सं)—भजन (उ० ब–) कई व्यक्तियों का गोष्ठी में 'कीर्तन' गाना। **०चेंय्** (क्रि) (मु०) –राग अलापना (मु०)।

498. **पजारि** (सं)—बाज़ारी—(उ० ब-) बदचलन औरत।

499. **पटाटोप-म्** (सं)—पटाटोप (पट ? +आटोप)—ठाट-बाट, शान, आडंबर। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

500. **पटि** (क्रि)–पठन–अध्ययन करना; शिक्षा पाना; वाचना करना; पढ़ना; सीखना। **०प्पिनै** (सं) (मु०)–सीख, शिक्षा। **०प्पकम्** (सं)–वाचनालय। **०प्पु** (सं)–अध्ययन, शिक्षा, पढ़ाई। **०त्तल्** (सं)–वाचन, पढ़ना, पढ़ने की क्रिया। दे० 731

501. **पटुता** (सं)—पर्दा—टाट का पर्दा, चिक आदि। द्र० पड़दा गु०।

502. **पट्चणम्** (सं)–भक्षण–(उ० बट्–) नाश्ता, खाग की चीजें। **०पण्णु** (क्रि) (मु०)–निगल जाना, (पैसा) खा जाना आदि।

503. **पट्च-म्** (सं)—पक्ष–पक्ष, पखवाड़ा। ०(क्रि. वि)–अवस्था में, **एँन्र०**–उस हालत में, **अतिक** (अधिक) ०–अधिकतर, अधिक से अधिक, **कुरैंत०**–कम से कम। **–पातम्** (सं)–पक्षपात। दे० 492

504. **पट्टुवाटा** (सं)–बटवारा–पैसों का भुगतान; (डाक आदि का) वितरण, बाँटना; चुकता करना। द्र० बटवारा–मर०।

505. **पण-म्** (सं)—पण—धन; दौलत। –(वि)–धन-दौलत संबंधी।

506. **पणयम्** (सं)—पण (या) पण्य—दाँव। **०वै** (क्रि) दाँव लगाना।

507. **पतम्** (सं)—पद-पद, शब्द। **०पिरि** (क्रि) संधि विच्छेद करना।

508. **पतवि** (सं)—पदवी–स्थिति, स्तर (Position); ओहदा। मेरा लड़का अच्छी—में है।

509. **पत्तिनि** (सं)—पत्नी–पतिव्रता नारी, सती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

510. **पत्तिर-म्** (सं)––पत्र––पत्र (bond, document) पट्टा; रुक्का द्र० 134।
(सं)––भद्र –(उ०बदिद–) हिफ़ाज़त, सुरक्षा। **–मान** (वि), **माक** (क्रि) दे० 490. द्र–भद्रत-म०।

511. **पत्तिरिकै** (सं)–पत्रिका––पत्रिका (magazine); निमंत्रण-पत्र।

512. **पयणम्** (सं)–प्रयाण––रात्रा। कभी-कभी, **पयणि** –प्रयाणी-यात्री।

513. **पयपक्ति** (सं)–भय+भक्ति––(उ० बय बक्ति) श्रद्धा-भक्ति, श्रद्धा (revengence)। (∠**पयम्-भय**)।

514. **परंपरै** (सं)–परंपरा––पीढ़ी; वंश क्रम। **पारंपरिय-म्** आनुवंशिकता (heritage, haredity)। दोनों शब्दों में क्रमशः **०याक,**–माक (क्रि० वि)–अनुवंश से; पीढ़ियों से, पीढ़ी दर पीढ़ी। क्रमशः–**यान, –मान** (वि)–आनुवंशिक; पूर्वज संबंधी।

515. **परतेची** (सं)––परदेशी––भिखारी।

516. **पर-मन्** (सं)––परम––ईश्वर। **–मेचुवरन्** (सं) –परमेश्वर, शिव। **–मपिता** (सं) 'कर्त्ता', दे० 176

517. **परवच-म्** (सं)–परवश–प्रफुल्लता, आनन्द। **–मटै** (क्रि)–आनंदाभिभूत होना; अत्यधिक प्रसन्न होना। **आनंत०** (सं) –आनंदातिरेक। **–मान** (वि), **माक** (क्रि० वि)।

518. **परवा** (क्रि० वि)––परवाह––प्रायः **इल्लै** –कोई बात नहीं, ठीक है, सामान्य है आदि, **चिनिमा०** (सिनेमा ठीक, अच्छा है), **पेना०** (पेन अच्छा, सुन्दर है। **नोयाळि०** (मरीज ठीक, स्वस्थ है) आदि।

519. **पराक्कु** (सं)–पराक्–प्रायः **०पार्** (क्रि) (मु०)–इधर-उधर देखना; मुख्य कार्य से हट जाना। द्र० पराङ्मुख।

520. **परारि** (क्रि० वि)––फ़रार––लापरवाह, बेफ़िक्र; ग़ैर ज़िम्मेदार, विमुख, छड़ा। **०याक** (क्रि० वि), लड़का (घर की ओर से) 'परारियाक' है। द्र० परारि––फ़रार –ते०।

521. **परिकाचम्** (सं)––परिहास––मजाक, व्यंग्य।

522. **परिकारम्** (सं)––परिहार––प्रायश्चित, अपकार दूर करना (to amend)।

523. **परिचारक-न्**––परिचारक––रसोइया, पंगत में परोसने वाला। **–म्** (सं) रसोइये का पेशा।

524. **परिची-लनै** (सं)––परिशीलन––जाँच, तहकीकात, किसी विषय पर अच्छी तरह विचार करना, जिससे निर्णय बन सके। **–लि** (क्रि)।

525. **परिचुत्त-म्** (सं)––परिशुद्ध––निष्पाप, पवित्र, निष्कलंक, निर्मल; बहुत साफ़, पवित्र। **–मान** (वि), **माक** (क्रि० वि)।

526. **परिचो-तने** (सं) परिशोधन––प्रयोग (experiment) जाँच। **०चेँय्** (क्रि) –प्रयोग करना, परीक्षा करना। **– ति** (क्रि) –जांच करना; (ईश्वर द्वारा) परीक्षा करना। दे० 363। **–तकर** (सं)–प्रयोग कर्ता; जाँच करने वाला, इंस्पेक्टर, **टिक्कट्टु०** (सं)–टिकट चेकर।

527. **परिणाम-म्** (सं)–परिणाम––विकास (evolution)। **–क्कोळकै** (सं) –विकासवाद। द्र० परिणाम, सं०, म०, ते०।

528. **परितवि~तवि** (क्रि)––परिताप, ताप––(ग़रीब, रोगी, अनाथ का) कष्ट भोगना, परेशान होना; छटपटाना; झुलसना; प्यास आदि इच्छाओं से तड़पना।

529. **परिताप-म्** (सं)––परिताप––तरस, सहानुभूति; पश्चात्ताप। **–प्पटु** (क्रि) –सहानुभूति रखना; पछताना; द्रवित होना। **–मान** (वि) –करुण, दयनीय। **–माक** (क्रि०वि) –सहानुभूति उत्पन्न करने वाला, करुण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

530. **परिति** (सं)—परिधि–वृत्त की रेखा, व्यास ।

531. **परिपा-लनम्** (सं)—परिपालन—शासन; (ईश्वर द्वारा) रक्षा करना; प्रशासन । **नकर** (नगर)० (सं) –नगर प्रशासन, नगर निगम । **इष्ट०** (सं) –ईश्वर द्वारा, इष्ट (अच्छे) लोगों की रक्षा, पालन । **–लि** (क्रि) –शासन करना; रक्षा करना ।

532. **परिमित-म्** (सं)–परिमित–थोड़ा कम ।**–मान** (वि)–सीमित, कम । **अ-मान** (वि)– अत्यधिक । **अ०** (भाव०) ।

533. **परिवारम्** (सं)—परिवार—साज-सज्जा (Paraphernalia) । **राज०** (सं) –राजा के महल के या जुलूस के साथ के लोग, सज्जा आदि । द्र० परिवार–सं० ।

534. **परुव (र्व) म्** (सं)—पर्व—यौवन; मौसम ।

535. **पर्त्ति-याक** (क्रि. वि)—भर्ती ?—बदले में, स्थान में; एवज़ में । ० (सं) –स्थानापत्ति । द्र० भर्ति (सं) —एवज़ में, स्थान पर; पूर्ति, भरना (fill in) –क० ।

536. **पलकारम्** (सं)—फलाहार—नाश्ता; व्रत का भात रहित भोजन ।

537. **पलकै** (सं)—फलक—लकड़ी का तख्ता ।

538. **पलवंत-म्** (सं)—बलवंत—(उ० बल) ज़ोर–जबर्दस्ती ।**–माक** (क्रि) जबर्दस्ती से । **–प्पटुत्तु** । (क्रि) जबर्दस्ती करना, बल प्रयोग करना ।

539. **पलित-म्** (सं)—फलित—सही होना, (बात) ठीक निकलना । **–माकु** (क्रि) ।

540. **पव्य-म्** (सं)—भव्य—(उ० ब–) श्रद्धा, आदर । **–मान** (वि)—श्रद्धेय, आदरणीय । **–माय्, माक** (क्रि. वि)–श्रद्धापूर्वक, आदर के साथ ।

541. **पाक-म्** (सं)–भाग–(उ० बा–) भाग; हिस्सा । **–स्तन** (सं)–साझेदार, हिस्सेदार । द्र० भाग –गु० ।

542. **पाक्किय-म्** (सं)–भाग्य—(उ० बा–) किस्मत, भाग्य ।– **चालि** (सं)–भाग्यशाली । **तुर्०** (सं)– दुर्भाग्य, बदकिस्मत । दे० 30

543. **पाचंजर** (सं)–पैसंजर–पैसंजर गाड़ी ।

544. **पाच-म्** (सं०)–पाश–स्नेह, वात्सल्य, ममता ।**–मिल्लात** (वि)–स्नेह हीन, निर्मम ।**–मट्र** (वि)– जिसने मोह-माया त्याग दी है ।

545. **पातै** (सं)—पथ—सड़क; रास्ता ।

546. **पात्तिय-म् (तै)** (सं)–बाध्य (ता)–हक़, अधिकार; जिम्मेदारी, बाध्यता; संबंध । **–प्पट्ट** (वि) –घनिष्ट, संबंधित; हक़दार; जिम्मेदार, बाध्य । दे० 250, 488

547. **पात्तिरम्** (सं)—पात्र—वर्तन; नाटक आदि के पात्र, प्रायः **कता०**; पात्रता, जैसे **नंपिक्कैक्कुप्पा-त्तिरमान** (वि) –विश्वासपात्र (∠नंपिक्कै–विश्वास) ।

548. **पानम्** (सं)–पान–पेय । द्र० पान करना, जलपान ।

549. **पामरन्** (सं)—पामर—आम जनता; गरीब, निरीह जनता, जो समाज के निचले स्तर में है ।

550. **पारा** (सं)—पहरा—चौकीदार; पुलिस की गश्त । **क्कारन्** (सं)–चौकीदार ।

551. **पावनै** (सं)–भावना–(उ० बा–) बहाना; दिखावा, स्वाँग, **०चेय** (क्रि); रूप-रंग, प्रायः **नटै उटै०** –चलन-पोशाक-रूप ।

552. **पाव-म्** (सं)—पाप—पाप; करुणा, दया सूचक विस्मयादि बोधक । **पावि** (सं) –पापी । **–मान** (वि) –करुण, दयनीय, **माक** (क्रि. वि) ।

553. **पाषाणम्** (सं)—पाषाण–जहर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

554. **पिंपम्** (सं)–बिंब–(उ० बिंबम्) प्रतिबिंब ; मूर्ति। **स्वर्ण०** (सं) –सोने की मूर्ति।
555. **पूजै (चै)** (सं)––पूजा––पूजा; मारना (मु०)।
556. **पिन्नम्** (सं)––भिन्न––एक से कम की संख्या, कोई दशमलव संख्या (गणित)।
557. **पिरकटनम्** (सं)––प्रकटन––घोषणा; प्रतिपादन करना। **०चेंय्** (क्रि)।
558. **पिरका-चम** (सं)–प्रकाश––प्रकाश। **–चि** (क्रि) –प्रदीप्त करना; प्रकाश में आना; प्रकाश में लाना, प्रकाश फैलाना, प्रकाशमान होना।
559. **पिरकारम्** (सं)––प्राकार––मन्दिर की चहारदीवारी के अन्दर, चारों ओर का मार्ग, जिसमें लोग परिक्रमा करते हैं।
560. **पिरकिरुति** (सं)–प्रकृति–गुण, स्वभाव।
561. **पिरक्ञै** (सं)–प्रज्ञा–होश, सुध। **०इल्लात** (वि) बेहोश। **इळ** (क्रि) –होश खोना, बेहोश होना।
562. **पिर-चंकम्** (सं)––प्रसंग––भाषण। **–चंकि** (सं) –भाषणकर्ता, (क्रि) –भाषण करना। **अतिकप्०** (सं) –अधिक+प्रसंग–– बकवास, – – **चंकि** (सं) –बकवास करने वाला, बड़बोला, मनमानी करने वाला, बेवकूफी का काम करने वाला।
563. **पिरचन्न-म्** (सं)–प्रसन्न–भगवान का साक्षात् प्रकट होना। **–माकु** (क्रि) द्र० प्रसन्नवागु (क्रि) –क०
564. **पिरचातम्** (सं)–प्रसाद–मंदिर, पूजा का प्रसाद (अन्न, तुलसी, सिंदूर आदि)।
565. **पिर-चुर-म्** (सं)–प्रचुर ?–प्रकाशन। **–चुरि** (क्रि) –प्रकाशन करना। – – **कर्त्ता** (सं) –प्रकाशक।
566. **पिरच्चिनै** (सं)––प्रश्न––प्रश्न, समस्या। द्र० प्रश्नम्–म०।
567. **पिरतान-म्** (सं)––प्रधान––प्रमुख। –~ **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि)।
568. **पिरतिकारम्** (सं)––प्रतिकार––प्रत्युपकार।
569. **पिरतिपलि** (क्रि)––प्रतिफल––प्रतिबिंबित होना अर्थ, आशय का संकेत होना, झलकना।
570. **पिर-तिष्टै** (सं)––प्रतिष्ठा––मूर्ति की स्थापना, प्रतिष्ठा। **–तिष्टि** (क्रि)।
571. **पिरतेचम्** (सं)––प्रदेश––स्थान, जगह, जो किसी बड़ी जगह का अंग हो; स्थान, इलाका। शरीर का 'प्रदेश', शहर का 'प्रदेश' आदि।
572. **पिरत्तियट्चम्** (सं)––प्रत्यक्ष––प्रत्यक्ष होना, सामने होना।
573. **पिरत्तियेक-माक** (क्रि. वि)––प्रत्येक,––विशेष रूप से, खास तौर से। **–म्** (सं) **–मान** (वि)। द्र० प्रत्येकम् –म०।
574. **पिरपंचम्** (सं)––प्रपंच––विश्व; सारी सृष्टि। द्र० प्रपंचमु –ते०।
575. **पिरपंतम्** (सं)––प्रबंध––काव्य। द्र० प्रबंध काव्य।
576. **पिरपल–म्** (सं)––प्रबल––यश, कीर्ति। **–मान** (वि) **–माक** (क्रि. वि) –ठाट-बाट से, शान से, यशस्वी। **पिरापल्यम्** (सं) –यश।
577. **पिरपु** (सं)–प्रभु–ईश्वर; लार्ड, धनी व्यक्ति। **निलप्०** (सं) –जमीन का मालिक (निलम्-जमीन)
578. **पिरमाणम्** (सं)–प्रमाणे––गवाही, साक्ष्य, सबूत।
579. **पिरमात-मान** (वि)–प्रमाद–बढ़िया, सुन्दर। **–म** (सं) **–इतेंन्न०** –यह कौन बड़ी बात है।
580. **पिरमुकर्** (सं० बहु० आदरार्थ)–प्रमुख –सज्जन व्यक्ति; (नगर के) प्रमुख लोग।
581. **पिरमेयम्** (सं)––प्रमेय––सन्देह, भ्रम; अनुमान; आचार, बहाना।
582. **पिर-मै** (सं)––भ्रम––आश्चर्यचकित होना, आश्चर्य–अविश्वास में स्वप्न की सी अनुभूति। **–मि** (क्रि), **०त्तल** (सं) –आश्चर्यचकित होना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

583. **पिरम्मांटमान** (वि)–ब्रह्मांड—(उ० ब्र)–बहुत बड़ा, विराट, विशाल। **–माक** (क्रि. वि)
584. **पिरया-णम्** (सं)–प्रयाण—सफर। **–णि** (सं)–मुसाफिर।
585. **पिरयो-कम्** (सं)—प्रयोग—उपयोग। **–कि** (क्रि)–उपयोग करना; प्रयोग करना।
586. **परियोजनम्** (सं)—प्रयोजन—उपयोग, फायदा।
587. **पिरस्ता-पनै** (सं)—प्रस्तावना, प्रस्थापन—प्रस्ताव। **–पि** (क्रि) प्रस्ताव करना।
588. **पिरांतीय** (वि)—प्रांतीय—स्थानीय, क्षत्रीय, मंडलीय (zonal)। **०म्** (सं)।
589. **पिरातु** (सं)–फ़रियाद—शिकायत, अपील (petition); मुकदमा। द्र० फिरियादि –प्रार्थना –ते०।
590. **पिराप्तम्** (प्ति) (सं)—प्राप्त, प्राप्ति—किस्मत, भाग्य। प्रायः बदकिस्मत।
591. **पिरायम्** (सं)—प्राय—आयु, वय; समय। **कालैप्** ०(सं) –सवेरे का समय (<कालै-सवेरा)। **इळम्** ०(सं) –छोटी उम्र, छुटपन (<इळम् (वि)–छोटा)।
592. **पिरीति** (सं)—प्रीति—स्नेह, वात्सल्य; प्रिय, पसंद, इष्ट। **०यान** (वि), **याक** (क्रि. वि)। **ईस्वरा इतुताना उनक्कुप्पिरीति** –हे ईश्वर यही तुम्हारी इच्छा है। यही तुम्हें संतोष देता है।
593. **पिरेतम्** (सं)—प्रेत—शव, लाश।
594. **पिरेमै** (सं)—प्रेम—स्त्री-पुरुष का प्रेम-भाव, काम-भावना, लैंगिक आकर्षण।
595. **पिक्कर्ा** (सं)—फिर्का—मुहल्ला, मंडल ; प्रशानिक क्षेत्र –विभाग। एक तहसील में कुछ 'पिक्कर्ा' होते हैं।
596. **पीजम्** (सं)—बीज—(उ० बी–) अंडकोश।
597. **पीट-म्** (सं)—पीठ—पीढ़ा। **–पूमि** (उ० बू–) –पीठ ? + भूमि–पठार।
598. **पीटिकै** (सं)—पीठिका—भूमिका (बाँधना आदि), उपक्रम। **पूर्व** ०(सं) –भूमिका, आमुख। **०पोटु** (क्रि) (मु०) –भूमिका बाँधना, बात चलाना।
599. **पीति** (सं)—भीति—(उ० बी–) आतंक, भयभीत होना। **०अटै** (क्रि)।
600. **पुकार** (सं)—पुकार—शिकायत।
601. **पुटम्** (सं)—पुट—सोने को, शुद्धि के लिए तपाने की क्रिया।
602. **पुष्टि** (सं)—पुष्टि—स्वस्थता, तगड़ापन, डीलडौल। **०यान** (वि) –स्वास्थ्यकर, पोषक; स्वस्थ, तगड़ा। **०याक** (क्रि. वि)। **० कर-म्** (सं) –स्वास्थ्यवर्धक, – – **मान** (वि)।
603. **पूचंति** (सं)—भू+संधि—(उ० बू–) भूडमरू मध्य।
604. **पूज्यम्** (सं)—पूज्य ?—शून्य, सिफ़र। दे० 356
605. **पूतम्** (सं)—भूत—भूत-प्रेत।
606. **पूरा** (वि)—पूरा—सारा। **वीटु पूरा**–सारा घर।
607. **पूर्ण-म्** (सं)—पूर्ण—पूर्णता। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि); मीठे पकवानों में, अंदर जो चीज़ भरी जाती है।
608. **पूर्त्ति** (सं)—पूर्ति—पूरा। **० चेय्** (क्रि) –काम पूरा करना; (फ़ॉर्म) भरना। **० याक** (क्रि. वि) –पूरा, पूर्ण रूप से, **यान** (कि) –पूरा। **०आकु** (क्रि) –काम पूरा होना, खत्म होना।
609. **पेट्टि** (सं)—पेटी—बक्सा, ट्रंक, संदूक; संदूकची, डिब्बा; डिबिया। **अट्टै** (दस्ती) **प्०** (सं) –दस्ती का डिब्बा। **ती** (आग) **प्०** (सं) –माचिस की डिबिया, **चव** (शव) **प्०** (सं)–शव पेटिका, जनाज़ा। **मर** (काठ) **प्०** (सं)—काठ का बक्सा, संदूकची।
610. **पेप्परमिंटु** (सं)—पेपरमिंट—लाइमचूस आदि मीठी गोलियाँ। दे० 651

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

611. **पेजार्** (सं)—बेजार (उ० बे–)–बोर; बेकार, वाहियात। द्र० बेजारु—कन्नड़।
612. **पेतम्** (सं)—भेद—भेदभाव। **जाति मत०** (सं)–जाति, धर्म का भेद।
613. **पेन्** (सं)—फैन—बिजली का पंखा।
614. **पेमानी** (सं)—बेमानी—(उ० बे—) बेईमानी, छल-कपट। ० (वि)—बेईमान, छली, धोखेबाज।
615. **पैचल्** (सं)— फ़ैसल—मुकदमे, लड़ाई—झगड़े का फैसला, निपटारा, निपटारा (disposal)
616. **पैचा** (सं)—पैसा—पाई।
617. **पोरुळातार-म्** (सं)— पोरुळ् (धन) + आधार—अर्थ शास्त्र। –(वि) **निलै** (सं)–आर्थिक स्थिति।
618. **पो-तनै** (सं)—बोधन—उपदेश; शिक्षा, पढ़ाई, अध्ययन। **–तना मोळि** (सं) –शिक्षा (के माध्यम) की भाषा। **तुर्प्** ० (सं) कान भरना, पाठ पढ़ाना। **–ति** (क्रि) (मु०) –उपदेश देना; सिखाना; पाठ पढ़ाना (मु०)।
619. **पोतै** (सं)—बोध–(उ० बो–) होश; नशा। **०इळ** (क्रि) –होश खोना (विशेष रूप से मद्य–सेवन, क्रोध से)। **अपोतम्** (सं) –अबोध-मद, नशा; बेहोशी।
620. **मंचम्** (सं)—मंच—पलंग (bed stead)।
621. **मंटलम्** (सं)—मंडल—मंडल (zone); 4० दिन का समय।
622. **मंटि** (सं)—मंडी—बड़ी दुकान; आढ़ती; बाज़ार
623. **मंत-म्** (सं)—मंद—धीमी गति; आलस; मंदी; बहरापन; कुंद अक्ल; **–मान** (वि) –धीमा; आलसी; मंदा; बहरा; जड़। **–माक** (क्रि. वि)।
624. **मंतिर-म्** (सं)—मंत्र—मंत्र; जादू, इंद्र जाल। **–वाति** (सं) –मंत्र+वादी–जादूगर। **०पोटु** (क्रि) (मु०) –मंत्र फूँकना; जादू करना। **मांतिरि-कन्** (सं) –मांत्रिक—झाड़–फूँक करने वाला, **–कम्** (सं)—झाड़-फूँक। द्र० तांत्रिक-हिं।
625. **मक (मा) चूल्** (सं)—महसूल—उपज, पैदावार।
626. **मकत्तान** (वि)—महत्—खास, प्रमुख; महत्त्वपूर्ण
627. **मक्कर** (सं)—मक्कार—गाड़ी आदि का खराब होना; नखरा; असहयोग।
628. **मचाला** (सं)—मसाला—आलू की सब्जी, जो 'मचाल् दोसा' में भरी जाती है; दोसा।
629. **मचोता** (सं)—मसौदा—प्रस्ताव; विधेयक।
630. **मणि** (सं)—मणि—एक रत्न, मणि, घंटा (समय); घंटा; घंटी; दाना। **कंटा०** (सं) –घंटा +मणि—बड़ा घंटा। **०क्कूंटु** (सं) –घंटा-घर। बच्चे की तारीफ का शब्द-मेरा लड़का 'मणि' है।
631. **मतम्** (सं)—मत—धर्म। दे ० 729
(सं)—मद –हाथी का मद; पागलपन; नृशंसता, बर्बरता।
632. **मतु** (सं)—मधु—शराब, मद्य; शहद (काव्य में)।
633. **मत्ति** (सं)—मध्य—(उ० मद्दि) मध्य, बीच। **०य** (वि) –केंद्रीय (जैसे केंद्र सरकार आदि)।
634. **मननम्** (सं)—मनन—रटना। दे० 635
635. **मनप्पाटम्** (सं)—मन+पाठ—रटना, कंठस्थ करना। दे० 634
636. **मनप्पूर्व-माक** (क्रि. वि)—मन+पूर्व—पूरे मन से, दिल से, पूरी इच्छा से। **-म्** (सं)।
637. **मनस्ताप-म्** (सं)—मनस्ताप—मनमुटाव; विरोध।
638. **ममतै** (सं)—ममता—घमंड।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

639. **मरामत्तु** (सं)—मरम्मत–सार्वजनिक निर्माण कार्य । दे० 129

640. **मरियातै** (सं)—मर्यादा—आदर। **०यान** (वि), **याक** (क्रि. वि)। **अव०** (सं) –अनादर, **० यान** (वि), **०याक** (क्रि. वि) दे० 101

641. **मरुम (र्म)-म्** (सं)—मर्म—राज, रहस्य । **–नावल्** (सं) –जासूसी उपन्यास, रोमांचकारी उपन्यास ।

642. **मलम्** (सं)—मल—गूह ।

643. **मात्तिरै** (सं)—मात्रा—दवाई की गोली ।

644. **मानचीक-म्** (सं)—मानसिक—मन; अप्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना । **–मान** (वि) –काल्पनिक; मानसिक । **–माक** (क्रि. वि) –कल्पना से; मन में, मन ही मन ।

645. **मानिय-म्** (सं)—मान्य—दान, अनुदान; राजाओं द्वारा विद्वानों को दी जाने वाली (भू) संपत्ति । **–तार्** (सं) –वह व्यक्ति जिसने मानियम् ग्रहण किया हो ।

646. **मामला** (सं)—मामला—झगड़ा, कलह, संघर्ष ।

647. **मामा** (सं)—मामा—मामा; ससुर; बड़ों का आदरपूर्वक सामान्य संबोधन। **मामन्** (सं) –मामा; ससुर । **मामनार**–ससुर ।

648. **मामि** (सं)—मामी—मामी; सास; बड़ों के लिए संबोधन। **०यार्** (सं) –सास ।

649. **मामू-ल** (सं)—मामूल—रिवाज़; रिश्वत; किसी कार्य के लिए बँधी हुई रकम। **–लान** (वि), **लाक** (क्रि. वि) ।

650. **मिक्चर** (सं)—मिक्सर—दाल सेव की तरह कई पदार्थों का नमकीन; अस्पताल की दवाई ।

651. **मिट्टाय्** (सं)—मिठाई—लाइमचूस आदि मीठी गोलियाँ; टॉफ़ी आदि । दे० 610

652. **मित-म्** (सं)—मित—किफ़ायत, उचित खर्च। **–माक** (क्रि. वि), **मान** (वि)। **अ०** (सं) –अमित, अधिक का भाव, **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि) –बहुत अधिक, बेहद ।

653. **मिरुक-म्** (सं)—मृग—पशु, जानवर। –(वि)–पशुओं का, पशु-संबंधी; पाशविक, निर्दय । **–त्तन-म्** (सं) –पशुत्व, पाशविकता, नृशंसता,– **–माक** (क्रि. वि) –पाशविकता से, नृशंसतापूर्वक, निर्दयता से; पशु की तरह, **मान** (वि) । **–पलम्** (सं) –मृग+बल—(उ० बलम्) पशु बल । दे० 496. द्र० मृग—सं० ।

654. **मिल्** (सं)—मिल—धान आदि कूटने –पीसने की चक्की । **मावु०** (सं) –चक्की, आटे की चक्की ।

655. **मुंट-म्** (सं)—मुंड—सिर विहीन शरीर; विवस्त्र रूप, नंगा। **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि) ।

656. **मुकरै** (सं)—मुखड़ा—चेहरा, सूरत; ठोड़ी; 'दुम' की तरह एक झिड़की ।

657. **मुकस्तुति** (सं)—मुख+स्तुति—खुशामद, मुँह पर तारीफ़ ।

658. **मुकांतर-म्** (सं)—मुख+अंतर—द्वारा, मार्फ़त । **–माक** (क्रि. वि) ।

659. **मुक्किय-म्** (सं)—मुख्य—मुख्यता, प्रमुखता; विशिष्टता, खासियत। –~– **मान**, **–प्पट्ट** (वि) –मुख्य; ज़रूरी; विशिष्ट।—**त्तुवम्** (सं) –मुख्यत्व, प्रधानता, प्राथमिकता। **–स्तन्** (सं)– मुख्य+स्थ— नेता; अध्यक्ष; प्रमुख व्यक्ति, VIP ।

660. **मुत्तिरै** (सं)—मुद्रा—मुद्रा, सील (seal), मुहर ।

561. **मुनि** (सं)—मुनि—एक प्रकार का ग्रामीण, अपदेवता, जो लोगों को मारता है। **०वन्** (सं) – ऋषि, मुनि– **० वर्** (बहु० आदर)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

662. **मुन्चीप्पु** (सं)——मुन्सिफ़——(उ० मुन्सी–) मुखिया, प्रायः **किराम०** –ग्राम+मुंसिफ़ –गाँव का मुखिया; मुंसिफ़ अदालत का जज ।

663. **मूट-न्** (सं)——मूढ़——वेवकूफ़ । **–त्तनम्** (सं) –वेवकूफ़ी । **–नंपिक्कै** (सं) –अंध विश्वास ।

664. **मूर्क्क-न्** (सं)——मूर्ख——क्रूर, निर्दयी व्यक्ति । **–त्तनम्** (भाव०) –क्रूरता, वर्वरता । दे० 92, क 27

665. **मूलकम्** (सं)——मूलक——मूल पदार्थ (element–रसायन०); मार्फ़त ।

666. **मूल-म्** ~ **–माक** (क्रि. वि)——मूल –माध्यम से, मार्फत, द्वारा । –(वि) –मूल, आदि (कारण) आदि । ०(सं) –एक प्रकार का रोग; मूल नक्षत्र; जड़, आदि कारण । **–तनम्** (धन) (सं)– पूँजी (द्र०मूलधन –सं) । **निर्०** (सं०) –पूर्ण रूप से नष्ट होना, समूल नष्ट होना, – –**माकु** (क्रि) ।

667. **मैतानम्** (सं)——मैदान——खेल का मैदान । दे० 105

668. **मो-कम्** (सं)——मोह,लालसा; काम, आसक्ति, स्त्री लोलुपता. ; धुन, खतूत (craze), जैसे **नाकरिक०**——फैशन का मोह, फैशन का फितूर । **अपार०**–अधिक, प्रवल इच्छा, लालसा । **पण०**– धन की लालसा आदि । **–कि** (क्रि) –आसक्त होना । दे० 105

669. **मोट्ट्टार** (सं)——मोटर——वस, कार, ट्रक आदि चलने वाले यांत्रिक साधन ।

670. **यतार्त्त–माक** (क्रि. वि)——यथार्थ——साधारण रूप से, सहज भाव से, विना विशेष अर्थ या प्रयोजन के, यों ही जैसे, मैंने यों ही पूछा तो नाराज हो गये । **–म्** (भाव)

671. **यतेच्चै** (सं)——यथेच्छा——स्वतंत्रता; निर्वंधता जैसे, जंगल में शेर 'यथेच्छा' से विचरते हैं; संयोग (जैसे, संयोग से मिल जाना) । **–याक** (क्रि. वि) स्वतंत्रता से, स्वाधीनता से; संयोगवश । **यतेच्चाति-कारि** (सं)—— यतेच्छा+अधिकारी –स्वेच्छाचारी, (autocrat), **–कारम्** (सं) स्वेच्छाचार, मनमाना शासन, व्यवहार आदि ।

672. **याचक-म्** (सं)——याचक——भीख माँगना; याचना करना, प्रार्थना करना । **–न्** (सं) –याचक । **याचि** (क्रि) ।

673. **यातास्तु** (सं)——याददाश्त ?——घोषणा, घोषणा–पत्र । द्र० यादास्तु –याचिका, प्रार्थना-पत्र–म० ।

674. **युत्तम्** (सं)——युद्ध——(उ० युद्दम्) युद्ध, लड़ाई; हाथापाई, बच्चों की लड़ाई ।

675. **यूक-म्** (सं)——ऊह——अनुमान, युक्ति, चातुर्य । **–माक** (क्रि. वि) चातुरी से, कुशलता से । **यूकि** (क्रि)——अनुमान करना, अंदाज लगाना ।

676. **योक-म्** (सं)——योग, –भाग्य; किस्मत । **——चालि** ~– **क्कारन** (सं) –भाग्यशाली (सं) योग——योग शास्त्र ।——**आचनम्** (सं)——योगासन । **योकि** (सं) –योगी ।

677. **योक्किय-न्** (सं)——योग्य (उ० योग्गि–) ईमान्दार, विश्वासपात्र । **–म्** (भाव) ईमानदारी, विश्वस्तता । **अ०**——वेईमान, कपटी, धूर्त । **–त्तनम्** (भाव) । दे० 72

678. **योक्किय-ताम्चम्** (सं)——योग्यता+अंश——(उ० योग्गि–) अर्हता (नौकरी के लिए) ।**–तै** (सं)– योग्यता–काबिलियत । मुझसे बात करने की तुम्हारी क्या०है–तुम किस मुंह से मुझसे बात करोगे ।

679. **योचनै** (सं)——योजना——विचार, चिंतन; योजना की दूरी । **योचि** (**जि**) (क्रि)–सोचना, विचार करना । **मुन्** ०–दूरदर्शिता । **तीविर०**–गहन चिंतन ।

680. **रच-म्** (सं)——रस——इमली का पानी, जो चावल के साथ खाया जाता है ; रुचि; शीशे की कलई । **–मान** (वि) –रोचक, **माक** (क्रि. वि)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

681. **रचि** (सं)—रस—रस लेना, रुचि लेना। **रचनै** (सं) –रसना –रस लेना, आस्वादन करना; रसिकता। **०–कन्** (सं) रसिक।

682. **रट्-चै** (सं)—रक्षा—तावीज; पुण्य तीर्थों का रक्षा –सूत्र, रक्षा। **–चि** (क्रि)—रक्षा करना। **पात** (पाद) ० –चप्पल, खड़ाऊँ आदि। द्र० पाद त्राण।

683. **रम्मिय-मान्** (सं)—रम्य—लुभावना, मन मोहक; सुन्दर, आकर्षक। **–म्** (सं)। प्रायः **मनो०** (सं), – **–मान,** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

684. **रवै** (सं)—रवा, रवा, सूजी; बारूद; बंदूक की गोलियाँ। **०याक** (क्रि. वि) –रवे की तरह मोटा (पीसना, कूटना आदि)

685. **राकम्** (सं)—रागम्, संगीत का राग। **–तुवेषम्** (सं)–राग द्वेष।

686. **राचि** (सं)—**राशि**—भाग्य; मेष आदि 12 राशियों (फलित ज्योतिष); **०पलन्**—राशि फल। **कै०** (हाथ)०—किस्मत, भाग्य। **मुक** (मुख) ० –सुन्दरता; किस्मत। **०यान** (वि), **याक** (क्रि. वि) –किस्मती।

687. **राजां (चां) कम्** (सं)—राज्यांग—सरकार; शासन, हुकूमत।

688. **राजीनामा** (सं)—राजीनामा—इस्तीफा। प्रायः **राजि** --इस्तीफा।

689. **रीति** (सं)—रीति—विधि, प्रकार; रिवाज; रूप (में), हैसियत।

690. **रुचि** (सं)—रुचि—(उ० रुजि भी) स्वाद, जायका।

691. **रुजु** (सं)—ऋजु (उ० रुजु)—सबूत, प्रमाण। **–प्पटुत्तु** (क्रि) –साबित करना। **–वाकु** (क्रि.) –प्रमाणित होना। द्र० ऋजुवु–ते०।

692. **रेकै** (सं)—रेखा—हाथ की रेखा। ० **जोचियम्**—हस्तरेखा शास्त्र; (कर्क, मकर, अक्ष), रेखा।

693. **रेक्कु** (सं)—रेख—प्रायः **तंक०** (∠तंकम्-सोना) –सोने का वर्क।

694. **रेषन** (सं)—राशन—कंट्रोल, राशनिंग। **०कटै**—कंट्रोल की दुकान, जहाँ राशन मिलता है।

695. **रैयत्तु** (सं)—रैयत—किसान।

696. **रोक्क–म्** (सं)—रकम—कुल धन, मीजान; धन, धन राशि; एक मुश्त राशि; नगद। **–वियापारम्**—थोक व्यापार। **–माक** (क्रि. वि) कुल; नगद में।

697. **रोट्टि** (सं)—रोटी—पाव रोटी।

698. **रोच-म्** (सं)—रोष—गुस्सा, तेहा; स्वाभिमान। **–माक** (क्रि. वि) गुस्से में। **–क्कारन्** (सं-पु) स्वाभिमानी; तेही। **—क्कारि** (सं-स्त्री)

699. **लकान** (सं)—लगाम, घोड़े की लगाम।

700. **लक्नम्** (सं)—लग्न –(उ० लग्नम्) विवाह का समय, शुभकाल। कर्क, मकर आदि राशियों के उदय का समय, जो हर दिन आता है (ज्योतिष)

701. **लट्चण-म्** (सं)—लक्षण—सौंदर्य; लक्षण –गुण। दे० 127। **–मान** (वि), **–माक** (क्रि· वि) –सुन्दर; अच्छा। **अव०** –कुरूपता, – **–माक** (क्रि. वि), **मान** (वि) –असुन्दर

702. **लट्चिय-म्** (सं)—लक्ष्य—ध्यान, परवाह, लक्ष्य, दे० 875: उद्देश्य, आदर्श। **–पुरुषन्**–आदर्श व्यक्ति, **वाल्क्कै** (सं)—आदर्श जीवन। **वाल्क्कै ०** –जीवन का उद्देश्य, आदर्श। **०चेय्** –ध्यान देना, आदर करना।

703. **लयम्** (सं)—लय—तन्मयता, तल्लीनता (harmony)। **लयि** (क्रि) –तन्मय होना, लीन होना निमग्न होना, आनंद मग्न होना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

704. **लवंकम्** (सं)—लौंग—दाल चीनी।

705. **लाकव-माक** (क्रि. वि)—लाघव—कुशलता से, मौके से। **–म्** (सं) –कुशलता, होशियारी, कार्य में हाथ की सफाई। **कैलाकु** (सं) –हाथ मिलाना। द्र० हस्त लाघव।

706. **लाट्टरि** (सं)—लॉटरी—लाटरी; फ़ाका, बेकारी।

707. **लाला** (सं)—लाला—मिठाई का दूकानदार।

708. **लिंकम्** (सं)—लिंग—शिवलिंग।

709. **लिकितम्** (सं)—लिखित—पत्र; संदेश।

710. **लेवातेवि** (सं)—लेवादेई—लेन-देन का व्यापार, जो देशी बैंक की तरह चलाया जाता है।

711. **लौकीक-म्** (सं)—लौकिक—लौकिक व्यवहार संबंधी। जैसे: शादी की बात में दहेज आदि की चर्चा। –(वि)। दे० 795

712. **वंचक-म्** (सं)—वंचक—धोखा, फ़रेब। **–न्** (सं)–वंचक, छली। **वंचकि** (सं–स्त्री)। **नय०** (भाव)–(वि)—धोखा, ठगी। **वंचि** (क्रि) –ठगना –छलन, धोखा देना।

713. **वंचनै** (सं)—वंचन—पक्षपात, प्रायः **ओर** (बगल, पक्ष) ०। **–चेंय्** (क्रि) –पक्षपात करना।

714. **वंतनम्** (सं)—वदंन—धन्यवाद। **वंतनोपचारम्** –धन्यवाद समर्पण।

715. **वक्कालन्तु**—(सं)—वकालत—किसी का पक्ष लेना, पक्ष में होना। **–वांकु** (क्रि) –पक्ष लेना (मु०)। द्र० **वक्कील्** –वकील।

716. **वक्किर (क्र)-म्** (सं)—वक्र—अंगहीनता; कुरूपता। स्वभाव की वक्रता। **–माक** (क्रि. वि)–व्यंग्य से, चातुर्य से (बोलना आदि)। **–मान** (वि)।

717. **वच-म्** (सं)—वश—पास; वश। **कै०**–के पास। - - **त्तिलइल्लै** वश में नहीं है, होश में नहीं है। **–माक** (क्रि. वि)–अच्छी तरह; मौके से। **–प्पटुत्तु** (क्रि) –कब्जे में करना; अपना; अर्पित करना। **—प्पटु** (क्रि) –वशीभूत होना; कब्जे में आना, फंसना। **–मान** (वि) –अच्छा, बढ़िया; सुविधाजनक। **तन०** –स्वत्व-बोध, ० **इल**—होश होना।

718. **वचिय-म्** (सं)—वश्य—सम्मोहन, वशीकरण। **–मंतिरम्**–मोहन मंत्र। **–प्पटुन्तु** (क्रि)–अपना बना लेना; मोहित, कर देना, सम्मोहन, वशीकरण करना।

719. **वचीकर-म्** (सं)—वशीकर—लुभावना सौंदर्य, अत्यधिक सौंदर्य। **–मान** (वि)।

720. **वज्रम्** (सं)—वज्र—सरेस।

721. **वतै** (क्रि)—वध, परेशान करना, कष्ट देना, जैसे छोटे बच्चों को परेशान करना; हिंसा करना मारना।० (सं) परेशानी; कष्ट; वध, जैसे, **पचुवतै**—गोवध। दे० 125

722. **वत्ति** (सं)—बत्ती—(अगरु) बत्ती। **अकर्०, ऊतु०** –अगर बत्ती, ऊद बत्ती।

723. **वम्च-म्** (सं)—वंश—(उ० वम्सम्) खानदान। कुल, परिवार। **–परंपरै** (सं) वंशावली; परिवार की कई पीढ़ियाँ, ० **याक** (क्रि. वि) –वंशानुक्रम में पीढ़ी दर पीढ़ी।

724. **वर्क्क-म्** (सं)—वर्ग –(उ० वर्गम) संख्या का घात (10^2, 100^2, आदि); वर्ग (square)। **–ऍण**–वह संख्या जो किसी संख्या के वर्ग करने पर मिली है। **–मूलम्** (सं)–संख्या के वर्ग होने की मूल संख्या, वर्गमूल (square root) (∠ऍण्–संख्या)।

725. **वर्ण-म्** (सं)—वर्ण—रंग। द्र० विवर्ण।–(वि)– रंगीन, रंग संबंधी। **वर्णाचिरम्** (सं)–वर्णाश्रम।

726. **वर्षातिर** (वि)—वर्ष+अंतर—वार्षिक; सालाना। ०**म्** (सं) वार्षिक समारोह।

727. **वस्तातु** (सं)—उस्ताद—पहलवान, मल्ल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

728. **वांचै** (सं)—वांछा—स्नेह, वात्सल्य । **०यान** (वि), **याक** (क्रि. वि) ।

729. **वाक्कु** (सं)—वाक् —वक्तव्य (statement) जो दर्ज कर लिया जाता है; वादा, मत (वोट)। **०मूलम्** (सं) –वक्तव्य, कलमबंद–बयान । **वाक्कळि** (क्रि) वादा करना, प्रतिज्ञा करना; मत देना (∠अळि-देना) । **वाक्काळर्**-मतदाता । **० वातम्** –वाक्+वाद –वाद विवाद, तर्क, बहस । **०मीरु** (क्रि) –मुकरना । **तेव०** (देव) ० (सं) –देव वाणी; अनुल्लंघ्य बात । दे० 631

730. **वाचनै** (सं)—वासना—गंध, सुगंध । **० त्तैलम०** (सं) सुगंधित तेल । **० त्तिरवियम्** (सं)–० +द्रव्य –मसाला (spices) ; इत्र आदि सुगंधित चीजें –दे० क 11 । **दुर्०**: (सं) –दुर्गंध । द्र० वासन-म०, ते० ।

731. **वाचि** (क्रि)—वाचन—पढ़ना, अध्ययन करना । **०प्पु, त्तल्** (सं) । **वाचक-न्** (सं)–वाचक-पाठक, **–र्** (बहु०), **–चालै** (सं)–वाचनालय, दे० 510, **–म्** (सं)–पाठ, मजमून (text), वस्तु; रीडरें ।

732. **वा-तम** (सं)—वात—गठिया रोग । **पक्क०** –पक्षाघात । दे० 492 ।
(सं) –वाद—वाद, बहस; तर्क करना, तर्क; सिद्धांत । मत; पक्ष । **–ति** (क्रि) बहस करना; तर्क करना; अपनी बात मनवाने का यत्न करना, ० (सं) समास में वादी, जैसे चंतर्प्पवाति (दे० 247) ; मुद्दई, वादी, **पिरति०** (सं)–मुद्दालेह, प्रतिवादी ।

733. **वातनै** (सं)—यातना, वेदना ?—वेदना, व्याकुलता । द्र० यातन –म० व्याकुलता । **–०याक** (क्रि. वि) ।

734. **वात्तियार** (सं)—उपाध्याय—(उ० वाद्दि–) अध्यापक; पुरोहित । **उपात्तियायम्** –पुरोहिती ।

735. **वायु** (सं)—वायु—वायु का रोग, पेट की वायु । ० **वेकम्** (सं) –वायुवेग ।

736. **वाय्ता** (सं)—वायदा—(उ० वायदा) सुनवाई (मुकदमे की); किस्त, लगान ।

737. **वार-म्** (सं)—वार–हफ्ता । द्र० इतवार; सोमवार आदि । **–~–वारांतिर** (वि) –हफ्ते का ।

738. **वात्तें** (सं)—वार्ता—शब्द । **केट्ट** (बुरा)० –गाली । **०तवरु** (क्रि) –मुकरना, वादा खिलाफी करना । (∠तवरु) (क्रि)—उल्लंघन करना)

739. **विकर्प** (ल्प)**-म्**—(सं)—विकल्प–खटका, आशंका, अन्यथा समझना, आशंकित होना । **–माक** (क्रि. वि), ० **निनैक्काते**—गलत न समझो, अन्यथा न समझो । द्र० विकल्प –सं०

740. **विकचि** (क्रि)—विकास—फूल का खिलना । **०त्तल्** (सं)

741. **विकारम्** (सं)—विकार—कुरूपता, असुन्दरता, बेडौलता । **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि) ।
(सं) –विहार–, बौद्ध विहार ।

742. **विक्किर**(**क्र**)**कम्** (सं)—विग्रह—(उ० विग्र–) मूर्ति (प्रायः भगवान, देवों की) ।

743. **विचन-म्** (सं)—व्यसन—दुख; शोक । **–नि** (क्रि) ।

744. **विचा-रणै** (सं)—विचारण—(उ० विज-भी) सोच-विचार, मंत्रणा; पूछताछ; जाँच-पड़ताल; तहकीकात । **–रि** (क्रि) –सोचना; पूछना; जाँच करना ।

745. **विचार-म्** (सं)—विचार (उ० विजा–भी) चिंता; व्याकुलता । **–माक** (क्रि. वि) चिंताकुल **निर्०** (सं) –निश्चितता, निर्लिप्तता, - **–मान** (वि), **माक्** (क्रि, वि) –निश्चित, अलिप्त ।

746. **विचाल-म्** (सं)—विशाल—(घर-मकान के संदर्भ में) विशालता; (मन की) उदारता । **–मान** (वि), **–माक** (क्रि. वि) –विशाल, फैला हुआ (spacious) ।

747. **विचित्तिर-म्** (सं)—विचित्र—ताज्जुब, आश्चर्य, आश्चर्यजनक वस्तु या घटना; मनोरंजक वस्तु या घटना । **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि) –आश्चर्यजनक, विचित्र । द्र० विचित्रशाला (विरल)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

748. **विचुवाच-म्** (सं)—विश्वास—वफ़ा; ईमानदारी, कृतज्ञता। **एँजमान०** –नमक-हलाली, मालिक के प्रति वफ़ादारी। **–मान** (वि)–कृतज्ञ, ईमानदार, **माक** (क्रि. वि)।० **इल्लात** (वि) –कृतघ्न। प्रायः **नन्रि०** (∠नन्रि—कृतज्ञता) दे० 96

749. **विचेष-म्** (सं)—विशेष—त्योहार, पर्व आदि ; मुख्यता, विशेषता; श्राद्ध (सीमित प्रयोग)

750. **विजयम्** (सं)—विजय—कहीं जाना (visit); यात्रा। **तिक्** (दिक्)० –दिग्विजय।

751. **विञ्ञापन-म्** (सं)—विज्ञापन—पत्र अर्ज़ी।

752. **विण्णप्पम्** (सं)—विज्ञप्ति, विज्ञप्त—अनुरोध, प्रार्थना; पत्र; प्रार्थना-पत्र, अर्जी।

753. **वितंटावातम्**—वितंडा+वाद—बेकार की बहस, 'कुतर्क्कम्'।

754. **वित-रणै** (सं)—वितरण—शऊर, सलीका, शिष्टाचार। **–याक** (क्रि. वि)। **–रि** (क्रि) वितरण करना, बाँटना। दे० 758

755. **विति** (सं)—विधि—होनहार, नियति, नियम। दे० 468। **तलै०** –बदकिस्मत, होनी (∠तलै –सिर)। **चालै०** –सड़क के नियम। ०(क्रि)–आदेश देना, निर्णय करना, फैसला करना। **तंटनै०** (क्रि) –दंडित करना, दंड देना।

756. **वित्तै** (सं)—विद्या—(उ० विददै) –जादू का खेल, करतब, खेल। द्र० विद्य –जाद; करतब–म०। **०क्कारन** –जादूगर, बाजीगर। द्र० जाल विद्या।

757. **विनय-म्** (सं)—विनय—आज्ञाकारिता। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

758. **विनयो-कम्** (सं)—विनियोग—मंदिर में प्रसाद (अन्न) का वितरण; चीजों का वितरण करना, पूर्ति (supply)। **–कि** (क्रि)। दे० 754

759. **विनोत-म्** (सं)—विनोद—आश्चर्य, कमाल। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

760. **विपच्चारि** (सं)—व्यभिचारी—बदचलन औरत; वेश्या।

751. **विपरीत-म्** (सं)—विपरीत—अनहोनी, दुर्घटना। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

762. **विपूति** (सं)—विभूति—भभूत।

763. **विमरि-चनम्** (सं)—विमर्शन—आलोचना; समीक्षा, तारीफ़ (करना)। **–चकन्** (सं), **चकर्** (सं–बहु०)–आलोचक, समीक्षक। **–चि** (क्रि) –तारीफ़ करना **–०चेंय्** (क्रि) –आलोचना करना; व्याख्या करना। दे० 117

764. **विमरिचै** (सं)—विमर्श—ठाट, शान; बढ़िया ढंग। ० **याक** (क्रि. वि), **यान** (वि)।

765. **विमोचनम्** (सं)—विमोचन—मुक्ति, छुट्टी, छुटकारा (कष्ट आदि से)।

766. **वियाक्कियानम्** (सं)—व्याख्यान—टीका; भाषण।

767. **वियाचम्** (सं)—व्यास—निबंध। द्र० व्यासमु–ते०।

768. **वियाज-म्** (सं)—व्याज—बहाना। **–माक** (क्रि. वि)–बहाना बनाकर। द्र० व्याज –स्तुति, निंदा।

769. **वियापा-रम्** (सं)—व्यापार—व्यापार, तिजारत। **–रि** (सं) –व्यापारी।

770. **विरच-म्** (सं)—विरस—भद्दापन, अश्लीलता, अशिष्टता। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)।

771. **विरत-म** (सं)—व्रत—अन्न रहित व्रत, उपवास। **उण्णा०** –अनशन (∠उण् (क्रि) –खाना)

772. **विरय-म्** (सं)—व्रय—बर्बादी; अधिक, अनावश्यक खर्च (पैसा, सामान आदि)। **–माक** (क्रि. वि)–अधिक, अनावश्यक। **–माक्कु** (क्रि) –चीज़ें बर्बाद करना, अंधाधुंध खर्च करना।

773. **विरुत्तम्** (सं)—वृत्त—वृत्त छंद।

774. **विरुत्तांतम्** (सं)—वृत्तांत—विस्तृत वर्णन, ब्योरा, आख्यान, कहानी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

775. **विर्पन्नन्** (सं)—व्युत्पन्न—होशियार, निपुण, कुशल व्यक्ति। द्र० व्युत्पन्न मति।

776. **विलाचम्** (सं)—विलास ?—भवन; पता। **मेता** (मेधा) ० –प्रतिभा। **मुक** (मुख) ०–चेहरा; सौंदर्य।

777. **विवकारम्** (सं)—व्यवहार—मामला, विवाद; झगड़ा, अनबन; मुकदमा, मामला, जैसे **वीट्टु०** ० –घर का मामला। **पोतु** ० –सार्वजनिक कार्य। **वेंळिनाटटु०** –विदेशी मामला, **पण०** –पैसे का मामला आदि।

778. **विवचा-यम्** (सं)—व्यवसाय—कृषि।–**यि** (सं) किसान

779. **विवर-म्** (सं)—विवरण ?—खबर, समाचार –वर्णन, ब्योरा। –**मान** (वि) –**माक** (क्रि. वि) विस्तार में। **विवरि** (क्रि) –विस्तार में सुनाना, विवरण देना।

780. **विवस्तै** (सं)—व्यवस्था—शऊर, तमीज़, शर्म, लज्जा। प्रायः निषेधार्थ में, **०केंट्ट** (वि) –बेशऊर। बदतमीज़; बेशर्म, निर्लज्ज, **०वन** (सं)—बदतमीज व्यक्ति; बेशर्म व्यक्ति।

781. **विवाक-म्** (सं)—विवाह—विवाह। –**रत्तु** (सं) –०+रद्द—तलाक। दे० 184

782. **विवा-तम्** (सं)—विवाद—चर्चा; तर्क, तर्क करना। –**ति** (सं) –चर्चा करना; बहस करना, तर्क करना। जैसे विद्वानों के सामने, वकील का अदालत में, सभा में, देश की हालत के बारे में "विवातम"

783. **विषम-म्** (सं)—विषम—नटखटी, उछलकूद; षड्यंत्र, विनाश, विद्रोह। –**क्कारन्** (सं) –नटखट व्यक्ति। **विषमि** (सं)—षड्यंत्रकारी, विनाशकारी, विद्रोही (miscreant, saboteur)। दे० क (28)

784. **विषयम्** (सं)—विषय—समाचार, बात (क्या बात है ?) मामला, विषय।

785. **विस्तरि** (क्रि)—विस्तर, विस्तार—विस्तार करना, विकास करना। –**प्पु** (सं) –विकास, **नकर० तिट्टम्**—नकर विकास योजना।

786. **विस्तार-म्** (सं)—विस्तार—विशालता। –(वि) –विशाल। –**माक** (क्रि. वि) –विस्तार में। –**मान** (वि) –खुला, फैला हुआ।

787. **विस्तीर्ण-म्** (सं)—विस्तीर्ण—विस्तृत, विशाल जगह (spacious); क्षेत्रफल (area)।–**मान** (वि)।

788. **वीति** (सं)—वीथि—सड़क। द्र० वीथि-म०, बीदि – क०।

789. **वेंकु मति** (सं)—बहुमति—पुरस्कार, भेंट, इनाम।

790. **वेंकुमानम्** (सं)—बहुमान—पुरस्कार, भेंट, जो बड़े लोगों को आदरपूर्वक दी जाती है।

791. **वेतनै** (सं)—वेदना—दुख-दर्द। **तलै०** –सिर दर्द; मुसीबत। **पिरचव०**—प्रसव पीड़ा। **०प्पटु** (क्रि)—दुखी होना, द्रवित होना।

792. **वेतांतम्** (सं)—वेदांत—दर्शन। **०पेचु** (क्रि) (मु०)–फलसफा बखारना (मु०)। **वरट्टु०** –कोरा दर्शन, कोरी अव्यावहारिक बात। (∠वरट्टु–सूखा)

793. **वेषम्** (सं)—वेष—नाटक का पात्र। जैसे राम का 'वेष'; बनना, छल। **०पोटु**– पात्र बनना; धोखा देना, स्वांग रचना (मु०)।

794. **वेळै** (सं)—वेला–समय; जून। **रात्तिरि०** –रात का समय। **इरंटु०** –दो जून। **ओंरु** (एक) ० –अगर; शायद।

795. **वैतीक-म्** (सं)—वैदिक—शास्त्र सम्मत आचरण, व्यवहार; पवित्र, धर्म संबधी व्यवहार। ०(वि) –जो धर्म के अनुकूल हो; शादी में धर्म संबधी विचारों का, दे० 711। –**मान** (वि)–पवित्र धार्मिक, **माक** (क्रि. वि)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

796. **वैपवम्** (सं)—वैभव—उत्सव, पर्व, अच्छा समारोह। **कल्याण०** –विवाहोत्सव।

797. **वैरम्** (सं)—वैर—द्वेष; दुश्मनी, वैर। दे० क 32

798. **वैराक्किय-म्** (सं)—वैराग्य—वैराग्य, विरक्ति; दुश्मनी वैर, प्रतिशोधकी भावना; जिद, दृढ़ता, कर्तव्य, दृढ़ प्रतिज्ञा। **–मान, माक** (क्रि. वि)। दे० क 31

799. **षरत्तु** (सं)—शर्त—विषय-क्रम, मसला (clause, section)। दे० 465

800. **षोक्कु** (सं)—शौक ?—रंगीनी; बढ़िया सौंदर्य; मस्ती। **षोक्का-न** (वि)–रंगीन, मस्त; बढ़िया, सुन्दर, **–क** (क्रि. वि)। द्र० षोकु- ते०

801. **स्टैल्** (सं)—स्टाइल—फैशन।

802. **स्तंपि~तंपि** (क्रि)—स्तंभ—आश्चर्यचकित होना।

803. **स्तल-म्** (सं)—स्थल, काशी आदि पवित्र स्थान। **–पुराणम्** –पुण्य स्थान का इतिहास, ईश्वर-महिमा आदि।

804. **स्ता-पनम्** (सं)—स्थापन—संस्था; स्थापित करना, होना। **–पकर्** (सं) –स्थापक –संस्थापक। **–पकम्** (सं) –स्थापना। **–पितम्** (सं) –स्थापित –स्थापना।

805. **स्तायि** (सं)—स्थायी —संगीत में सुर का ऊपर या नीचे होना। जैसे **मेल्** (उच्च)०, **कील्** (निम्न) ०। दे० 471

806. **स्तिर-म्** (सं)—स्थिर—शाश्वतता; दृढ़ता, मजबूती। **–मान** (वि)–शाश्वत; दृढ़ मजबूत। **–माक** (क्रि. वि)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अतिरिक्त सूची–क

1. **अतम्** (सं)––हत–शरारत, ऊधम; तोड़फोड़, विनाशकारी कृत्य । ० **पण्णु** (क्रि) । दे० 437.
2. **कंटित-म्** (सं)––खंडित–सख्ती का व्यवहार, कठोर अनुशासन । **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि) । दे० 157. द्र० खंडित–क०
3. **कॅतिरम्** (सं)––केंद्र–(किसी विशेष प्रयोजन से खोले गये, चिकित्सा आदि के) केंद्र ।
4. **चंतति** (सं)––संतति–पीढ़ी, पुश्त ।
5. **कोचम्** (सं)––कोश–(मकरंद का) कोश, फूल का मध्य भाग, जिसमें मकरंद होता है ।
6. **चरळ-म्** (सं)––सरल–अन्योन्यता, आत्मीयता, स्वभावगत सहजता; धारावाहिक रूप (से बोलना आदि) । **–मान** (वि)–आत्मीय, सहानुभूति पूर्ण; सरल (स्वभाव); (दिल से, भाषण में) खुला । **–माक** (क्रि. वि) । दे० 257, 347.
7. **चल्लिचु** (सं)––सलीस–आसानी; सस्ता दाम । **–आन** (वि), **आक** (क्रि. वि)
8. **चुरुति** (सं)––श्रुति–संगीत के सुर । ० **चेँर्** (क्रि) –गाने के पहले सुर मिलाना । ० **कूट्टु** (क्रि. मु.)–रोना, अलापना (मु.) (<कूट्टु–मिलाना) ।
9. **जपर्त-स्तु** (सं)––जबर्दस्त–पूरी तेज़ी, मुस्तैदी, तत्परता । **–स्ताक** (क्रि. वि), **स्तान** (वि) । दे० 372.
10. **तळ-म्** (सं)––तल–फ़र्श । **–वरिचै** (सं)–नींव । **अटित्०** (सं)–तलहटी, नीचे का हिस्सा (मकान आदि में), **मेल्०** (सं)–ऊपर का हिस्सा ।
    (सं)––दल–पत्ता (तुलसी दल आदि); सेना । **–पति** (सं)––दलपति, सेनापति ।
11. **तिरवियम्** (सं)––द्रव्य–(उ० दि–) संपत्ति; वस्तुएँ, जैसे **वाचनैत्०**–मसाले । दे० 730
12. **तीवट्टि** (सं)––दीवट–(उ० दी–) मशाल ।
13. **तूपम्** (सं)––धूप–सुगंधित धूप, धूप बत्ती आदि । ०**पोटु** (क्रि. मु)–कान भरना ।
14. **तेति** (सं)––तिथि, date ? ––तारीख़ । द्र० तियति –म०
15. **नवीन-म्** (सं)––नवीन–नवीनता; उपन्यास । **–मान** (वि), **माक** (क्रि.वि.) –नवीन ।
16. **निपुण-न्** (सं)––निपुण–विशेषज्ञ । –र् (बहु० आदर) । **निपुणि** (सं स्त्री) । **–म्~त्तुवम्** (सं) –निपुणत्व–विशेषज्ञता; निपुणता ।
17. **नीति** (सं)––नीति–न्याय, इन्साफ़, ० **मन्रम्** (सं)–न्यायालय, अदालत (<मन्रम्–सभा);

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीति, उपदेश। **व्यान** (वि), **याक** (क्रि. वि) –न्यायपूर्ण, न्यायपूर्वक। **अ०** (सं) –अनीति –अनीति, अन्याय, **व्यान** (वि) **याक** (क्रि. वि)।

18. **पट्ट-म्** (सं)—पट्ट–राजगद्दी; स्नातक उपाधि। ० **एरु** (क्रि) –गद्दी पर बैठना। **–राणि** (सं. स्त्री)–पटरानी। **–तारि** (सं) –०+धारी ––स्नातक उपाधिधारी।
19. **परिष्कारम्** (सं)—परिष्कार–प्रायश्चित्त।
20. **पलन्** (सं)—फल–कार्य का फल, अंजाम, प्रयोजन; फ़ायदा, (स्वास्थ्य)लाभ, दे० 215; इच्छित वस्तु, आकांक्षा; असर (स्वा आदि का)। ० **अटै** (कि)–(स्वास्थ्य) लाभ होना; इच्छित वस्तु को प्राप्त करना। **सापल्यम्** (सं)––साफल्य–फलयुक्त होना, प्रयोजन युक्त होना। **जन्मम्** ० **अटै**––जीवन सार्थक होना।
21. **पलम्** (सं)––फल–फल (खाने के)।
22. **पायचम्** (सं)––पायस–खीर।
23. **पिरपावम्** (सं)––प्रभाव–प्रताप, तेज। द्र–सं०।
24. **पेॅट्टि** (सं)––भेंट–मुलाक़ात।
25. **मकजर्** (सं)––महज़र–याचिका, प्रायः सामूहिक याचिका (Petition).
26. **मत्तकम्** (सं)––मस्तक–हाथी का मस्तक।
27. **मूर्त्तनिय-म्**––मूर्धन्य–आक्रोश, गुस्सा। **–मान** (वि), **माक** (क्रि. वि)। दे० 92,664
28. **लूट्टि** (सं)––लूट? –बच्चों की शरारत, ऊधम; विनाश, विनाशकारी कृत्य, अत्याचार, अन्याय। ०अटि (क्रि)। दे० 783
29. **लोपि** (सं)––लोभी–कंजूस; लालची। **लोपम्** (सं)–लोभ–लालच।
30. **वटम्** (सं)––वट? –रस्सा
31. **विकट-म्** (सं)––विकट? –हँसी-मज़ाक़, हास्यप्रधान चुटकुले। **–कवि** (सं)––हास्य कवि। **–क्कच्चेरि** (सं)–हास्य प्रधान खेल, जिसमें चुटकुले, जानवरों की बोली, मनोरंजक क़िस्से आदि होते हैं। दे० 162
32. **विरोतम्**(सं)––विरोध–दुश्मनी, वैर। **विरोति**(सं)–विरोधी–दुश्मन, विरोधी। दे० 221, 797

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संकेत सूची

(शब्द कैसे देखें)

संकेत : सं—संज्ञा भाव—भाववाचक संज्ञा
मु०—मुहावरा वि०—विशेषण
क्रि—क्रिया क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
स्त्री—संज्ञा स्त्रीलिंग बहु०—बहुवचन
आदर—आदरार्थ दे०—देखें
द्र०—द्रष्टव्य उ०—उच्चरित
ते०—तेलगु क०—कन्नड
म०—मलयालम मर० मराठी
गु०—गुजराती लै० लैटिन
ग्री०—ग्रीक सं०—संस्कृत
अक—अकर्मक सक—सकर्मक

प्रविष्टियाँ तमिल लिपि-पद्धति से दी गयी है। अलग से उच्चारण—निर्देशिका भी दी गयी है। शब्द के अर्थ (,) से दिखाये जायें, तो सभी अर्थ एक समान गुण का बोध कराते हैं। जैसे चंति—मुलाकात, भेंट।

(;) से दिखाये जायें, तो विशिष्ट, भिन्न अर्थ प्रकट होते हैं। चंपंतम्—शादी; संबंध।

शब्द रूप में वर्तनी भेद कोष्ठक में साथ ही दिये गये हैं। जैसे उपाति (तै) अर्थात, उपाति या उपातै। इसके लिए (~) चिह्न का भी प्रयोग किया है।

शब्द में शब्द–रचना स्पष्ट करने बीच में हाइफन (-) दिया गया है। अन्य रूपों का संबंध इससे समझना चाहिए। जैसे मूल शब्द के खंडों को हाइफ़नों की संख्या से समझ सकते हैं।

केवल-म् । -प्पटु, अर्थात केवलप्पटु
पिर-चुर-म् । -चुरि—पिरचुरि
। – –कर्ता—पिरचुरकर्त्ता

जहाँ (०) चिह्न का प्रयोग हुआ है, वहाँ रचना में मूल प्रविष्ट पूरी आ जायेगी।
'जाल-म्' में ० पण्णु—जालम् पण्णु।
– क्कारन्—जालक्कारन्।

खड़ी पाई के बाद शब्द रूपों का संबंध मूल प्रविष्टि के साथ है, (,) के बाद के रूप खड़ी पाई के बाद के रूपों से संबंध रखते हैं—अर्थ में तथा शब्द-रचना दोनों में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'आत-र-चु' में – – – – – । – – रिप्पु––आतरिप्पु

– – – – । – – वान—आतरवान

– – – – । निरात – – –निरातरवु, –रिप्पु—निरातरिप्पु

हाइफन के बाद के दो शब्द, जो (,) से अलग हैं, समान रूप से सीधे मूल प्रविष्टि से संबंध रखते हैं। इससे चिह्नों में थोड़ी किफ़ायत हो जाती है।

आयत्त––म् । –माक ।–मान––आयत्तमाक, आयत्तमान

या ,, –– ,, । –माक ।–मान–– ,, ,,

आपाच-म्। – ~ – मान, माक––आपाच, आपाचमान, आपाचमाक

'चपै' में । चट्ट ० —चट्ट चपै

। चट्ट ०, मेल ०—चट्ट चपै, मेल चट्ट चपै ।

'मरियातै' में । अव०—अवमरियातै

। अव ० , ० यान—अवमरियातै, अवमरियातैयान

उच्चारण की टिप्पणी केवल उन वर्णों के लिए दी गयी है, जहाँ सामान्य नियम से भिन्न व्यवस्था दिखायी पड़ती है। अन्य वर्णों का उच्चारण निर्देशिका से जान सकते हैं।

जैसे कोष्टि (उ० गो –)––गोष्टी

जहाँ शब्द के सामने 'द्रष्टव्य' में किसी भाग का शब्द बिना अर्थ के दिया गया हो तो तमिल अर्थ में समझना चाहिए। जैसे—तियानम् (सं) – – – – द्र० ध्यानम्-म०। और 'जहाँ' 'द्रष्टव्य' में बिना भाषा के निर्देश के शब्द दिये गये हैं वे हिंदी के हैं। जैसे—चमाजम् – – – – द्र० आर्य समाज – – – आदि। द्र० में संस्कृत शब्द के अर्थ केवल मोनियर-विलियम के कोश के आधार पर दिये गये हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शब्द निर्देशिका

(कौन शब्द कहाँ देखें)

अंक 1
अंग 1, 131
अंगुल 2
अंगीकार 3
अंजलि 4
अंतरंग 5
अंतिम 6
अंश 71, 384, 678
अहंकार 7
अहंता 8
अहंभाव 9
अकारादि 12
अक्षत 24
अखिल 14
अगति 10
अगस्त्य 11, 13
अग्रहार 15
अजगजांतर 23
अज्ञान
अट्टहास 25
अति 27
अतिशय 29, 216
अतीत 31
अत्यंत 32
अदब 26
अदृष्ट 30
अधिकार 28
अधिकारी 28, 291, 671
अध्ययन 33
अनंत 35
अनर्थ 36
अनल 37
अनाचार 94
अनायास 38
अनुताप 41
अनुबंध 42
अनुभव 43
अनुमति 44
अनुष्ठान 46
अनुसंधान 39
अनुसरण 40
अनेक 47
अन्य 48, 50
अन्याय 49
अपकार 52
अपचार 53
अपमान 84
अपराध 56
अपवाद 57
अपशकुन
अपस्मार 58
अपहरण 51
अपाय 60
अपार 61
अपील 67
अपूर्व 94
अपेक्षक 65
अपेक्षा 65
अबद्ध 53
अवोध
अभय 54
अभिमान 92
अभिवृद्धि 63
आभास 66
अमित 68
अमोघ 70
अम्ल 69
अयोग्य 72
अर्थ 74
अर्हता 73
अलक्ष्य 75
अलहदा 76
अल्प 78
अल्पायु 78
अवकाश 79

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवतार 82
अवधान 81
अवमति 83
अवयव 85
अवरोहण 86
अवसर 80
अवस्था 87
अशरीरी 17
अश्रद्धा
असंभावित 15
असल 18
असह्य 20
असाध्य 19
असामी 93
असुर 22
असूया 21
अस्थि 28

आकृति 89
आक्रमण 91
आक्रोश 92
आक्षेप 98
आग्रह 90
आचार 94, 181
आजानुबाहु 97
आणव 99
आतंक 100
आतुर 105
आत्मार्थ 106
आदर 101
आदाय 102
आधार 617
आधिक्य 103
आधीन 104
आफ़त 107
आभास 108
आमोद 109
आयत्त 110
आयास 111
आयुध 397
आरती 112
आराधना 114
आरूढ़ 115
आलय 116
आलोचना 117
आवेश 118
आशा 96
आश्वासन 95
आस्थान 119

इंगित 120
इंद्रिय 121
इतिहास 123
इनाम 124
इलाका 129
इष्ट 130

उत्तम 134
उत्तरीय 135
उत्पत्ति 148
उत्पात 149
उत्पाद 149
उदय 132
उदासीन 133
उद्देश 137
उद्योग 136
उद्वेग 138
उन्मत्त 139
उपचार 140
उपन्यास 344
उपयोग 142
उपरि 143
उपवास 144
उपाधि 145
उपाध्याय 734
उस्ताद 727

ऊन 152
ऊह 675

ऋजु 690

एक 155
एकाधिपत्य 156

कंठ 158
कंबल 159
कक्षा
कचहरी 162
कच्चा 161
कटाक्ष 164
कठिन 165
कठोर 227
कथा 168
कम, कमी 172
कमरा 192
कमीज 171
करार 173
करुणा 174
कर्ता 176
कर्तरी 169
कर्म 175
कलश 179, 180
कलह 178

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला 181, 182
कलि 183
कल्याण 184
कवल 185
कवि 186
कष्ट 147
कॉपी 190
कॉफी 190
काम 191
कार 194
काल 196, 197
कालक्षेप 195
कालावधि 198
काव्य
किस्त 209
कीर्तन 211
कुंकुम 212
कुटुंब 214
कुतर्क 217
कुतूहल 218
कुप्पी 219
कुली 224
कूज़ा 223
कृति 203
कृत्रिम 204
कृमि 205
केंद्र क 3
केवल 225
केसर 226
कोश क 5
क्रोध 221
क्षेत्र 235
क्लास 208
कलेश 207

खंड158
खंडन 157
खलनायक 459
खारा 193
खाली 199
खिलाड़ी 208
खीर 210
खुशहाल 222

गंभीर 160
गण्य 616
गति 167
गर्व 167
गाथा 189
गिलास 208
गुंडा 213
गुण 215, 216
गोल 233
गोली 229
गोशा 231
गोष्ठी 232
गौरव 234
ग्रंथि 200
ग्रहण 201
ग्राहकी 202

घट 163
घन 170
घान 198
घोर 228
घोष 230

चंचल 245
चक्र 261
चपल 269
चमत्कार 272
चरित 289
चरित्र 290
चर्म 291
चलन 294
चातक 304
चारण 314
चिंतन 322
चिंता 323
चित्त 327
चिमनी 330

चेष्टा 360
चोगा 361

छाया 313
छुन्नी 346

जगह 375
जटा 366
जज 367
जय 368
जबर्दस्त क 9
जमा 369
ज़माना 370
जय 371
ज़रूर 372
जल 373
जल्सा 374
जवाब 296,376
जाग्रत 377
जातक 379
जाति 307
ज़ाब्ता 380
जाल 381

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीवन 382,383,384
जीवित 385
ज़ोर 387
जैकेट 378
ज्वाला, ज्वलित 386

झालर 320
ज्ञान 388
ज्ञापक 389

टिकट 391
टिन 392
टिफ़िन 393
टुकड़ा 435

डिब्बा 390
ड्यूटी 394

तंति, तंतु 399
तंत्र 400
तकरार 402
तत्व 403
तमाशा 405
तरुण 409
तल क 10
तांडव 411
तात 417
ताप 418
तारा 420
तिलक 428
तिथि क 14
तीर 431
तीर्थ 433
तीव्र 434
तुर्क 440
तोरण 448
तैयार 406
त्राण 426

दंड 396,397
दंडन 395
दंत 398
दर्शन 408
दल क 10
दहन 401
दाक्षिण्य 415
दाख़िल 413
दावा 421
दासी 414
दाह 412
दिन 424
दिनचर्या 423
दिवस 429
दीपाराधन
दीर्घ 432
दीवट क 12
दुपट्टा 436
दुराग्रह
दुराचार 94
दुर्लभ 439
दूर 442
दृढ़ 422
दृष्टांत 427
देवता 445
देवालय
देश 61
देशीय 444
दोष 373,449
द्रव्य क 11
द्रोह 438
द्वार 441
द्वीप 430

धन 404
धर्म 236, 278, 410
धातु 416
धारा 420
धीर 431
धूप क 13
धूमधाम 415
धूल 443
धूलि 443
धैर्य 446
ध्यान 425
ध्वंस 437
ध्वनि 447

नंदनवन 450
नकल 451,452
नफर 453
नलिन 454
नवीन क 15
नष्ट 455
नाइस 483
नागरिक 456
नाम 458
नाजुक 457
नायक 367,459
नायिका 459
निज 461
नित्य 464
निदर्शन 462
निदान 463
निपुण क 16

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निबंधन 465
निमित्त 466
निमिष 467
नियति 468
नियम 470
नियमन 469
निरंतर 471
निराकरण 472
निरादर 101
निराशा 96
निरूपण 474
निर्धूलि 475
निर्बंध 476
निर्मूल 477
निर्वाण 473
निर्वाह 478
निवारण 480
निवृत्ति 479
निवेदन 481
निष्ठुर 482
निश्चय 460
निश्शब्द 268
नीति क 17
नोट 484

पंक्ति 489
पंखा 486
पक्का 493
पक्व 495
पक्ष 492,503
पक्षपात 503
पटाटोप 499
पट्ट क 18
पठन 500
पण 505,506
पण्य 506
पत्नी 509
पत्र 510
पत्रिका 511
पथ 545
पद 507
पदवी 508
परंपरा 514
परदेशी 515
परम 516
परवश 517
परवाह 518
पराक 519
परिचारक 523
परिणाम 527
परिताप 528,529
परिधि 530
परिपालन 531
परिमित 532
परिवार 533
परिष्कार क 19
परिशीलन 524
परिशुद्ध 525
परिशोधन 526
परिहार 522
परिहास 521
पर्दा 501
पर्व 534
पशु 496
पहरा 550
पाठ 635
पात्र 547
पान 548
पाप 552
पामर 549
पायस क 22
पाषाण 553
पाश 544
पीठ 597
पीठिका 598
पुकार 600
पुट 601
पुष्टि 602
पूजा 555
पूज्य 603
पूरा 606
पूर्ण 607
पूर्ति 608
पेटी 609
पेपरमिंट 610
पैसंजर 543
पैसा 616
प्रकटन 557
प्रकाश 558
प्रकृति 560
प्रचुर 565
प्रज्ञा 561
प्रतिकार 568
प्रतिफल 569
प्रतिष्ठा 570
प्रत्यक्ष 572
प्रत्येक 573
प्रदेश 571
प्रधान 563
प्रपंच 574
प्रबंध 575
प्रबल 576
प्रभावक 23
प्रभु 577
प्रमाण 578
प्रमाद 579
प्रमुख 580
प्रमेय 581
प्रयाण 512, 584
प्रयोग 585
प्रयोजन 586

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न 566
प्रसंग 562
प्रसन्न 563
प्रसाद 564
प्रस्तावना 587
प्रांतीय 588
प्राकार 559
प्राप्त, प्राप्ति 590
प्राय 591
प्रीति 592
प्रेत 593
प्रेम 594

फ़कीर 494
फरार 520
फरियाद 589
फलक क 20, 21
फलक 537
फलाहार 536
फलित 539
फ़िर्का 595
फ़ैन 613
फ़ैसला 615

बंदोबस्त 490
बंध 488
बंधक 487
बटवारा 504
बत्ती 722
बलवंत 538
बलहीन 131
बहिरंग 491
बहुमति 789
बहुमान 790
बाज़ारी 498
बाध्य 546
बिंब 554
बीज 596
बेज़ार 611
बेमानी 614
बोध 619
बोधन 618
ब्रह्मांड 583

भंग 485
भक्ति 513
भक्षण 502
भजन 497
भद्र 510
भय 513
भर्ती 535
भव्य 540
भांड 58
भाग 541
भाग्य 542
भावना 551
भिन्न 556
भीति 599
भू 602
भूगोल 233
भूत 605
भेंट क 24
भेद 612
भ्रम 582

मंच 620
मंडल 621
मंडी 122
मंत्र 624
मंद 623
मक्कार 627
मणि 630
मत 41, 61, 631
मद 631
मधु 632
मध्य 633
मन 635, 636
मनन 634
मनस्ताप 637
ममता 638
मरम्मत 638
मर्म 641
मर्यादा 640
मल 647
मसाला 628
मसौदा 629
मस्तक क 26
महत् 626
महज़र क 25
महसूल 652
मांत्रिक 624
मात्रा 643
मानसिक 644
मान्य 645
मामला 646
मामा 647
मामी 648
मामूल 649
मिक्सर 650
मिठाई 651
मित 652
मिल 654
मुंड 655
मुख 657
मुखड़ा 665
मुख्य 659
मुद्रा 660

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुनि 661
मुन्सिफ 662
मूढ़ 663
मूर्ख 664
मूर्धन्य क 27
भूल 666
मूलक 665,666
मृग 653,
मेधा 776
मैदान 667
मोटर 669
मोह 668

यंत्र 154
यत्न 153
यथार्थ 670
यथेच्छा 671
याचक 612
यातना 733
याददाश्त 673
युक्ति 220
युद्ध 674
योग 676
योग्यता 677,678
योजना 679

रकम 696
रक्षा 682
रम्य 683
रवा 684
रस 680, 681
रसना 182
रसिक 182, 681
राग 685
राजा 687
राज़ी 688
राशन 694
राशि 686
रीति 658
रुचि 690
रूमाल 446
रेख 693
रेखा 662
रोटी 697
रोम 174
रोष 698
रैयत 695

लक्षण 127, 701
लक्ष्य 128, 702
लगान 699
लग्न 700
लघु 126
लय 703
लाघव 705
लॉटरी 706
लाला 707
लिंग 708
लिखित 609
लूट क 28
लेवादेई 710
लोभी क 29
लोह 150
लौंग 705
लौकिक 711

वंचक 712
वंचना 713
वंदन 714
वंश 723
वकालत 715
वकील 715
वक्र 761
वज्र 720
वट क 30
वध 721
वर्ग 725
वर्ण 725
वर्ष 726
वश 717
वशीकर 719
वश्य 718
वांछा 728
वाक 729
वाचक 731
वाचन 731
वाचनालय 731
वात 732
वाद 732
वायदा 736
वायु 735
वार 737
वार्ता 738
वासना 730
विकट क 31
विकल्प 739
विकार 741
विकास 740
विग्रह 742
विचार 745
विचारण 744
विचित्र 747
विजय 750
विज्ञापन 751
विज्ञप्त (विज्ञप्ति) 752
वितंडा 753
वितरण 754

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्या 756
विधि 755
विनय 757
विनियोग 758
विनोद 759
विपरीत 761
विभूति 762
विमर्श 764
विमर्शन 763
विमोचन 765
विरस 770
विरोध क 32
विलास 776
विवर (विवरण) 779
विवाद 782
विवाह 781
विशाल 746
विशेष 749
विश्वास 748
विषम 783
विषय 784
विस्तार 786
विस्तर 785
विस्तीर्ण 787
वीथि 788
वृत्त 773
वृतांत 774
वेदना 791
वेदांत 792
वेदोध्ययन 33
वेला (वेला) 794
वेष 793
वैदिक 795
वैभव 796
वैर 797
वैराग्य 798
व्यभिचारी 760
व्यवसाय 778
व्यवस्था 780
व्यवहार 777
व्यसन 743
व्याख्यान 766
व्याज 768
व्यापार 769
व्यास 767
व्युत्पन्न 775
व्रत 771
व्रय 772

शकट 258
शकुन 260
शनि 265
शब्द 268
शरणागति 287
शराई 288
शरीर 316
शर्करा 262
शर्त 79
शांत 298
शाला 318
शाश्वत 302
शासन 310
शास्त्रीय 319
शिक्षा 325
शिखा 324
शिथिल 326
शिला 335
शिल्प 336
शीतोष्ण 339
शील 341
शीशा 337
शुंडा (सूंड) 342
शुद्ध 345
शून्य 356
शूर 357
शृंखला 243
शृंगार 321
शोक 362
शोधन 363
शोहृदा 364
शौक 800
श्रद्धा 331
श्रम 332
श्रुति क 8
श्लाघा 333
श्लाध्य 334

संकट 236
संक्रांति 242
संगति 237
संगम 238
संग्रह 241
संघ 239
संघात 240
संघाती 240
संचयन 244
संचिका 246
संज्ञा 280
संतति क 4
संतोष 249
संदर्भ 247
संधि 248, 373, 602
संपाद 252
संपुट 256
संप्रदाय 255
संबंध 250
संभव 251
संभावना 253
संभाषण 254

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संरक्षण 285
संलाप 295
संसार 283
संस्थान 276
सत्य 263
सत्यसंघ 263
सत्र 264
सन्निधि 266
सभा 270
समयोचित 271
सम 273
समरस 274
समर्थ 275
समाज 277
समाधान 278
समाराधन 279
समुदाय 281
समूह 282
सम्मत 284
सम्मान 267
सम्मुख 282
सरल क 6
सरस 286
सर्वाधिकार 293
सलीस क 7
सवाल 269
सहज 257
सहाय 259
सांगोपांग 297
साक्षी 303
सात्विक 309
साध 306
साधक 304
साधन 305
साधना 306
साधारण
साधु 307
साध्य 308
सामर्थ्य 310
सार 315, 317
सावकाश
सार्वदेशिक 282
साहब 312
साहस 299
साहित्य 300
सिद्धि 327
सिद्धान्त 328
सिपाही 329
सीमा 340
सुख 343
सुधार 344
सुमुख 3447
सुरंग 348
सुलभ 349
सूक्ष्म 354
सूचक 353
सूत्र 355
सेवक 358
सेवा 359
सौकर्य 365
स्टाइल 801
स्तंभ 802
स्तर 407
स्त्रीधन 338
स्थल 803
स्थापन 804
स्थायी 805
स्थिर 806
स्वाधीन 350
स्वामी 311
स्वारस्य 351
स्वीकार 352

हत क 1
हद 34
हल्का 77
हार 113
हित 122
हिंसा 125
हीन 131
होशियार 151

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उच्चारण संबंधी निर्देशिका

1—स्वरों का उच्चारण हिंदी के ही समान है। केवल **ऐ** और **औ** स्वरों का उच्चारण क्रमशः अइ (अय्) और अउ (अव्) होता है।

2—शब्दांत में **इ** का उच्चारण प्रायः दीर्घ होता है और **उ** का उच्चारण अवृत्तमुखी ओठों से होता है।

3—यदि हलंत चिह्न न लगा हो, तो शब्द **अ** स्वरांत है।

4—तमिल में दो अतिरिक्त ह्रस्व स्वर हैं—**ऍ**, **ऑ**।

5—स्पर्श व्यंजनों को, लिपि के अनुसार एक ही लिपि–चिह्न से दिखाया गया है। लेकिन इनके उच्चारण की व्यवस्था निम्न प्रकार से की जा सकती है।

क—शब्दारंभ में और द्वित्व में **क**–कार्; पक्कम।

ङ के बाद **ग**–अंकम्।

स्वर मध्य में **ख़**–पाकम्

च—द्वित्व में **च**–कच्चा, ट के बाद **च्**–संरट्चणै

ञ के बाद **ज**–मंचम्।

शब्दारंभ और स्वर मध्य में **स**–चाति,पचु

ट—शब्दारम्भ में और द्वित्व में –टिन्, टिक्कट्टु।

ण के बाद, स्वर मध्य में **ड**–तंटम्, कटम्।

त—शब्दारम्भ में, द्वित्व में **त**–तरम्, अत्तु।

न के बाद **द**–मंतिरम्।

स्वर मध्य में घोष दंत्य संघर्षी द़–ममतै।

प—शब्दारम्भ, द्वित्व में **प**–पेन्, काप्पि

म के बाद **ब**–कंपीरम्।

स्वर मध्य में घोष द्वयोष्ठय संधर्षी **ब**–चल्लापम्।

अन्य स्थानों में वर्ण का वही उच्चारण है। जहाँ अन्यथा उच्चारण हो, तो कोष्ठक में उसका उल्लेख किया गया है। तमिल में स्पर्श के पहले नासिक्य लिखे जाते हैं। यहाँ लिप्यंतरण की सुविधा के लिए उनके स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया गया है।

6—तमिल में दो अतिरिक्त ध्वनियाँ हैं—घोष, मूर्धन्य, पार्श्विक ल़; घोष मूर्धन्य, संघर्षहीन प्रवाही ऴ।

7—'क्ष' का उच्चारण ट+च जैसा होता है। वह तमिल लिपि में भी दिखाया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

8—तमिल उच्चारण में शब्दारम्भ, द्वित्व में। ग ज ड द ब। नये प्रयोग हैं (इसकी चर्चा भूमिका में दे० 2.4.1) और ये शब्दों के सामने कोष्ठक में दिये गये हैं।

9—यहाँ गुच्छों का अधिक विवरण नहीं दे रहा हूँ। शब्दों के रूपों को समझने के लिए निम्नलिखित बातें ज्ञातव्य हैं।

(आ) हिंदी गुच्छों में स्वर-भक्ति हो जाती है। प्र—पिर, र्व—रुव, ण्य—णिय, स्व—चुव (उ० सुव) आदि। बोलचाल में उच्चारण हिंदी के समान होता है, हो सकता है।

(इ) दो स्वरों की संधि में पहले शब्द का अंतिम स्वर नष्ट हो जाता है। चमर्त्तु+आन—चमर्त्तान।

(ई) तरल+स्वर की संधि में दोनों मिल जाते हैं और शब्द मिलाकर लिखे जाते हैं। कुणम्+अटै—कुणमटै।

10—अंश, संरक्षण आदि में अनुस्वार का उच्चारण म का है। शब्दों को लिपि पद्धति के अनुसार ही दिया गया है।

11—हिंदी त+प का उच्चारण र्प से दिखाया गया है। यह **र** उच्चारण में ।र। ही है। इसके बाद का स्पर्श उच्चारण में थोड़ा लम्बा हो जाता है और 'उत्पत्ति' का उच्चारण 'उर्प्पत्ति' जैसा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तमिल-हिंदी के समानार्थी शब्द

अंकणम्--आँगन
अंकुचम्--अंकुश
अंतकन्--अंधक
अंपारम्--अंबार
अंपारि--अंबारी
अकस्मात्तु--अकस्मात
अक्किनि (ग्ग)--अग्नि
अचुपम्--अशुभ
अजीर्णम्--अजीर्ण
अटम्--हठ
अणु--अणु
अतमन् (सं)--अधम
अतरम्--अधर
अतलम्--अतल
अतिकम्--अधिक
अतित्वि--अतिथि
अत्तर्--इत्र
अत्तियायम्--अध्याय
अनुकूलम्--अनुकूल
अनुक्किरकम् (ग्ग)--अनुग्रह
अनुपवम्--अनुभव
अन्नम्--अन्न
अपस्वरम्--अपस्वर
अपिन्--अफ़ीम
अपिप्पिरायम्--अभिप्राय
अपिरकम्--अभ्रक
अपिषेकम--अभिषेक
अपष्टिम्--अभीष्ट
अमरन् (सं)--अमर
अमल्--अमल
अमीना--अमीन
अमुतम्--अमृत
अरकजा--अरगजा
अर्च्चनै--अर्चना
अर्प्पणम्--अर्पण
अर्पुतम्--अद्भुत
अलंकारम्--अलंकार
अलमारि--अलमारी
अल्पाक्का--अल्पाका
अल्ला--अल्ला
अल्वा--हलुआ
अविवेकम्--अविवेक
आकर्षणम्--आकर्षण
आकाचम्--आकाश
आकारम्--आहार
आचनम्--आसन
आचुकवि--आशुकवि
आच्चरियम्--आश्चर्य
आजर्--हाजिर
आटंपरम्--आडंबर
आणै--आज्ञा
आतरिचम्--आदर्श
आतारम्--आधार
आति (वि)--आदि
आनंतम्--आनंद
आन्मा--आत्मा
आपरणम्--आभरण
आपूषणम्--आभूषण
आयुचु--आयु
आयुतम्--आयुध
आरंपम्--आरंभ
आरोक्कियम् (ग्ग)--आरोग्य
आलापनम्--आलाप
आलिंकनम्--आलिंगन
आस्तिक-न्,-म्--आस्तिक
इस्तिरि-- इस्त्री
ईचुव-रन्, रि--ईश्वर, ईश्वरी
उक्किरम् (ग्ग)--उग्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उच्च (वि)—उच्च
उच्चरि (क्रि)—उच्चारण
उतरम्—उदर
उतारणम्—उदाहरण
उतारम्—उदार
उत्तम-न्,-म्—उत्तम
उत्तरायणम्—उत्तरायण
उन्नतम्—उन्नत
उपकरणम्—उपकरण
उपकारम्—उपकार
उपतेचम्—उपदेश
उपाचनै—उपासना
उपायम्—उपाय
उरुवकम्—रूपक
उरुवम्—रूप
उर्चवम्—उत्सव
उर्चाकम्—उत्साह
उर्पलम्—उत्पल
उल्लाचम्—उल्लास
उवमानम्—उपमान
उवमेयम्—उपमेय
उवमै—उपमा
उष्णम्—उष्ण
ऊता—ऊदा
ऐचुवरियम्—ऐश्वर्य
ओट्टकम्—ऊँट (उष्ट्र)
औटतम्—औषध
कंकणम्—कंकण
कंचा (ग–)—गाँजा
कंचिरा (ग–)—खंजड़
कंतकम् (ग–)—गंधक
कंपम्—खंभा
कचाप्पु—कसाई
कजम् (ग–)—गज़
कजाना (ग–)—गज़ाना
कट्टम्—घाट
कणिकै—गणिका
कतंपम्—कदंब
कतर—खच्चर
कतै (ग–)—गदा
कनिजम्—खनिज
कन्निकै—कन्यका
कपटम्—कपट
कपम्—कफ
कपालम्—कपाल
कमलम्—कमल
कर्जनै (ग–)—गर्जना
कर्पनै—कल्पना
कर्प्पम् (गर्ब-)—गर्भ
कर्प्पिणि (गर्बिणी)—गर्भिणी
कर्प्पूरम्—कपूर
कलकम्—कलह
कलै—कला
कवचम्—कवच
कवितै—कविता
कस्तूरि—कस्तूरी
कलंकम्—कलंक
कांजा (गा–)—गाँजा
कांटा (गा–)—गैंडा
कांतन्—कांत
कांति—कांति
काकम्—काक
काकितम्—कागद, कागज
काक्कि—खाकी
काटा (सं)—गाढ़ा (सं)
कानम् (गा–)—गान
कारणम्—कारण
किरयम्—कार्य
कारियालयम्—कार्यालय
कारै (गा-भी)—गारा
काव्यम्—काव्य
कियाति—ख्याति
किरकणम् (गि–)—ग्रहण
किरकम् (गि–)—ग्रह
किरणम्—किरण
किरयम्—क्रय
किरुपै—कृपा
किस्मिस्—किशमिश
कीतम् (गी-)—गीत
कीर्त्ति—कीर्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुंटलम्--कुंडल
कुचलम्--कुशल
कुतरु (क्रि)-- कुतरना
कुमा-रन,-रि--कुमा-र,-री
कुमास्ता (गु-)-गुमश्ता
कुम्मट्टि--गुमटी
कुरु (गु-)--गुरु
कुरुमा--खुर्मा
कुलम्--कुल
कुलाप्जान् (गुलाब्-)--गुलाबजामुन
कुल्कंतु (गु-)--गुलकंद
कुल्लाम्--कुलाह
कुषि--खुशी
कुष्टम्--कुष्ट
केचम्--केश
कोंतु (गो-)--गोंद
कोटि--कोटि
कोणम्--कोण
कोत्तिरम् (गो-)--गोत्र
कोपम्--कोप
कोमेतकम् (गो-)--गोमेदक
कोरोचनै (गो-)--गोरोचन
क्षयम्--क्षय (रोग)
क्षेमम्--क्षेम
चंकल्पम्--संकल्प
चंकारम्--संहार
चंकीतम्--संगीत
चंकु--शंख
चंकोचम्--संकोच
चंता--चंदा
चंतिरन्--चंद्र
चंतेकम्--संदेह
चंपत्तु--संपत्ति
चकितम्--सहित
चकोत-रन्,-रि--सहोद-र,-री
चक्ति--शक्ति
चट्टिनि--चटनी
चणल्--सन (jute)
चता--सदा
चति--सती
चन्नियाचम्--संन्यास
चन्मति--सन्मति
चपतम्--शपथ
चप्पात्ति--चपाती
चमाचारम्--समाचार
चमानम्--समान
चमीपम्--समीप
चमुत्तिरम् (द्द्)--समुद्र
चमेतम्--समेत
चम्करि (क्रि)--संहार
चरणम्--चरण
चराय्--शराई
चरीरम्--शरीर
चर्च्चै--चर्चा
चर्पत्तु (सर्ब-)--शर्बत
चर्प्पम्--सर्प
चलाम्-सलाम
चवम्--शव
चवारि--सवारी
चांति--शांति
चाट्चि--साक्षी
चाता--सादा
चात्तान्--शैतान
चात्तिरम्--शास्त्र
चापम्--शाप
चामान्--सामान
चाम्राज्यम्--साम्राज्य
चारति--सारथी
चारम्--सार
चिंकम्--सिंह
चिकिच्चै--चिकित्सा
चिक्कि मुक्कि--चकमक
चिचु--शिशु
चितरु (क्रि)--छितराना
चितार्--सितार
चितै--चिता
चित्ति (द्द)--सिद्धि
चित्तिरम्--चित्र
चिनेकम्--स्नेह
चिन्नम्--चिह्न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिपारिचु--सिफ़ारिश
चिम्माचनम्--सिंहाचन
चिरात्तम्--श्राद्ध
चिरुष्टि--सृष्टि
चिरै--शिरा
चिलेट्टुमम्--श्लेष्म
चिविकै--शिविका
चीक्किरम् (ग्ग)--शीघ्र
चीट्टि--छींट (का कपड़ा), सीटी
चुंतर-न्,म,रि--सुंदर, सुंदरी
चुकंतम्--सुगंध
चुण्णांपु--चूना
चुन्नत्तु--सुन्नत
चुपम्--शुभ
चुरम्--सुर, स्वर
चुवर्णम्--स्वर्ण
चुवाचम्--श्वास
चूर-न्,-म्--शूर
चूरणम्--चूर्ण
चूरियम्--सूर्य
चेॅव्वंति--शेवंतिका
चेनै--सेना
चेर्--सेर
चोॅक्काय्--चोगा
चोॅप्पम्न--स्वप्न
चोॅर्क्कम्--(ग्ग)--स्वर्ग
चोतिट-न्,-म्--ज्योतिष
चोपै--शोभा
चोलि--चोली
चौंतरियम्--सौंदर्य
चौपाक्कियम--सौभाग्य
जकज्जोति--जगज्योति
जकम्--जग, जगत
जननम्--जनन
जन्मम्--जन्म
जमींतार्--ज़मींदार
जरिक--ज़री
जव्वरिचि--सागूदाना (<जौ+अरिचि--चावल)
जाति--जाति
जिलेपि--जलेबी
जिल्ला--ज़िला
जीरकम्--ज़ीरा
जीरणम्--जीर्ण
जुरम्--ज्वर
जोटि--जोड़ी
जोति--ज्योति
ज्वालै--ज्वाला
टेरा (डे-)--डेरा
टोलक्कु (डो-)--ढोलक
तपदि (द-)--दमड़ी
तंपति (दं)--दंपति
तंपुरा--तानपूरा
तक्लि--तकली
तचम (वि)--दशम
तचै--दशा
तट्चिणै--दक्षिणा
तनुचु (द-)--धनुष
तपला--तबला
तमनि (द-)--धमनी
तयवु, तयै (द-)--दया
तरपि (द-)--धरणी
तराचु--तराज़ू
तरु--तरु
तर्क्कम्--तर्क
तस्तावेजु (द-)--दस्तावेज़
तलपति (द-)--दलपति
तांपूलम्--तांबूल
ताचील्, ०तार--तहसील, ०दार
ताटि (दा-)--दाढ़ी
तानम् (दा-)--दान
तानियम् (दा-)--धान्य
तामिरम्--ताम्र
तालुक्का--ताल्लुक़
तिचै (दि-)--दिशा
तिटम् (दि-)--दृढ़
तिमिंकिलम्--तिमिंगिल
तियाकम्--त्याग
तिरवम् (दि-भी)--द्रव
तिरुष्टि (दि-)--दृष्टि
तिवाल् (दि-)--दिवाला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिव्वियम् (दि-)--दिव्य
तीट्चणम्--तीक्ष्ण
तीट्चै (दी-)--दीक्षा
तीनम् (दी-)--दीन
तीपम् (दी-)--दीप
तुक्कम् (दु-)--दुख
तुच्चम्--तुच्छ
तुत्तम्--थोथा
तुप्पाक्कि--तुपक
तुरितम्--त्वरित
तुरुवम् (दु-भी)--ध्रुव
तुला--तुला
तुवरै--तुअर
तुवेषम्--द्वेष
तुष्टन् (दु-)--दुष्ट
तुलचि--तुलसी
तूण्--स्थूण
तूतन् (दू-)--दूत
तूषणै (दू-)--दूषण
तेकम् (दे-)--देह
तेचु--तेज
ते-वन्,-वि (दे-)--दे-व,-वी
तैलम्--तेल, तैल
तोंन्ति--तोंद
तोंन्नै (दों-)--दोना
तोंप्पि-टोपी
तोचै (दो-)--दोसा
तोला--तोला
नकम्--नख
नकरम्--नगर
नकरा--नगाड़ा
नटनम्--नर्तन
नट्चत्तिरम्--नक्षत्र
नति--नदी
नयनम्--नयन
नरकम्--नरक
नर्त्तनम्--नर्तन
नवापु--नवाब
नाकम्--नाग
नाचम्--नाश
नाटकम्--नाटक
नाटा--नाड़ा
नाटि--नाड़ी
नाट्टियम्--नाट्य
नाणयम्--नाणक ?
नातन्--नाथ
नातम्--नाद
नाना (वि)--नाना
नाषि--नाभि
नारि--नारी
नावितन्--नापित
नाष्टा--नाश्ता (विरल)
नास्किन्--नास्तिक
निं-तै,-ति (क्रि)--निंदा
निका (मु०)--निगाह
निक्का--निकाह
निचि--निशि
नितम्--नित
निति--निधि
निर्त्तिरै--निद्रा
नियायम्--न्याय
निरंतरम्--निरंतर
निर्णयम्--निर्णय
निर्मलम्--निर्मल
निर्माणम्--निर्माण
नीचन् (सं)--नीच
नीर्--नीर
नीलम्--नील, नीलम
नूतनम्--नूतन
नूपुरम्--नूपुर
नेत्तिरम्--नेत्र
पंकला (ब-)--बंगला
पंचांकम्--पंचांग
पंचामिर्तम्--पंचामृत
पंटित-न्,-र्--पंडित
पंतल्--पंडाल
पंतु (ब-)--बंधु
पकवान् (ब-)--भगवान
पकोटा--पकौड़ी
पक्तन्-भक्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्ति—भक्ति
पच्चात्तापम्—पश्चाताप
पटुवा (ब-)—बरुवा
पट्चि—पक्षी
पट्टास्—पटाखा
पणम्—फन
पतार्त्तम्—पदार्थ
पति—पति
पतिविरतै—पतिव्रता
पत्तियम्—पथ्य (थ्)
पयंकरम्—भयंकर
पयम् (ब-)—भय
पयिल्वान्—पहलवान
परम (वि-)—परम
परस्परम्—परस्पर
कारिपकरमम्—पराक्रम
परोपकारम्—परोपकार
परोट्टा—परौंठा
पर्प्पि (ब-)—बर्फ़ी
पर्वतम्—पर्वत
पलम् (ब-)—बल
पलि (ब-)—बलि
पल्लक्कु—पालकी
पवित्तिरम्—पवित्र
पस्मम् (ब-)—भस्म
पाकु (सं)—पाग
पाक्कि (बा-)—बाक़ी
पाक्किय, म-वान्, वति—भाग्य, ०वान, ०वती
पाटम्—पाठ
पाणम् (बा-)—बाण
पाताम् (बा-)—बादाम
पातालम्—पाताल
पातुषा (बा-)—बादशाह
पारिजातम्—पारिजात
पावम् (बा-)—भाव
पाषै (बा-)—भाषा
पिंटम्—पिंड
पिचाचु—पिशाच
पिच्चै, पिट्चै—भिक्षा
पित्तम्—पित्त
पिरचंटम्—प्रचंड
पिरचार-म्,-कन्—प्रचार, ०क
पिरचित्तम्-त्ति—प्रसिद्ध-ध,धि
पिरचवम्—प्रसव
पिरजै—प्रजा
पिरतापम्—प्रताप
परितिकूलम्—प्रतिकूल
पिरतिनिति—प्रतिनिधि
पिरतिमै—प्रतिमा
पिरतिवाति—प्रतिवादी
पिरतीट्चै—प्रतीक्षा
पिरलापम्—प्रलाप
पिरवाकम्—प्रवाह
पिरस्तापम्—प्रस्ताव
पिरांतु—भ्रांति
पिराणन्—प्राण
पिराणि—प्राणी
पिरियाणि (बि-)—बिर्यानी
पुण्णियम्—पुण्य
पुत्ति-रन,-रि—पुत्र, पुत्री
पुरम्—पुर
पुरुषन्—पुरुष
पुरोकितन्—पुरोहित
पुक्कर्का (बु-)—बुर्क़ा
पुलाव—पुलाव
पुवनम् (बु-)—भुवन
पुवि—भुवि
पुष्पम्—पुष्प
पुस्तकम्—पुस्तक
पुलकम्—पुलक
पूंति (बू-)—बूंदी
पूजै—पूजा
पूतम् (बू-)—भूत
पूमि (बू-)—भूमि
पूरि—पूड़ी
पूषणम्—भूषण
पूर्णम्—पूर्ण
पेचरि—बेसरी
पेतपावम् (बेदबावम्)—भेदभाव
पैचा—पैसा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पैजामा--पैजामा
पोजनम् (बो-)--भोजन
पोणि (बो-)--ब्रोहनी
पो-षि (क्रि), षणम्--पोषण
पौर्णमि--पौर्णमी
मंकलम्--मंगल
मंटपम्--मंडप
मंतकाचम्--मंदहास
मकत्तुवम्--महत्त्व
मका--महा
मकिमै--महिमै
म (मु) कुटम्--मुकुट
मचानम् --श्मशान
मचूति--मस्जिद
मटम्--मठ
मणु--मन का नाप
मति--मति
मतुरम्--मधुर
मनम्--मन
मनुष्यन्, मनितन्--मनुष्य
मरणम्--मरण
मलम्--मल
मल्--मलमल
मल्लन्--मल्ल
मल्लिका-मल्लिका
मांचा--माँजा
माचम्--मास
माणिक्कन्--माणिक्य
मातुरियम्--माधुर्य
मानवन--मानव
माम्चम्--मांस
मायम्, मायै--माया
मार्क्कम् (ग)--मार्ग
मालै--माला
मिरुतंकम्--मृदंग
मि (मे) स्त्रि--मिस्त्री
मीन--मीन
मुकम्--मुख
मुकाम-- मुकाम
मुकूर्त्तम्--मुहूर्त
मुक्कियम्--मुख्य
मुक्ति-मुक्ति
मुट्टि--मुट्ठी
मुत्तु--मोती
मुरप्पा (ब्ब-भी)--मुरब्बा
मुलाम्--मुलम्मा
मुस्लिम्--मुस्लिम
मुल्लंकि--मूली
मुत्तिरम्--मूत्र
मेकम--मेघ, मेह
मेजै--मेज़
मेतावि, मेतै--मेधावी, मेधा
मैता--मैदा
मैना--मैना
मोकन-म्,-न्, मोकिनी--मोहन, मोहिनी
मोट्चम्--मोक्ष
मौनम्--मौन
यक्ञम्--यज्ञ
यमन्--यम
यात्ति-रै,-रिकन्--या-त्रा,-त्रिक
युकम्--युग
युवति--युवती
युवन्--युवक, युवा
यौवनम्--यौवन
रकचियम्--रहस्य
रचायनम्--रसायन
रचीतु--रसीद
रणम्--रण
रतम्--रथ
रत्तम्--रक्त
रत्तिनम्--रत्न
रमणीयम्--रमणीय
राट्चचन्--राक्षस
राजा--राजा
राज्जियम्--राज्य
राणि--रानी
रात्तिरि--रात्री
रिषपम्--ऋषभ
रीति--रीति
रुतु--ऋतु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रूप-म्, वान्,-वति—रूप, ०वान, ०वनी
रूपाय्—रुपया
रोकम्—रोग
लंचम्—लाँच
लज्जै—लज्जा
लट्चम्, लक्षम्—लक्ष
लट्टु (ड्डु), लाटु—लड्डू
लापम—लाभ
लवलेचम्—लवलेश
लायक्कु—लायक
लीलै—लीला
लोकम्—लोक
वकैयरा—वगैरह
वक्किरम्—वक्र
वक्कील्—वकील
वचंतम्—वसंत
वचूल—वसूल
वटै—बड़ा (सं)
वणिकन—वणिक
वतनम्—वदन
वनम्—वन
वनितै—वनिता
वयचु—वय
वरन्—वर (विवाह का)
वर्णनै—वर्णन
वर्षम्, वरुटम—वर्ष
वस्तिरम्—वस्त्र
वस्तु—वस्तु
वाकनम्—वाहन
वाक्कियम्—वाक्य
वाचाल-न,-म्—वाचाल
वात्तियम् (द्द)—वाद्य
वानरम्—वानर
वापस—वापस
वायु—वायु
वास्तवम्—वास्तव
विञ्ञा-नम्,-नि—विज्ञा-न,-नी
वितम्—विध
वितवै—विधवा
वितुषि—विदुषी
विनाचम्—विनाश
विपत्तु—विपत्ति
विमल-न्,-म्—विमल
विमानम्—विमान
वियाकुलम्—व्याकुल
वियाक्कियानम्—व्याख्यान
विरक्ति—विरक्ति
विरयम्—त्रय
विरुट्चम्—वृक्ष
विरुतु—विरुद
विरुत्ति—वृद्धि
विवाकम्—विवाह
विवेकम्—विवेक
विषम्—विष
विषयम—विषय
वीणै—वीणा
वीर-न्,-म्—वीर
वेतनै—वेदना
वेषम्—वेष
वैटूर्यम्—वैदूर्य
वैत्तिय-न्,-म्—वैद्य
व्यंक्यम्—व्यंग्य
स्तनम्—स्तन
स्तानम्—स्थान
स्तिति—स्थिति
स्तुति—स्तुति
स्तूपम्—स्तूप
स्तूलम्—स्थूल
स्नानम्—स्नान
स्परिचम्—स्पर्श
स्पष्टम्—स्पष्ट
हम्चम्, हम्सम्—हंस
होता—ओहदा
हृतयम्, इतयम—हृदय

नोट—शब्दों के बाद काले अक्षरों में कोष्ठक में उच्चारण दिया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh